॥ शब्द १ ॥ होली खेलूँगी सतगुरु साथ	
हिंदी	संस्कृत
होली खेलूँगी सतगुरु साथ । सुरत मन चरन लगाई ॥ १ ॥	सद्गुरुणा सह होलीं क्रीडिष्यामि। आत्मामनसी चरणौ अयुङ्क्ताम्॥ १ ॥
करम जाल को जार । भरम की धूल उड़ाई ॥ २ ॥	कर्मपाशं प्रज्वल्य। भ्रमधूलिः उड्डायिता॥ २ ॥
गुनन गुलाल उड़ाय । शब्द का रंग बहाई ॥ ३ ॥	गुणानां रक्तचूर्णं उड्डायित्वा शब्दस्य रङ्गं अप्रवाहयत्॥ ३ ॥
प्रेम नशे में चूर । चरन गुरु रहूँ लिपटाई ॥ ४ ॥	प्रेम्ण:मदे उन्मत्ता। गुरुचरणयोः लिप्लिम्पामि॥ ४ ॥
सतगुरु बचन पुकार । जगत में धूम मचाई ॥ ५ ॥	आह्वानं कृत्वा सद्गुरोः वाचः । जगति कृत: कोलाहलः ॥ ५ ॥
राधास्वामी महिमा गाय । सरन में निस दिन धाई ॥ ६ ॥	रा धा/ध: स्व आ मी महिमां गीत्वा। शरणं प्रतिदिनं धाविता॥ ६ ॥
राधास्वामी नाम सुनाय । काल से जीव बचाई ॥ ७ ॥	रा धा/ध: स्व आ मी नाम श्रावित्वा । जीवः कालात् रक्षित:॥ ७ ॥

होली के दिन आये सखी	
हिंदी	संस्कृत
होली के दिन आये सखी । उठ खेलो फाग नई ॥१॥	सखि होलीदिवसा आगता:। उत्थाय क्रीडतु फाल्गुननवः ॥१॥
दया धार आये सतगुरु प्यारे । प्रेम के रंग बही ॥२॥	दयां धार्य समागताः प्रियसद्गुरु:। प्रेम्णः रंगं प्रवहति ॥२॥
भक्ति दान फगुआ दिया सब को। प्रीति जगाय दई ॥३॥	भक्तिदानफाल्गुनदातः दत्तवंतः सर्वान्। प्रीतिं जागृतवान् ॥३॥
बिरह गुलाल अबीर तड़प का। मन पर डाल दई ॥४॥	विरहस्यरक्तचूर्णम् अबीरः व्याकुलतायाः। मनसि प्रक्षिप्तवान् ॥४॥
उमँग रंग भर भर अब घट में। गुरु पर छिड़क दई ॥५॥	उत्साहस्य रंग निक्षिप्य प्रतिघटम् । गुरौं प्रसारितवान् ॥५।
आओ सखी अब सोच न कीजे । चरनन लिपट रही ॥६॥	सखि आगच्छतु मा कुरु विचारम्। लिप्लिम्पति चरणयोः ॥६॥
दया दृष्टि अब सतगुरु डारी। अंतर भीज रही ॥७॥	दयादृष्टिः सद्गुरोः जातः। आर्द्रा भवति घटे ॥७||
दरशन करत हुई मतवारी। सुध बुध बिसर गई ॥८॥	दर्शने उन्मत्ता जाता । विवेकशून्या जाता ॥८||
नैनन की पिचकार छुड़ावत । तिल में उलट गई ॥९॥	नेत्रयोः प्रोक्षणी अवकीर्यते। षड्चक्रे विपरीता जाता ॥९॥
सहसकँवल चढ़ जोत जगाई। संख बजाय रही ॥१०॥	सहस्रकमले ज्योतिः प्रकाशिताः। शंखवादनं करोति ॥१०॥
लाल गुलाल रूप गुरु देखा। त्रिकुटी जाय रही ॥११॥	गुरोःपाटल स्वरूपमपश्यत् त्रिकुटी स्थले गतवान् ॥११॥
चंद्र रूप लख निरखी गुफा। जहाँ मुरली बाज रही ॥१२॥	दृष्ट्वा चन्द्ररूपमपश्यद् गुहा यत्र भवति वेणुवादनम् ॥१२॥
सत्तलोक जाय पुरुष रूप लख। अचरज कौन कही ॥१३॥	सत्तलोके दृष्ट्वा पुरुषरूपम् विस्मयं वर्णितुं न शक्यते ॥१३॥

हंसन से मिल खेली होली। बीन बजाय रही ॥१४॥	हंसैः सह कृता होलिकाक्रीडा। नदति अहितुण्डवाद्यम् ॥१४॥
प्रेम रंग की बरषा कीनी। अमृत धार बही ॥१५॥	जाता प्रेमरंगस्य वृष्टिः अमृतधारा प्रवहति ॥१५॥
अलख अगम से भेंटा करके। राधास्वामी चरण पई ।।१६।।	अलखागमेन मिलित्वा राधास्वामीचरणयोः पतिता ।।१६।।
अचरज रूप निरख हिये दिरगन। छिन छिन रीझ रही ।।१७।।	अन्तश्चक्षुषाद्भुतरूपं दृष्ट्वा प्रतिक्षणं आकृष्टा ।।१७।।
अद्भुत शोभा रूप अनूपा। निरखत मगन भई।।१८।।	अद्भुतशोभां रूपमनूपम्। दृष्ट्वा लीना जाता ।।१८।।
महिमा राधास्वामी बरनी न जाई। हिया जिया वार रही।।१९।।	राधास्वामीमहिमा वर्णितुमशक्या समर्पयति प्राणान् ।।१९।।
ऐसी होली खेल राधास्वामी से। अचल सुहाग लई ।।२०।।	ईदृशीं होलीं खेल रा धा/ध: स्व आ मीदयालुना । अचलसौभाग्यं गृहीतवती ।।२०।।

होली खेल न जाने बावरिया	
हिंदी	संस्कृत
होली खेल न जाने बावरिया । सतगुरु को दोष लगावे ॥१॥	होलीखेलनाभिज्ञ: हतक: । उपालम्भति सद्गुरुम् ॥१॥
जगत लाज मरजाद में अटकी । घूँघट खोल न आवे ॥ २॥	जगत् मानमर्यादा च धृता । नावगुण्ठनं त्युक्तं पार: ॥ २॥
प्रेम रंग घट भरन न जाने । भरम गुलाल घुलावे ॥३॥	रागरंगेन घटं न पूर्णम् । भ्रमपाटले विलीन: ॥३॥
डगमग भक्ती चाल अनेड़ी । जग सँग झोके खावे ॥४॥	भक्तिरस्थिरा चलति प्रमत्त: । जगता याति पवनाघातम् ॥४॥
निंदा धूल से उड़ उड़ भागे । सतसँग निकट न आवे ॥५॥	निन्दारेणुना दूरी भवति । सत्संगं च नावस्पृशति ॥५॥
पाँच दुष्ट का रँग ले साथा । नित पिचकार छुड़ावे ॥ ६ ॥	पंचाहीनां वर्णै: साकम्। नित्यं पिचकरीप्रयुक्ता ॥६॥
आदर मान भरा मन भीतर । दीन अंग नहिं लावे ॥ ७ ॥	आदरमान: जातः मनसि । न व्यवहरति दीनांगे ॥७॥
बचन सुने पर चित न समावे। छिन छिन काल भुलावे ॥ ८ ॥	श्रृणोति बचनं न तु चित्ते गृह्णाति । प्रतिक्षणं विस्मारयति काल: ॥ ८ ॥
मन माया ने जाल बिछाया। सब जिव नाच नचावे ॥ ९ ॥	मनमाया च जालं प्रसारितम् । जीवान् अनर्तयन् सर्वान् ॥ ९ ॥
दया करें सतगुरु मन मोड़ें। तो घर की राह पावे ॥१०॥	दयां धार्य सद्गुरुश्चेद् निवर्तयतु मन: । निजगृहस्य मार्गं प्राप्तं कुर्यात् तर्हि ॥१०॥
प्रीति प्रतीति बढ़ावत दिन दिन । राधास्वामी चरन समावे ॥११॥	प्रीतिप्रतीतिश्च वर्द्धयति प्रतिदिनम् । रा धा/ध: स्व आ मी दयालुनां चरणयो: लीन: ॥११॥

॥ शब्द ९ ॥ होली खेलन आये सतगुरु जग में	
हिन्दी	संस्कृत
होली खेलन आये सतगुरु जग में । हिल मिल के अब सरन पड़ो री ॥ १ ॥	होलीखेलितुमागताः सद्गुरुः जगति । अयि सर्वे संमिल्य शरणं गृहणीत॥ १ ॥
नरदेही तुम दुरलभ पाई । जैसे बने तैसे काज करो री ॥ २ ॥	नरदेहं त्वया दुर्लभं प्राप्तम्। अयि यथासंभवं कर्म कुरुत॥ २ ॥
प्रीति प्रतीति धरो चरनन में । हित चित से गुरु बचन सुनो री ॥ ३ ॥	प्रीतिप्रतीतिश्च धारयत चरणयोः । अयि मंगलमनसा गुरुप्रवचनं श्रुणुत॥ ३ ॥
गुरु का ध्यान धरो हिये अंतर । शब्द भेद ले गगन चढ़ो री ॥ ४ ॥	गुरोः ध्यानं धारयत हृदन्तसि । अयि शब्दभेदेन गगनमारोहत॥ ४ ॥
सतगुरु रूप निरख मन माहीं । प्रेम गुलाल अब जाय मलो री ॥ ५ ॥	सद्गुरोः स्वरूपं संपश्य मनसि। अयि प्रेम रक्तचूर्णमधुना लेपयत॥ ५ ॥
पंच इंद्री पिचकारी छोड़ो । तन मन चरनन वार धरो री ॥ ६ ॥	पंचेद्रियाणां पिचकरी प्रक्षिपत । अयि तनुमनसी चरणयोः समर्पयत॥ ६ ॥
निरमल होय चढ़ो ऊँचे को । राधास्वामी चरनन लाग रहो री ॥ ७ ॥	पावनभूय ऊर्ध्वमारोहत । अयि राधास्वामीचरणयोः संलग्नमभवत॥ ७ ॥

प्रेम रंग बरसावत चहुँ दिस	
हिंदी	संस्कृत
प्रेम रंग बरसावत चहुँ दिस। होली खेलन आई सूरत प्यारी ॥१॥	प्रेमरंगस्य वृष्टिः चतुर्दिक्षु । होलीखेलितुमागता प्रियात्मा ॥१॥
लिपट रही गुरु चरनन हित से। भींज रही घट अंतर सारी ॥२॥	लिप्लिम्पति गुरुचरणयोः हितेन। आर्द्रा भवति घटे अन्तसि च ॥२॥
गुनन गुलाल उड़ावत मग में । पँच इंद्री छोड़ी पिचकारी ॥३॥	गुणानां रक्तचूर्णं उत्क्षिपति मार्गे। पंचेन्द्रियाणां प्रोक्षणिकया अवकीर्यते ॥३॥
भर भर सुरत अबीर झुकावत । गुरु सन्मुख अब कुमकुम मारी ॥४॥	आत्मा पूर्णपाणिनाबीरं प्रस्तौति । गुरुसमक्षं कुमकुमं प्रक्षिपति ॥४॥
जगत भोग की धूल उड़ाई । लाज कान कुल की तज डारी ॥५॥	जगद्भोगानां रेणुं उत्क्षिपति। कुलस्य मानमर्यादा त्यक्ता ॥५॥
काल करम सिर धौल मार कर । माया नटनी की चादर फाड़ी ॥६॥	कालकर्मयोः शिरसि ताडित्वा। मायानट्याः वस्त्रं पाटयति ॥६॥
काम क्रोध और लोभ बिकारी । मान ईरखा चित से टारी ॥७॥	कामक्रोधलोभश्च विकारान्। मानेर्ष्यां च चित्तात् निवारयति ॥७॥
प्रेम भरी सखियन को सँग ले । तन मन धन सब गुरु पर वारी ॥८॥	प्रेम्णापूर्णा सखीन् साधर्म्। तनमनधनसर्वे गुरौः समर्पितम् ॥८॥
बाचक जोगी ज्ञानी करमी । स्वाँग बना मोहे नर नारी ॥९॥	वाचकयोगीज्ञानीकर्मशीलाः। स्वाँगं कृत्य आकर्षयन्ति जनान् ॥९॥
पंडित भेख शेख़ रोज़गारी । जम दूतन के धक्के खा री ॥१०॥	पंडितपाषण्डीशेखवृत्तिपरका:। यमदूतैः धक्कयन्ति ॥१०॥
मेरा भाग जगा गुरु किरपा । पाय गई निज सरन अधारी ॥११॥	मम भागः जागृतः गुरुकृपया। प्राप्ता मया शरणाधारः ॥११॥
प्रेम दान दीन्हा निज घर से । राधास्वामी चरनन हुई दुलारी ॥१२॥	प्रेमदानं दत्तं निजगृहात् । राधास्वामीचरणयोः प्रियाजाता ॥१२॥

शब्द ११-उलट पलट कर खेली होली ।	
हिंदी	संस्कृत
उलट पलट कर खेली होली । अनहद धुन घट अंतर बोली ॥१॥	अस्तव्यस्तीभूय खेलिता होली । घटेऽन्तसि प्रकटितानहदध्वनि: ॥१॥
उमँग अबीर गुलाल प्रेम का। गुरु पर डाला भर भर झोली ॥२॥	उत्साहस्याबीरं प्रेम्ण: रक्तचूर्णम् । गुरौऽर्पितं पूरयित्वा वस्त्रपुटकी ॥२॥
मन और सुरत चढ़े गगना पर माया ममता घट से डोली ॥३॥	आत्मामनश्चारोहतां गगने । मायाममताचाभूतां पृथग्घटात् ॥३॥
गुरु दरशन कर हुई मगनानी। अब नहिं देत काल झकझोली ॥४॥	गुरुदर्शनेन मग्नाभूता । काल: झटितुं न शक्यतेऽधुना ॥४॥
आगे चढ़ पहुँची दस द्वारे । सुन्न शहर की धुन लई तोली ॥५॥	अग्रेऽऽरुह्य गतं दशद्वारम् । ज्ञात: सुन्नपदस्य ध्वनि: ॥५॥
भँवरगुफा सतलोक अटारी । चढ़ के चली अब शब्द खटोली ॥६॥	भँवरगुहासतलोकक्षौमौ । शब्दवाहनेन गतवान् ॥६॥
अलख अगम के पार चढ़ाई । राधास्वामी चरन अब मिले अमोली ॥७।।	अलखागममतिक्रम्य । प्राप्तः बहुमुल्यराधास्वामीचरणौ ॥७।।

॥शब्द १२॥ सुरत रँगीली खेलत होरी ।	
हिंदी	संस्कृत
सुरत रँगीली खेलत होरी । प्रेम लगन गुरु चरनन जोड़ी ॥१॥	रसिकात्मा होलिका खेलति । सद्गुरुचरणयोः प्रेम्णा युनक्ति ॥१॥
केसर रंग प्रीति भर घट में । बार बार पिचकारी छोड़ी ॥२॥	पिण्याकवर्णस्य प्रीतिं धार्य हृदि । भूयोभूयः प्रोक्षणिकयावकीर्यते ॥२॥
भींज रहे सतगुरु सतसंगी। उमँग बढ़त धुन शोर मचो री ॥३॥	आर्द्राः सद्गुरुः सत्संगीजनाःच । उत्साहं वर्द्धते ध्वनेराधिक्यम् ॥३॥
अबीर गुलाल उड़ावत चहुँ दिस। शब्द संग मन नाच नचो री ॥४॥	उत्क्षिपति अबीरं रक्तचूर्णञ्च चतुर्दिक्षु । शब्देन सह नृत्यति मनः ॥४॥
गुरु दरशन अद्भुत हिये निरखत । सुरत हुई मस्तानी बौरी ॥५॥	अद्भुतगुरुदर्शनं निरूप्य हृदि । आत्माजातः मत्तोन्मत्तः ॥५॥
अजब बिलास लखा घट माहीं । सुफल जन्म मेरा आज भयो री ॥६॥	अद्भुतविलासः घटे अपश्यत् । जन्मसफलं जातं ममाद्य ॥६॥
माया नार रही शरमाई। काल करम बल आज थको री ॥७॥	मायानारीं जाता लज्जा । कालकर्मणोः च बलं गतमद्य ॥७॥
आरत कर गुरु प्रेम बढ़ाती । चरन सरन गुरु धार रहो री ॥८॥	आरतिंकृत्य वर्द्धयति स्नेहं गुरुणा । सद्गुरोः चरणशरणं धरेत् ॥८॥
ऐसा फाग भाग से पइये । जन्म मरन सब दूर भयो री ॥९॥	ईदृग् फाल्गुनःसुभाग्यात् प्राप्यत । जन्ममरणयोः चक्रं गतम् ॥९॥
धन धन भाग मेरे अब जागे । राधास्वामी मोहि निज दान दियो री ॥१०॥	धन्याः जागृताः मम भागाः । दत्तं दानं राधास्वामीदयालुः मह्यम् ॥१०॥
प्रेम अंग प्यारी सुरत नवेली । राधास्वामी प्यारे से आज मिलो री ॥११॥	प्रियनवात्मा प्रेम्णा अंगेन । युङ्गधि प्रियराधास्वामीदयालुना सह ॥११॥

प्रेमवानी ।।। / शब्द 13 होली खेलत सतगुरु नाल।	
हिंदी	संस्कृत
होली खेलत सतगुरु नाल। पिरेमी सुरत रँगीली ॥१॥	होलिका खेलति सद्गुरुणा सह । प्रेम्ण: युक्त: रसिकात्मा ॥१॥
प्रेम प्रीति की केसर घोली । गुरु पै सन्मुख डाल ॥२॥	प्रेमप्रीत्या केसरं अविलयत् । गुरुसमक्षं अवकीर्यते ॥२॥
बरषत रँग भींजत सुत संगी। चढ़त गगन पर हाल ।।३।।	रंगस्यवृष्टि:सहैव आत्मार्द्र: । गगने आरोहति सद्य: ।।३।।
काल कला सब थकित हुई अब। काटा माया जाल ।।४।।	कालचातुर्य समाप्तमद्य । मायाजालं अच्छिनत् ।।४।।
गुनन गुलाल उड़ावत मग में। सुरत अबीर भर थाल ।।५।।	गुणानां रक्तचूर्णमुत्क्षिपति गगने । आत्माबीरेणापूरयत स्थलम् ।।५।।
गुरु बल सुरत छड़ी घर चाली। पहुँची हंसन ताल ॥६॥	गुरुबलेन पृथग्भूयात्मा गत: निजगृहम् । गतं मानसरोवरस्थलम् ॥६॥
परम पुरुष के दरशन पाये। सत्त शब्द पाया धन माल ॥७।।	प्राप्तं परमपुरुषस्य दर्शनम् । सत्तशब्दस्य सम्पत्ति: प्राप्ता ॥७।।
राधास्वामी चरन सरन दृढ़ धारी। मुझ पर हुए हैं दयाल ।।८।।	राधास्वामीचरणयो: धृतं दृढ़शरणम् । मयि संजाता: दयालु: ।।८।।
भक्ति दान मोहि फगुआ दीन्हा । मेटे सब दुख साल ।।९।।	भक्तौ फाल्गुनमान: दत्त: मह्यम् । सर्वे कष्टा: अपसारयन् ।।९।।

॥शब्द १४॥ आज मैं गुरु सँग खेलूँगी होरी	
हिंदी	संस्कृत
आज मैं गुरु सँग खेलूँगी होरी ॥टेक॥	अद्याहं गुरुणा सह खेलयिष्यामि होलिका ।।टेक।।
भाग जगे गुरु सतगुरु पाये । मन बिच हरख बढ़ो री ॥ १ ॥	भाग्यं जागृतं सद्गुरुः प्राप्तः। मनसि हर्षाधिक्यं जातम् ॥१।।
बिरह अनुराग रंग घट भरिया । गुरु पर छिड़क रहूँ री ॥ २ ॥	विरहानुरागयो: रंगेन घट: पूरितः । सद्गुरौ अवकीर्यामि ।।२।।
उमँग अबीर गुलाल प्रेम का । गुरु चरनन पर आन मलूँ री ॥ ३ ॥	उत्साहाबीरं प्रेम्णः रक्तचूर्णम् । करोम्यहं मर्दनं गुरुचरणयोः ।।३।।
प्रेम दान बिनती कर माँगूँ । तन मन धन सब वार धरूँ री ॥ ४ ॥	प्रार्थनां कृत्य याचे प्रेमदानम् । तनमनधनानि सर्वाणि समर्पयामि ॥४।।
शब्द रूप प्यारे राधास्वामी का । घट में दरस करूँ री ॥ ५ ॥	शब्दरूपः प्रिय राधास्वामीदयालो: । घटे दर्शनं करोमि ।।५।।

शब्द १५- फागुन की ऋतु आई सखी	
हिंदी	संस्कृत
फागुन की ऋतु आई सखी । आज गुरु सँग फाग रचो री ॥ १ ॥	फाल्गुनऋतु: आगत: सखि । अद्य गुरुणा सह खेल फाल्गुनम् ॥ १ ॥
ऐसा समा मिले नहिं कबहीं । मनुआँ उमँग रहो री ॥ २ ॥	ईद्दगवसर: न प्राप्स्यति कदापि । मन: उत्साहेन युनक्ति ॥ २ ॥
दृष्टि जोड़ ताको गुरु मूरत । अद्भुत रूप लखो री ॥ ३ ॥	दृष्टिं युज्य पश्य गुरुस्वरूपम् । अवलोकयाद्भुतं रूपम् ॥ ३ ॥
सुरत अबीर की भर भर झोली । घट घट रंग भरो री ॥ ४ ॥	आत्माबीरस्य वस्त्रपुटकं पूरयित्वा । रंगेन प्रतिघटं व्याप्तं कुरु ॥ ४ ॥
गुरु सँग खेल आज नई होली । जग बिच धूम मचो री ॥ ५ ॥	गुरुणा सहाद्य खेल होलिकानवा । जगति कोलाहलं जायते ॥ ५ ॥
ऐसी होली खेलो मेरे भाई । करम भरम सब दूर करो री ॥ ६ ॥	ईद्दशी होलिका खेल मम भ्राता । कर्मभ्रमाश्च सर्वे अपनय ॥ ६ ॥
राधास्वामी चरन ध्यान धर हिये में। जग से आज तरो री ॥ ७ ॥	रा धा/ध: स्व आ मी चरणौ घटे धार्य । अद्य जगत: पारं गच्छ ॥ ७ ॥
होय निहाल जाय जग पारा । चरनन सुरत धरो री ॥ ८ ॥	पूर्णसंतुष्टीभूय गच्छे जगत: पारम् । आत्मानं चरणौ युङ्ग्धि ॥ ८ ॥

॥ शब्द १६ ॥ मैं तो होली खेलन को ठाड़ी ।	
हिंदी	संस्कृत
मैं तो होली खेलन को ठाड़ी । स्वामी प्यारे झटपट खोलो किवाड़ी ॥१॥	अहन्तु होलिका क्रीडितुं सन्नद्धा। क्षिप्रमनावर्तयतु कपाटं स्वामी ।।१।।
प्रेम रंग की बरषा कीजे । भींजे सुरत हमारी ॥ २ ॥	प्रेमरंगस्य वृष्टिं कुर्यात् । आत्मार्द्राः भवन्ति नः ॥२।।
देर देर बहु देर भई है । कहाँ लग करूँ पुकारी ॥ ३ ॥	प्रतीक्षां कुर्वनति विलम्बं जातम् । कियत् पर्यन्तं आह्वयामि ।।३।।
तड़प तड़त जिया तड़प रहा है। दरशन देव दिखा री ॥ ४ ॥	विरहं विरहं कृत्य दहति हृदयम् । दर्शनं देहि प्रभुवर ।।४।।
सुन्दर रूप लखूँ अद्भुत छवि । होवे घट उजियारी ॥ ५ ॥	ईक्षेऽहं रम्यरूपमद्भुतस्वरूपम् । भवेत् हृदि प्रकाशम् ।।५।।
ऋतु फागुन अब आय मिली है। नई नई फाग खिला री ॥ ६ ॥	सम्प्राप्त: फाल्गुनऋतुः । विकसन्ति नवाः फाल्गुनस्योपादानाः ।।६।।
राधास्वामी परम दयाला । चरनन लेव मिला री ॥ ७ ॥	राधास्वामीपरमः दयालु: । चरणयोः भवेम लयलीनाः ।।७।।
बिनती करूँ दोऊ कर जोड़ी। कर लो प्रेम दुलारी ॥ ८ ॥	करौ बद्धवा करोम्यहं प्रार्थनाम् । कुर्यात् माम प्रेममग्नः ॥८।।

॥ शब्द १७ ॥ होली खेलत सतगुरु संग	
हिन्दी	संस्कृत
होली खेलत सतगुरु संग। पिरेमन रंग भरी ॥ १ ॥	होलिकां खेलति सद्गुरुणा साकम् । प्रेममग्ना स्नेहीनारी ॥ १।।
अबीर गुलाल उड़ावत चहुँ दिस। भर भर डालत रंग ॥ २ ॥	रक्तचूर्णमबीरं प्रक्षिपति चतुर्दिक्षु। पूरयित्वावकीर्यते रंगम् ॥ २ ॥
पाँच तत्त पिचकारी छोड़ी । गुन तीनों हुए तंग ॥ ३ ॥	पंचतत्त्वानां प्रोक्षणिका प्रक्षिप्ता। खिन्नाः भूता त्रिगुणाः ॥ ३ ॥
मन इंद्री को नाच नचा कर। करत काल से जंग ॥ ४ ॥	मनः इन्द्रीः नर्तयित्वा । करोति कलहं कालेन सह ॥ ४ ॥
सतगुरु प्रेम धार हिये अंतर। गुरु का सीखी ढंग ॥ ५ ॥	सद्गुरुप्रेम धार्य हृदन्तसि। गुरोरादर्श अवबोधितवती ॥ ५ ॥
मेहर करी गुरु चरन लगाया। फूल रही अँग अंग ॥ ६ ॥	कृपां कृत्य गुरुः चरणौ संलग्ना । प्रफुल्लितानि प्रत्यंगानि ॥ ६ ॥
राधास्वामी महिमा नित हिय जिय से। गावत उमँग उमंग ॥ ७ ॥	राधास्वामीमहिमां नित्यं हृदात्मना। गायत्युत्साहेन युक्ता ॥ ७ ॥

॥ शब्द १८ ॥ सुरत आज खेलत फाग नई	
हिन्दी	संस्कृत
सुरत आज खेलत फाग नई ॥ टेक ॥	अद्य आत्मा नवहोलीं क्रीडति॥ टेक ॥
शब्द रूप हिरदे धर अपने । गुरु रँग राच रही ॥ १ ॥	स्वहृदि शब्दरुपं धार्य । गुरोः रंगे लीनः जातः॥१॥
धुन की डोर पकड़ घट चढ़ती । मान ईरषा सकल दही ॥ २ ॥	ग्राहय ध्वनेः सूत्रं घटे आरोहति । ईर्ष्यामानौ सर्वौ दग्धौ ॥२॥
राधास्वामी बचन लगें अति प्यारे । चरनन लाग रही ॥ ३ ॥	राधास्वामीप्रवचनानि अतिसुखकराः । चरणयोः लयलीनः जातः॥३॥
खेलत खेलत गुरु पद पहुँची । रंग गुलाल बही ॥ ४ ॥	क्रीडां कुर्वन् गुरुपदं गतवान् । रंगरक्तचूर्णञ्च प्रवाहितम् ॥४॥
सुन्न शिखर चढ़ भँवरगुफा पर । सत्तनाम की मेहर लई ॥ ५ ॥	सुन्नशिखरे आरुहय भँवरगुहायाम् । सत्तनाम्नः कृपां प्राप्ता ॥५॥
हंसन साथ मिली अब रँग से । अलख अगम के पार गई ॥ ६ ॥	हंसैः सह मिलितः प्रेम्णा । अलखागममतिक्रम्य गतवान् ॥६॥
राधास्वामी दयाल दया निज धारी। प्रेम का दान दई ॥ ७ ॥	राधास्वामीदयालुः निजदयां धार्य । प्रेम्णः दानं दत्तवन्तः ॥७॥

॥ शब्द १९ ॥ सुरत प्यारी खेलन आई फाग	
हिंदी	संस्कृत
सुरत प्यारी खेलन आई फाग । धार गुरु चरनन में अनुराग ॥१॥	फाल्गुनं खेलितुमागतः प्रियात्मा । धार्य गुरुचरणयोरनुरागम् ॥१॥
प्रेम रंग भर भर लई पिचकार । छोड़ती चहुँ दिस उमँग सम्हार ॥२॥	प्रेम्णारंगेन प्रोक्षणिकां पूरयित्वा। उत्साहेनावकीर्यते चतुर्दिक्षु ॥२॥
सुरत का लाई अबीर गुलाल । चरन गुरु कुमकुम भर भर डाल ॥३॥	आत्मामबीररक्तचूर्णं च कृत्वा। गुरुचरणयोः कुमकुमं पूरयित्वा प्रक्षिपति ॥३॥
काम और क्रोध उड़ाई धूर । करम और भरम किये सब दूर ॥४॥	कामक्रोधयो: रेणुम् उड्डापयति। कर्मभ्रमाश्च सर्वे अपसारिता: ॥४॥
गाल दे काल हटाया हाल । दया ले काटा माया जाल ॥५॥	अपशब्दादपसारितः कालः सद्य:। दयां धार्य मायाजालं छिन्नम् ॥५॥
सुरत अब चढ़ती गगन मँझार । करत वहाँ गुरु से हेत पियार ॥६॥	आत्माधुनामारोहति गगनमध्ये। करोति तत्र गुरुणास्नेहम् ॥६॥
मिली सतगुरु से जा सतलोक । अलख और अगम का पाया जोग ॥७॥	सत्तलोके सद्गुरुणा मिलितः। अलखागमाभ्यां योगं कृतवान् ॥७॥
चरन राधास्वामी कीना प्यार । प्रेम का फगुआ लीना सार ॥८॥	राधास्वामीचरणौ कृतं स्नेहम् । प्रेम्ण: फाल्गुनमान: स्वीकृतवान् ॥८॥

॥ शब्द २० ॥ क्या सोय रही उठ जाग सखी	
हिन्दी	संस्कृत
क्या सोय रही उठ जाग सखी । आज गुरु सँग खेलो री होरी ॥ १ ॥	कथं शेषे उत्तिष्ठ जागृहि सखि । अद्य गुरुणा सह क्रीडतु होलीम् ॥१॥
मोह नींद में बहु दिन बीते । जागन चौंप धरो री ॥ २ ॥	मोहनिद्रायां व्यतीतानि बहुदिनानि । जाग्रतः उत्साहं धारयतु ॥२।
सरधा भाव अबीर संग ले । घट बिच रंग भरो री ॥ ३ ॥	श्रद्धया अबीरं गृहीत्वा । घटं रंगेन पूरयतु ॥३॥
बिरह भाव के बान चला कर । मन से आज लड़ो री ॥४॥	विरहस्य वाणान् क्षिप्त्वा । मनसाद्य युद्धस्व ॥४॥
सुरत शब्द मारग ले गुरु से । धुन सँग गगन चढ़ो री ॥ ५ ॥	सुरतशब्दस्य मार्गं गृहीष्व गुरुणा । ध्वनिना सह गगनमारोह ॥५॥
प्रीति प्रतीति बढ़ावत दिन दिन । सुन्न में सुरत भरो री ॥ ६ ॥	प्रीतिप्रतीतिं च वर्धयते प्रतिदिनम् । सुन्नपदे आत्मानं प्रावेशय ॥६॥
चरन सरन राधास्वामी दृढ़ कर । सतपुर जाय बसो री ॥ ७ ॥	राधास्वामीचरणशरणं दृढं कृत्वा । सत्तपुरे निवासं कुरु॥७॥

शब्द २१ - गुरू सँग खेलन फाग चली	
हिंदी	संस्कृत
गुरू सँग खेलन फाग चली । खिलत मेरे घट में कँवल कली ॥ १ ॥	सद्गुरुणा सह फाल्गुनं खेलितुं सन्नद्धः । विकसति मम घटे कमलकलिका ॥१॥
जोत की लई पिचकार सम्हार । शब्द रँग बरषा होत अपार ॥ २ ॥	ज्योतेः प्रोक्षणिका गृहीतावधानेन । शब्दरंगस्य जाता वृष्टिरपारा ॥२॥
चाँद और सूरज कुमकुम लाय । बिमल घट त्रिकुटी रंग भराय ॥ ३ ॥	चन्द्रसूर्याभ्यां कुमकुमं लभस्व। विमलघटः त्रिकुटीरंगने पूरितः ॥३॥
सुन्न में भरती सुरत अबीर । महासुन चढ़ती धर कर धीर ॥ ४ ॥	सुन्नपदे पूरयति अबीरम्। महासुन्नपदे आरोहति धैर्येण ॥४॥
भँवर चढ़ मुरली बीन बजाय । सत्तपुर होली खेली जाय ॥ ५ ॥	भँवरमारुह्य वेणुरहितुण्डवाद्यमभिहन् । सत्तपुरे गत्वा खेलिताहोलिका ॥५॥
आरती गाई हंसन संग । धारिया सत्तपुरुष का रंग ॥ ६ ॥	हंसैः सार्द्धं आरतिः गीता । सत्तपुरुषस्य रंगं धारितम् ॥६॥
उमँग कर राधास्वामी धाम चली । सरन गह राधास्वामी चरन रली ॥ ७ ॥	उत्साहेन गतवान् राधास्वामीधामम् । शरणं गृहीत्वा राधास्वामीचरणयोः लयलीनः॥७॥

शब्द २२ - सखी चल फाग की देख बहार	
हिंदी	संस्कृत
सखी चल फाग की देख बहार ॥ टेक ॥	एहि एहि आलि: फाल्गुनद्युतिं पश्यतु ॥ टेक ॥
सखियाँ जुड़ मिल खेलन आईं । गुरु सँग हिये धर प्यार ॥ १ ॥	सखीजना: मिलित्वा क्रीडितुमागता: । सद्गुरुणा सह प्रेमधार्य हृदये ॥ १ ॥
अबीर गुलाल उड़त चहुँ दिस में । कुमकुम भर भर् मार ॥ २ ॥	अबीररक्तचूर्णमवकीर्यते चतुर्दिक्षु । कुमकुमं पूरयित्वा प्रक्षिपतु ॥ २ ॥
प्रेम रंग की बरषा गहरी । भींज रहे नर नार ॥ ३ ॥	प्रेम्ण रंगस्य वृष्टि: गहना । आर्द्रा: भवन्ति नरनारीजना: ॥ ३ ॥
कली कली हिये कँवल खिलानी । फूल रही फुलवार ॥ ४ ॥	हृदयकमले प्रतिकली विकसिता । प्रफुल्लति फुल्लक्षरिणी ॥ ४ ॥
लिपट लिपट गुरु चरनन हित से । तन मन सुद्ध बिसार ॥ ५ ॥	संवेष्ट्य गुरुचरणयो: हितेन । तनुमनस: स्मृतिं विस्मृत्य ॥ ५ ॥
गावत राग रागनी रस से । होत शब्द झनकार ॥ ६ ॥	गायति रागरागिनीं प्रेम्णा । भवति शब्दझंकार: ॥ ६ ॥
समा बँधा आनँद अति बाढ़ा । राधास्वामी फाग खिलाया सार ॥ ७ ॥	परिवेश: सन्नद्ध: आनन्द: वर्द्धित: । राधास्वामीप्रिया: अखेलयन् फाल्गुनसारम् ॥ ७ ॥

प्रेमबानी भाग ३ शब्द २३ खेल ले सतगुरु सँग तू फाग	
हिंदी	संस्कृत
खेल ले सतगुरु सँग तू फाग । सखी री तेरा भला बना है दाव ॥१॥	क्रीडे: सद्गुरुणा सह फाल्गुन: त्वम् । आलि: सुअवसरोऽस्ति तव ॥१॥
ऋतु फागुन भागन से आई । छोड़ सोवना तू उठ जाग ॥२॥	भाग्यादागतः फाल्गुन: ऋतु: । निद्रां त्यक्त्वा उत्तिष्ठ त्वं जागृहि ॥२॥
इंद्री भोग चुरावत चित को । सहज सहज उनको तज भाग ॥३॥	इन्द्रीभोगाश्च चोरयन्ते चित्तम् । तान् सहजरूपेण त्यज धावतु च ॥३॥
सुरत अबीर गुलाल शब्द का । प्रेम रंग ले गुरु पद लाग ॥४॥	आत्माबीरस्य शब्दः रक्तचूर्णस्य च । प्रेमरंगं गृहीत्वा गुरुचरणयोः युङ्गध्रि ॥४॥
वहाँ से चल पहुँची दस द्वारे । करम मरम सब दीने त्याग ॥५॥	तत्रतः गत्वा दशमद्वारे गतः । कर्मभ्रमाश्च सर्वे त्यक्ताः ॥५॥
भँवरगुफा होय पहुँची सतपुर । मुरली बीन सुनावत राग ॥६॥	भँवरगुहायां गत्वा सत्तपुरे प्रापितः । वेणुरहितुण्डवाद्यौ श्रावयतः रागम् ॥६॥
राधास्वामी चरन परस हिलमिल कर । गावत मंगल राग ॥७॥	राधास्वामीचरणौ स्पृश मिलित्वा । गायति मंगलरागम् ॥७॥

॥ शब्द २४ ॥ आज गुरु खेलन आये होरी ।	
हिंदी	संस्कृत
आज गुरु खेलन आये होरी । जग जीवन का भाग जगो री ॥१॥	अद्य गुरुःखेलितुमागता: होलिकाम् । अयि जगजीवनस्य भाग्यं जागृतम् ॥१॥
प्रेम घटा अब बरसन लागी । धारा रंग बहो री ॥२॥	वर्षति प्रेमघटा अधुना । अयि रंगस्य धारा: प्रवहन्ति ॥२॥
सुरत अबीर घुमँड़ रहा चहुँ दिस। मनुआँ उमँग रहो री ॥३॥	आत्माबीर: घूर्ण्णित: चतुर्दिक् । अयि मनोत्साहित: भवति ॥३॥
घंटा संख मृदंग बाँसरी । सारँग बीन बजो री ॥४॥	घंटाशंखमृदंगवेणु: । अयि सारंगाहितुण्डवाद्यानि नदन्ति ॥४॥
हरख हरख सब गिरते चरनन । प्रेम भक्ति गुरु दान दियो री ॥५॥	हर्षितं भूय: सर्वे पतन्ति चरणयो: । अयि प्रेमभक्तेश्च दानं दत्तवन्त: सद्गुरु: ॥५॥
काल करम का दाव चुकाया । खोल दई माया की चोरी ॥६॥	कालकर्मणो: उऋणं कृतवन्तौ । अयि अपिहितं मायाया: चौर्यम् ॥६॥
करम भरम तज जीव सुखारी । पकड़ शब्द निज घर को दौड़ी ॥७॥	कर्मभ्रमं त्यक्त्वा जीवा: सुखिन: । अयि शब्दं ग्राह्य निजगृहम् अधावत् ॥७॥
अस लीला कहो कौन दिखावे । राधास्वामी दाता दया करो री ॥८॥	ईदृशीलीलां क: दर्शितुं क्षम: । हे राधास्वामीदातार: दयां कुर्यु: ॥८॥

॥शब्द २५॥ होली खेले सयानी ।	
हिंदी	संस्कृत
होली खेले सयानी । गुरू के रंग रँगानी ॥ टेक ॥	होलिकां खेलति चतुरा। गुरोः रंगे लीना ॥टेक॥
प्रेम प्रीति का रँग घट भर कर । गुरु पर दिया छिड़कानी ॥१॥	प्रेमप्रीत्या: रंगं घटे पूरयित्वा। गुरौ अवकीर्यत् ॥१॥
दृढ़ विश्वास धार गुरु चरनन । करम और भरम भुलानी ॥२॥	गुरुचरणयो: दृढ़विश्वासं धार्य। कर्मभ्रमाश्च विस्मृताः ॥२॥
जग ब्योहार लगा सब झूठा । सब से हूई अलगानी ॥३॥	जगत् व्यवहारं प्रतीतमसत्यम्। सर्वेभ्यः पृथग्संजाता ॥३॥
ममत माया और दुबिधा छोड़ी। गुरु चरनन लिपटानी ॥४॥	ममतामायासंशया: त्यक्ताः। गुरोचरणयो: युञ्जति ॥४॥
जगत भोग तज चरन अमीरस । पीवत रहत अघानी ॥५॥	जगत् भोगान् त्यक्त्वा चरणामृतम्। पीत्वा भवंति संतुष्टा ॥५॥
राधास्वामी सतगुरु मिले रँगीले । उन सँग फाग खिलानी ॥६॥	राधास्वामीसद्गुरुप्राप्ता: रसिका:। तेभ्य : सह फाल्गुनं क्रीडनीयम् ॥६॥

॥ शब्द २६ ॥ सुरत सिरोमन फाग रचाया।	
हिंदी	संस्कृत
सुरत सिरोमन फाग रचाया। सब जुड़ मिल आज खेलो री होरी ॥टेक॥	आत्माशिरोमणिः रचितं फाल्गुनम् । अयि सर्वे मिलित्वाद्य क्रीडन्तु होलीम् ॥टेक॥
सखी सहेली घूमत आईं । अबीर गुलाल रंग भर लाईं। गुरु दरशन को धूमत धाईं । देख रूप झूमत मुसक्याईं । मान मनी की मटकी फोड़ी ॥ १ ॥	सखीजनवयस्याः भ्रमणनागताः । अबीररक्तचूर्णं रंगपूरणं कृत्यागताः । गुरुदर्शनाय परिक्रमन् अधावन् । स्वरूपं दृष्ट्वा उन्मत्तीभूयः स्मिताः । मनसः अहंकारस्य घटम् अत्रोटयत् ॥ १ ॥
सतगुरु परम उदार कृपाला । देख दीनता हुए दयाला । बचन सुनाये अजब रसाला । दया दृष्टि से किया निहाला । अटक भटक सब अब दई तोड़ी ॥ २ ॥	सद्गुरुः परमोदारः कृपालुः । दैन्यं दृष्ट्वा दयालुसंजाताः । रसिकानि प्रवचनानि अश्रावयन् । दयादृष्ट्या कृतार्थवन्तः । गत्यवरोधाः सर्वे ध्वस्ताः ॥ २ ॥
गुरु चरनन में प्रेम बढ़ावत । रूप अनूप हिये में ध्यावत । उमँग उमँग गुरु आरत गावत । शब्द भेद ले जुगत कमावत । चढ़त अधर गह धुन की डोरी ॥ ३ ॥	गुरुचरणयोः प्रेमवर्धयति अप्रतिमं स्वरूपं हृदये ध्यायति । उत्साहेन गुरुआरतिं गायति । शब्दभेदेन युक्तिं अर्जयति । ध्वनेः सूत्रं गृहीत्वा अधरमारोहति ॥ ३ ॥
धूम मची अब धरन गगन में। राधास्वामी खेलत फाग अधर में ।। भींज रहे सब प्रेम रंग में । सुध बिसरी रच रही धुनन में । आज अनोखा फाग रचो री ॥ ४ ॥	धरणि गगने अधुना कोलाहलम् । अधरे राधास्वामीप्रियाः क्रीडन्ति फाल्गुनम् । क्लिद्यन्ते सर्वे प्रेम्णः रंगे । स्मृतिः विस्मृताः लीना भवति ध्वनिषु । अद्याद्भुतं फाल्गुनं रचितम् ॥ ४ ॥

॥ शब्द २७ ॥ सोइ तो सुरत पिया की प्यारी ।	
हिंदी	संस्कृत
सोइ तो सुरत पिया की प्यारी । जो भींज रही गुरु रँग सारी ॥१॥	सैवात्मा प्रियतमप्रिया। यः क्लिद्यति पूर्णतः गुरोः रंगेन ॥१॥
सतगुरु प्रेम रहे मद माती । अटल भक्ति का प्रन धारी ॥२॥	सद्गुरुप्रेम्णा जातः उन्मत्तः। अटलभक्त्याः प्रणं धारितम् ॥२॥
जगत भाव तज गुरु चरनन में । प्रीति नई नई बिस्तारी ॥३॥	जगतःभावं त्यक्त्वा गुरोः चरणयोः । नवाप्रीतिः विस्तारिता ॥३॥
मगन होय गुरु आज्ञा माने । माया मन रहे दोउ हारी ॥४॥	मग्नीभूय पालयति गुरोराज्ञाम्। मायामनश्च द्वौ पराजितौ ॥४॥
शब्द भेद दे सुरत चढ़ाई। मेहर करी गुरु अति भारी ॥५॥	शब्दभेदेन आत्मारोहित:। गुरु अति कृपां कृतवन्तः ॥५॥
घंटा संख लगे घट बजने । सुन्न शिखर गई भौ पारी ॥६॥	घंटाशंखघटे नदन्ति। भवसागरमतिक्रम्य गतः सुन्नशिखरे ॥६॥
मधुर मधुर धुन गुफा सुनाई। अमर लोक गई गुरु लारी ॥७॥	गुहायां मधुरध्वनि: अश्रावयत्। गुरुणा सह अमरलोकं गतः ॥७॥
सत्तपुरुष से फगुआ लीन्हा । अलख अगम जा पग धारी ॥८॥	सत्तपुरुषतः फाल्गुनमानं गृहीतम्। अलखागमलोकौ गतवान् ॥८॥
राधास्वामी दीन दयाला । गोद लिया मोहि बैठा री ॥९॥	राधास्वामी दीनदयालुः। मां क्रोडे कृतवान् ॥९॥

शब्द २८- सुरत सिरोमन फाग रचाया	
हिंदी	संस्कृत
सुरत सिरोमन फाग रचाया । जग बिच धूम मची री ॥ १ ॥	आत्माशिरोमणिः फाल्गुनं रचितम्। अयि जायते जगति कोलाहलम् ॥१॥
बिरह भाव और प्रेम दिवानी । गुरु के रंग रची री ॥ २ ॥	विरहस्यभावः प्रेम्णा उन्मत्तश्च। अयि गुरो: रंगे रचितः ॥२॥
जग भय भाव लाज तज डारी । भक्ती नाच नची री ॥ ३ ॥	जगतः भयं लज्जां च त्यक्तौ। अयि भक्तिभावेन नृत्यति ॥३॥
छल बल कपट छोड़ कर बरते। खेलत फाग सची री ॥ ४ ॥	छलनं बलं कपटं त्यक्त्वा वर्तते । अयि क्रीडति फाल्गुनं सत्यतः ॥४॥
प्रीति प्रतीति हिये में धारत । राधास्वामी चरनन सरन पकी री ॥ ५ ॥	प्रीतिप्रतीतिञ्च हृदये धारयति । अयि राधास्वामीचरणयो: शरणं पक्वम् ॥५॥
काल करम दोउ रहे झख मारत । माया निज बल हार थकी री ॥ ६ ॥	कालकर्म द्वौ खिन्नौ भवतौ। अयि माया स्वबलात् पराजिताभूय श्रान्ता ॥६॥
राधास्वामी सतगुरु मिले दयाला । उन चरनन में जाय बसी री ॥ ७॥	प्राप्ताः राधास्वामीसद्गुरुदयालु: । अयि तेषां चरणयो: गत्वा निवसति ॥७॥

॥ शब्द २९ ॥ होली खेलत सुरत रँगीली,	
हिन्दी	संस्कृत
होली खेलत सुरत रँगीली, गुरू सँग प्रीति बढ़ाई ॥ टेक ॥	रसिकात्मा खेलति होलीम्। गुरुणा सह प्रीतिमवर्धयत ॥ टेक ।
सुरत अबीर मलत चरनन पर । प्रेम रंग बरसाई । गुनन गुलाल उड़ावत चहुँ दिस । शब्द सुनत हरखाई । गगन पर करत चढ़ाई ॥ १ ॥	मर्दयति आत्माबीरं गुरुचरणयोः। प्रेमरंगस्य वृष्टिः कृता । गुणानां रक्तचूर्णमुत्क्षिपति चतुर्दिक्षु । शब्दं श्रुत्वा हर्षितः । गगनं आरोहति ॥ १ ॥
बिरह उमँगाय चढ़त ऊँचे को । गुरु पद सुरत लगाई । धुन धधकार सुनत मन सरसा । हिये नया प्रेम जगाई । काल दल रहा मुरझाई ॥ २ ॥	विरहमुद्दीप्यारोहति ऊर्ध्वम् । गुरुपदे युनक्त्यात्मानम्। धधकारध्वनिं श्रुत्वा मनः प्रसन्नः जातः । हृदये नूतन प्रेम जागरयितः। कालदलं क्लान्तमभूत् ॥ २ ॥
गुरु मूरत निरखत मगनानी । लाल रूप सुत पाई । सुन्न सिखर जाय फाग रचाया । अमृत धार बहाई । भींज रहे गुरु बहिन और गुरु भाई ॥ ३॥	गुरुः स्वरूपं पश्य मग्नमभूत्। रक्तरूपं प्राप्तमात्मना । सुन्नशिखरे गत्वा रचितं फाल्गुनम्। अमृतधारा प्रवाहिता । क्लिदद्यन्ते गुरुभ्राताभगिन्यश्च ॥ ३ ॥
महासुन्न होय चढ़त गुफा पर । सोहँग मुरली बजाई । सतपुर जाय मिली सतगुरु से । मधुर बीन धुन आई । चरन में राधास्वामी जाय समाई ॥ ४ ॥	महासुन्नं पारं कृत्य गच्छति गुहायाम् । सोहंग पदे कृतं वेणुवादनम् । सत्तपुरे सद्गुरुणा मिलितः । आहितुण्डवाद्यस्य मधुरध्वनिरागतः । जातः राधास्वामीचरणयोः लयलीनः ॥ ४ ॥

॥शब्द ३०॥ आज सखी गुरु सँग खेलो री होरी	
हिंदी	संस्कृत
आज सखी गुरु सँग खेलो री होरी । तेरा सुन्दर ब्योंत बनो री ॥१॥	आलि अद्य गुरुणा सह खेलतु होलीम्। अयि अद्भुतावसरोऽस्ति तव॥१॥
सतगुरु भेंटे सतसँग मिलिया । अचरज भाग जगो री ॥२॥	सद्गुरुप्राप्ता: सत्संगप्राप्त: । अयि अदभुतभाग्यं जागृतम् ॥२॥
ऐसा दुरलभ औसर पाया । नर देह सुफल करो री ॥३॥	ईदृग् दुर्लभावसरं प्राप्तम् । अयि नरदेहं सफलं कुर्यात् ॥३॥
अब नहिं चेतो तो फिर कब चेतो । फिर नहिं ऐसा समा मिलो री ॥४॥	अधुना न जागर्षि चेत्तर्हि कदा जागरिष्यसि । अयि न पुनः ईदृशवसरं भविष्यति ॥४॥
जैसे बने तैसे अब ही चेतो । गुरु सँग प्रीति धरो री ॥५॥	यथासम्भवं तथा अधुनैव जागृया:। अयि गुरुणा सह प्रीतिं धारयतु ॥५॥
प्रेम गुलाल घोल घट अंतर । गुरु पर ले छिड़को री ॥६॥	घटे प्रेम्ण: रक्तचूर्णं विलाल्य । अयि गुरौ अवकीर्यतु ॥६॥
सुरत अबीर भरो हिये थाला । गुरु चरनन पर आन मलो री ॥७॥	आत्माबीरेण पूरयतु हृदयस्थाल्याम् । अयि मर्दनं कुर्यात् गुरुचरणयोः ॥७॥
प्रेम भरी सखियाँ सँग ले कर । भक्ति रंग बरसत भींजो री ॥८॥	प्रेमपूर्णा सखिजनसार्धम् । अयिभक्तिरंगवृष्टयां आर्द्रा: भवन्तु ॥८॥
अस आरत गुरु चरनन कीजे । धुन रस ले मन गगन चढ़ो री ॥९॥	ईदृशी आरति: गुरुचरणयोः कुर्यात् । अयि ध्वनिरसं गृहीत्वा मन: गगनारोहणं कुर्यात् ॥९॥
परम गुरू राधास्वामी दयाला । उन चरनन में सुरत भरो री ॥१०॥	परमगुरु: राधास्वामीदयालुः। अयि तेषां चरणयो: आत्मानं युञ्ज्यात् ॥१०॥

॥ शब्द ३१ ॥ सुन री सखी मेरे प्यारे राधास्वामी	
हिंदी	संस्कृत
सुन री सखी मेरे प्यारे राधास्वामी। आज जग जीव उबार कराय रहे री ॥ १ ॥	श्रुणु सखी मम प्रिय राधास्वामीदयालव:। अयि अद्य जगत् जीवान् मोक्षयन्ति ॥ १ ॥
चार लोक में बजी है बधाई । मिल हंस सभा गुन गाय रहे री ॥ २ ॥	चतुर्लोकेषु नदन्ति शुभकामना: । अयि हंससभा मिलित्वा करोति गुणगानम् ॥ २ ॥
घन गरज गरज बजा दया का नगारा । काल करम मुरझाय रहे री ॥ ३ ॥	घना: गर्जन् दयाया: दुन्दुभिं नदन्ति। अयि कालकर्माणि क्लान्तानि भवन्ति ॥ ३ ॥
अमृत धार लगी घट झिरने । धुन घंटा संख सुनाय रहे री ॥ ४ ॥	घटे अमृतधारा स्रवति। अयि घंटाशंखस्य ध्वनिं श्रावयन्ति ॥ ४ ॥
धन धन भाग जगा जीवन का। जो गुरु दरशन पाय रहे री ॥ ५ ॥	धन्योऽस्ति जगत् जीवनां भाग्यं जागृतम्। अयि ये गुरुदर्शनं प्राप्नुवन्ति ॥ ५ ॥
कर सतसंग मिला रस भारी । प्रीति प्रतीति बढ़ाय रहे री ॥ ६ ॥	सत्संगेन प्राप्त: रसोऽधिक:। अयि प्रीतिप्रतीतिञ्च वर्द्धयन्तौ॥ ६ ॥
सुरत शब्द का दे उपदेशा । घट में सुरत चढ़ाय रहे री ॥ ७ ॥	सुरतशब्दस्य उपदेशं दत्वा। अयि घटे आत्मानमारोहन्ति॥ ७ ॥
आरत कर गुरु लीन रिझाई। तन मन धन सब वार रहे री ॥ ८ ॥	आरतिं कृत्वा गुरुमाकर्षितम्। अयिगात्रमनधनश्च सर्वे अर्पयन्ति॥ ८ ॥
हुए प्रसन्न राधास्वामी गुरु प्यारे । उन सतलोक पठाय रहे री ॥ ९॥	राधास्वामीप्रियगुरु: प्रसन्ना: जाता:। अयि तान् सत्तलोकं प्रेषयन्ति ॥ ९॥

॥ शब्द ३२ ॥ सखी री मैं निस दिन रहूँ घबरानी	
हिंदी	संस्कृत
सखी री मैं निस दिन रहूँ घबरानी ॥टेक॥	आलि अहं प्रतिदिनं उद्विग्ना भवामि ॥टेक॥
मन इंद्री की चाल निरख कर । बहु बिधि रहूँ पछतानी । भोग बासना छोड़त नाहीं । उन सँग रहे अटकानी । दरद कस कहूँ बखानी ॥ १ ॥	मनसः इन्द्रियाणां गतिं पश्य। बहुविधिना अनुशोचामि। भोगवासनाः न त्यजामि। तैः सह करोति गत्यवरोधनम् । पीडां कथं वर्णयामि ॥ १ ॥
बहु बिधि याहि समझौती दीन्ही । नेक कहन नहिं मानी । मैं तो हार हार अब बैठी। गुरु बिन कौन बचानी । कहो मेरी कहा बसानी ॥ २ ॥	अनेकश: अभिसंधिः कृता अनेन सह। नाल्पमपि कथनं स्वीकृतम्। अहन्तु पराजिताभूय अतिष्ठम्। गुरुं विना क: रक्षितुं क्षमः। किं सामर्थ्यमस्ति मम ॥ २ ॥
सुमिरन ध्यान में ठहरे नाहीं । थोथा भजन करानी । बहु बिधि अपना जोर लगाऊँ । छोड़े न भरम कहानी । क्षीर तज पीवे पानी ॥ ३ ॥	स्मरणध्याने च तिष्ठति न । व्यर्थे ध्यानं करोमि। बहुविधिना स्वाति प्रयासं करोमि । न त्यजति भ्रमकथाम्। क्षीरं त्यक्त्वा पयःपान करोति ॥ ३ ॥
गुरु दयाल की मेहर परखती। तौ भी धुन में प्रीति न आनी। घट में चंचल नेक न ठहरे। चिंता में रहे नित्त भुलानी। कहो कस जुगत कमानी ॥ ४ ॥	गुरुदयालो: कृपामवलोकयामि। न तदापि जायते ध्वनौ प्रीतिः ॥ चंचलः घटे अल्पमात्रमपि न सीदति। चिन्तायां नित्यं विस्मारयति॥ वदतु कथमर्जयामि युक्तिम् ॥ ४ ॥
अब थक कर मैं करूँ बीनती। हे गुरु दृष्टि मेहर की आनी। छिमा करो और दया उमँगाओ। हे राधास्वामी पुरुष सुजानी। प्रेम का देवो दानी ॥ ५ ॥	श्रान्तः भूय करोम्यहं प्रार्थनाम् । हे गुरो ! कृपा दृष्टिं कुर्यात् ॥ क्षम्यतां जागृयु: दयाम् । हे सर्वज्ञा: राधास्वामीपुरुषा:॥ दद्युः प्रेम्ण: दानम् ॥ ५ ॥

॥ शब्द ३३ ॥प्रेम रंग ले खेलो री गुरु से	
हिन्दी	संस्कृत
प्रेम रंग ले खेलो री गुरु से । आज पड़ा तेरा दाव री ॥ १ ॥	प्रेमरंगेन खेलतु गुरुणा सह । अयि अद्यास्ति सुअवसरं तव॥१॥
गुरु को सब बिधि समरथ जानो । लाओ पूरन भाव री ॥ २ ॥	गुरुं सर्वविधिना समर्थं जानीयात् । अयि पूर्णां श्रद्धां दध्यात्॥२॥
दया करें तुझ पर वे छिन छिन । दे दे मन को ताव री ॥ ३॥	कुर्वन्ति दयां त्वयि प्रतिपलं ते। अयि कुर्यात् मनसि उद्दीपनम्॥३॥.
अस्तुत कर महिमा कर उनकी । नित्त बढ़ाओ चाव री ॥४॥	स्तुति गुणगानञ्च कुर्यात् तेषाम्। अयि प्रतिपलं प्रेम वर्धेथाः।४।
गुरु से रोस करो मत कबही । छिन छिन प्रेम बढ़ाव री ॥ ५ ॥	मा कुर्यात् गुरवे क्रोधं कदापि । अयि क्षणं क्षणं प्रेम वर्धेथाः॥५॥
मौज निहार रज़ा में बरतो । मन मत दूर हटाव री ॥ ६ ॥	आनन्दक्रीडाम् अवलोक्य तेषामिच्छायां वर्तेथाः । अयि मनसः आचरणं अपसारयेत् ॥६॥
सुरत जगाय उमंग नई धारो । राधास्वामी चरन समाव री ॥ ७ ॥	आत्मानं जागरयित्वा नवोत्साहं धारयेत्। अयि राधास्वामीचरणयोः लीनं भवेत् ॥७॥

॥ शब्द १ ॥ सावन ॥ सावन मास मेघ घिर आये	
हिंदी	संस्कृत
सावन मास मेघ घिर आये। गरज गरज धुन शब्द सुनाये ॥ १ ॥	श्रावणमासः मेघाच्छादिताः। नर्दयन् शब्दा: श्रावयन्ति ॥१॥
रिमझिम बरषा होवत भारी। हिये बिच लागी बिरह कटारी ॥ २ ॥	मन्दावृष्टिः भवत्यधिका। हृदये भवति विरहस्यपीडा ॥२॥
प्रीतम छाय रहे परदेसा। बूझत रही नहिं मिला सँदेसा ॥ ३ ॥	प्रियः वर्तते परदेशे । जानामि न कोऽपि सन्देश: ॥३॥
रैन दिवस रहँ अति घबराती। कसक कसक मेरी कसके छाती ॥ ४ ॥	दिवारात्रौ अत्युद्विग्ना भवामि । वक्षस्थले जायते तीव्रापीडा ॥४॥
कासे कहूँ कोइ दरद न बूझे। बिन पिया दरस नहीं कुछ सुझे ॥ ५ ॥	कं वच्मि न कोऽपि हरति पीडाम्। प्रियस्य दर्शनं विना न किमपि रोचते ॥५॥
चमके बीज तड़प उठे भारी। कस पाऊँ पिया प्रान अधारी ॥ ६ ॥	दीप्यते विद्युत व्यथा जायते अधिका। कथं प्राप्नोमि प्राणाधारं प्रियतमम्॥६॥
रोवत बीते दिन और राती। दरद उठत हिये में बहु भाँती ॥ ७ ॥	दिवारात्रौ रुदने जातौ। अनेकशः पीडा हृदये जायते।।७।।
ढूँढ़त ढूँढ़त बन बन डोली। तब राधास्वामी की सुन पाई बोली ॥ ८ ॥	गवेषयन् प्रतिवनं गता। तदा श्रुता राधास्वामीदयालो: वाणी ॥८॥
प्रीतम प्यारे का दिया सँदेसा। शब्द पकड़ जाओ उस देसा ॥ ९॥	प्रियस्य दत्त: सन्देशः । शब्दं ग्राह्य गच्छ तद्देशम्॥९॥
सुरत शब्द मारग दरसाया। मन और सुरत अधर चढ़वाया ॥ १० ॥	सुरतशब्दस्य मार्गं दर्शितवन्तः। आत्मामनश्च अधरं आरोहितवन्तौ ॥१०॥
कर सतसंग खुले हिये नैना। प्रीतम प्यारे के सुने वहीं बैना ॥ ११ ॥	सत्संगेन अनावृतः अन्तश्चक्षुः। तत्रैव श्रुता प्रियस्य मधुरशब्दाः॥११॥
जब पहिचान मेहर से पाई। प्रीतम आप गुरू बन आई ॥ १२ ॥	यदा कृपया ज्ञातवती। प्रिय: स्वयं गुरुरूपे समागता:॥१२॥
दया करी मोहि अंग लगाया। दुक्ख दरद सब दूर हटाया ॥ १३ ॥	दयां कृत्वा स्वीकृतवन्तः । दुःखपीडा: सर्वाः परिहरिताः॥१३॥
क्या महिमा मैं राधास्वामी गाऊँ। तन मन वारूँ बल बल जाऊँ ॥१४॥	कथं गायामि राधास्वामीमहिमाम्। तनुमनश्च अर्पयामि समर्पयामि च॥१४॥
भाग जगे गुरु चरन निहारे।	भाग्यानि जागृतानि गुरुचरणौ अवलोकितौ। राधास्वामीदयालवे धन्यवादं वच्मि ॥१५॥

अब कहूँ धन धन राधास्वामी प्यारे ॥१५॥	

॥ शब्द २ ॥ दिवाला पूजें जीव अजान	
हिंदी	संस्कृत
दिवाला पूजें जीव अजान। भरमते फिरते चारों खान ॥ १ ॥	अज्ञजीवाः पूजयन्ति दिवालाम्। भ्रमन्ति चतुर्योनिषु ॥ १ ॥
दिवाली संतन घर जागी। प्रेम रस मन सूरत पागी ॥ २ ॥	दिवाली जागृता संतगृहेषु। आत्मामनश्च लीनौ प्रेम्णः रसे ॥ २ ॥
खिला अब चमन नूर हिये में। बढ़ी अब प्रीति गुरु जिये में ॥ ३ ॥	विकसितोऽद्य हृदये पुष्पोद्यानस्य तेजः। गुरुं प्रति हृदये प्रीतिः वर्धिता ॥ ३ ॥
साफ़ मैं कीन्हा मन दरपन। किया तन मन धन गुरु अरपन ॥ ४ ॥	स्वच्छं कृतं मया मनसः दर्पणम्। तनुमनधनानि च गुरौ समर्पितानि ॥ ४ ॥
लगाई बाज़ी गुरु के संग। हार कर तन मन लिया गुरु रंग ॥ ५ ॥	कृतं पणम् गुरुणा सह। पराजितं भूत्वा तनुमनश्च गुरौ रंगे रंजितौ ॥ ५ ॥
बाल जिव मूरत में अटके। जुगन जुग सहते जम झटके ॥ ६ ॥	अज्ञजीवाः मूर्तिपूजायां भ्रमिताः। युगयुगान्तरं यमराजस्य झटनं सहन्ते ॥ ६ ॥
खिलौने खेल गये घर भूल। पकड़ कर साखा तज दिया मूल ॥ ७ ॥	क्रीडनकानि सह क्रीडित्वा विस्मृतं निजगृहम्। शाखां ग्राह्य मूलं त्यक्तम् ॥ ७ ॥
जुए में नर देही हारी। देत जम धिरकारी भारी ॥ ८ ॥	द्यूते देहं पराजितम्। अतिधिक्करोति यमराजा ॥ ८ ॥
अभागी जीव न मानें बात। भरमते नित तम चक्कर साथ ॥ ९॥	वार्तां न स्वीकुर्वन्ति असुकृतिनः। तमसः चक्रेषु भ्रमन्ति नित्यम् ॥ ९॥
रैन ज्यों मावस अँधियारी। रही कल धारा घट जारी ॥ १० ॥	आमावस्यां यथा जातः तमः। तथैवास्ति कालस्य धारा घटे ॥ १० ॥
जगा जिन जीवन धुर भागा। लगा गुरु चरनन अनुरागा ॥ ११ ॥	येषां सर्वोच्चपदस्य भाग्यानि जागृतानि। तेषां गुरुचरणयोः अनुरागं संजातम् ॥ ११ ॥
सुरत मन नित घट में चढ़ते। सरन गुरु छिन छिन दृढ़ करते ॥ १२ ॥	आत्मामनश्च नित्यं घटे आरहतौ। गुरोः शरणं क्षणं क्षणं दृढं कुर्वन्ति ॥ १२ ॥
देखते दीप दान घट में। निरखते जोत रूप पट में ॥ १३ ॥	पश्यन्ति दीपदानं घटे। अवलोकयन्ति ज्योतिस्वरूपं पटे ॥ १३ ॥
गगन चढ़ देखत उगता सूर । सुन्न में निरखत चाँदन पूर ॥१४॥	गगनमारुह्य पश्यन्ति उदयन् सूर्यम् । सुन्ने पश्यन्ति पूर्णचन्द्रमसम् ॥१४॥
भँवर में झलका अद्भुत नूर।	भंवरगुहायां भासते अद्भुततेजः।

परे तिस सत्तनाम भरपूर ॥१५॥	तत्रतः पूर्णसत्तनाम पदः वर्तते ॥१५॥
लखा फिर अलख अगम घर दूर। हुई राधास्वामी चरनन धूर ॥१६॥	दूरे अपश्यताम् अलखागमपदौ। संजाता राधास्वामीचरणयोः रेणुः ॥१६॥
करे जहाँ आरत सेवक सूर । मेहर गुरु पाया आनँद पूर ॥१७॥	यत्र करोति आरतिं शूरः सेवकः। गुरोः कृपया पूर्णानन्दं प्राप्तम् ॥१७॥

॥ शब्द ३ ॥ तड़पत रही बेहाल	
हिंदी	संस्कृत
तड़पत रही बेहाल, दरस बिन मन नहिं माने। कासे कहूँ बिथाय, दरद मेरा कोइ नहिं जाने ॥ १ ॥	पीडयामि विरहे अधिका, दर्शनं विना न शान्ति: मनसि। कस्मै निवेदयामि व्यथाम्, न कोऽपि जानाति मम पीडाम् ॥ १ ॥
निस दिन हर बार, सोच यही मोहि सतावत। गुरु से कैसे मिलूँ, जतन कोइ बन नहिं आवत ॥ २ ॥	प्रतिदिनं प्रतिवारम्, इयमेव चिन्ता व्यथयति माम्। कथं गुरुणा सह मिलयिष्यामि, न कापि युक्ति: मनसि आयाति ॥ २ ॥
बिन अंतर दीदार, मोर मन शांति न लावे। जग के भोग बिलास, नहीं मोहि नेक सुहावे ॥ ३ ॥	अन्तसि दर्शनं विना, मम मनः शान्तिं न प्राप्नोति। जगत: भोगविलासाश्च, नाल्पमात्रमपि मह्यं रोचन्ते ॥ ३ ॥
छिन छिन घटत शरीर, उमर यों ही बीती जावे। कस पाऊँ दीदार, सोच यही मन में आवे ॥ ४ ॥	देहं क्षीणं जातं प्रतिक्षणम्, आयुरेवं व्यतीतं भवति। कथं करोमि दर्शनम्, इयमेव चिन्ता मनसि जाता ॥ ४ ॥
बिन सतगुरु की मेहर, बने नहिं कोइ काजा। याते करूँ पुकार, दया का दीजे साजा ॥ ५ ॥	सद्गुरोः दयां विना, न कोऽपि कार्यं सिद्धयति। अतः आह्वयामि दयाया: सामग्री ददतु ॥ ५ ॥
राधास्वामी सुनो पुकार, पाट घट खोल दिखाओ। दरशन देकर आज, हिये की तपन बुझाओ ॥ ६ ॥	राधास्वामीदयालु: श्रृणु आह्वानम्, घटस्य पाटं अनावृत्य दर्शयन्तु। दर्शनं दत्वाद्य, हृदयस्य तापं शान्तं करणीयम् ॥ ६ ॥

॥ लावनी ॥ शब्द ४ ॥ बिन सतगुरु की भक्ति	
हिंदी	संस्कृत
बिन सतगुरु की भक्ति, जनम बिरथा नर नारी । गुरु ज्ञान बिना संसार, अँधेरा भारी ॥टेक॥	सद्गुरुभक्तिं विना, नरनार्योः जन्म व्यर्थं वर्तते। संसारे विना गुरुज्ञानं, तमोगहनम् ॥टेक ॥
क्या जन्मे जग में आय , शब्द का खोज न कीना । अटके देवी देव, संत का मरम न चीना ॥ दुख सुख भोगें सदा, करम का यह फल लीना, भोगन में रहे लिपटाय, विषय रस नित ही पीना ॥ जनम मरन नहिं छुटे, करम का चक्कर भारी । बिन सतगुरु की भक्ति, जनम बिरथा नर नारी ॥ १ ॥	किं प्रयोजनं जगति जन्मनः, शब्दान्वेषणं न कृतं चेत् । देवीदेवेषु ऊहापोहं कृतवन्तः, सत्पुरुषाणां मर्मं न ज्ञातवन्तः ॥ दुःखं सुखञ्च भुञ्जन्ते सदा, इदमेव प्राप्तं कर्मणां फलम्, भोगेषु लिप्ताः सन्ति, नित्यं पिबन्ति विषयरसान् ॥ जन्ममृत्योः न जायते मुक्तिः , कर्मणां चक्रं बृहत् । सद्गुरुभक्तिं विना, नरनार्योः जन्म व्यर्थं वर्तते॥१॥
वे बड़भागी जीव, मिले जिन सतगुरु प्यारे । कर उनका सतसंग, चरन उन सिर पर धारे ॥ सार बचन उर धार, हुए करमन से न्यारे । सोमत लीना चीन, भरम तज दीने सारे ॥ बिन गुरु कौन सुनाय,	तैव सन्ति सौभाग्यशालिनः, यैः प्राप्ताः सद्गुरुः। तेषां सत्संगं कृत्वा, तेषां चरणयोः शिरःसु धृतवन्तः॥ प्रवचनानां सारं हृदये धार्य, कर्मेभ्यः पृथग्जाताः। सुमतिः धृता , भ्रमाः त्यक्ताः सर्वे॥ गुरुं विना कः श्रावयितुं क्षमः,

जुगत यह सबसे न्यारी । बिन सतगुरु की भक्ति, जनम बिरथा नर नारी ॥ २ ॥	इयं सर्वेभ्यः पृथग्युक्तिः। सद्गुरुभक्तिं विना, नरनार्योः जन्म व्यर्थं वर्तते॥२॥
प्रीति बढ़त गुरु चरन, दिनों दिन आनँद भारा। मेहर से दिया गुरु भेद, शब्द का अगम अपारा ॥ ध्यान धरत गुरु रूप, हुआ घट में उजियारा । निस दिन सुरत लगाय, सुनत अनहद भनकारा ॥ बिन गुरु कैसे लगे, सुरत की घट में तारी । बिन सतगुरु की भक्ति, जनम विरथा नर नारी ॥ ३ ॥	प्रीतिः वर्धते गुरुचरणयोः, प्रतिदिनमानन्दं जायतेऽधिकम्। गुरुणा कृपया प्रदत्तः रहस्यः, शब्दस्य अगमापारश्च॥ गुरुस्वरूपस्य ध्यानेन, जातः घटे प्रकाश:। प्रतिदिनं आत्मानं युज्य, अनहदझंकारं श्रृणोति॥ गुरुं विना कथं युञ्जात्, आत्मनः घटे दृढ़सम्बन्धः। सद्गुरुभक्तिं विना, नरनार्योः जन्म व्यर्थं वर्तते ॥३॥
तिल का द्वारा फोड़, लखा घट जोत उजारा । सुन धुन घंटा संख संख, गगन में बजा नगारा ॥ गुरु का दरशन पाय, हुआ तन मन से न्यारा । करम जाल कट गया, जूझ कर काल भी हारा ॥ बिन सतगुरु की सरन, नहीं अस होय उबारी । बिन सतगुरु की भक्ति, जनम बिरथा नर नारी ॥ ४ ॥	षष्ठचक्रं भेद्य घटे ज्योते: प्रकाशमपश्यत् । घंटाशंखयोः ध्वनिं श्रुत्वा, गगने दुन्दुभिः नादं जातम्॥ गुरोः दर्शनं प्राप्य, तनुमनसोः पृथग्जातम् । छिन्नः कर्मणां पाश:, क्लान्त: कालोऽपि पराजित:। सद्गुरुशरणं विना , नैवं भवत्योद्धारम्। सद्गुरुभक्तिं विना, नरनार्योः जन्म व्यर्थं वर्तते॥४॥

सुन धुन ऊपर चढ़ी,	ध्वनिं श्रुत्वा ऊर्ध्वमारोहितम्,
करी हंसन सँग यारी ।	हंसैः सह कृतं सौहृदम्।
महासन्न के पार,	महासुन्नमतिक्रम्य ,
सुनी मुरली धुन न्यारी ॥	श्रुता अद्भुतवेणुध्वनिः॥
सतपुर पहुँची धाय,	धावित्वा गता सतपुरे,
लगी बीना धुन प्यारी ।	जाता अहितुण्डवाद्यस्य रुचिरध्वनिः।
लख अलख अगम का रूप,	अलखागमयोः रूपं दृष्ट्वा,
हुई सूरत सुखियारी ।	आत्मा सुखे जातम्॥
राधास्वामी चरनन मिली,	राधास्वामीचरणयो: मिलित: ,
हुआ आनँद अति भारी ।	आनन्द: जात: अधिक: ।
बिन सतगुरु की भक्ति,	सद्गुरुभक्तिं विना,
जनम बिरथा नर नारी ॥ ५ ॥	नरनार्योः जन्म व्यर्थं वर्तते ॥५॥

॥शब्द ५॥ (बारहमासा) आया मास असाढ़ बिरह के बादल घट छाये (द्वादशमासाः)	
हिंदी	संस्कृत
आया मास असाढ़ बिरह के बादल घट छाये नैनन झड़ता नीर मेघ ज्यों रिमझिम बरखाये अन्न और पानी नहिं भावे । हर दम पिया की याद, बिकल चित चहुँ दिस को धावे॥ खटक दरशन की हिये साले । बिन प्रीतम दीदार नहीं मन कोइ विधि कर माने ॥१॥	आगत: आषाढ़मास: विरहस्य मेघाच्छादिता: घटे नेत्राभ्यां स्रवति नीर: मेघा: यथा रिमझिमं कुर्वन्ति न रोचते अन्नजलम् । प्रतिपलं प्रियस्य स्मरणम्, क्लान्तचित्तं धावति चतुर्दिक्षु दर्शनस्य व्यधनं हृदयं पीडयति प्रियदर्शनं विना न जायते मनसि शान्ति: केनापि प्रकारेण ॥१॥
लागा सावन मास घुमँड़ घन चहुँ दिस रहा बरखाय । सुन सुन पपिहा बोल बिरहनी रही जिये में घबराय ॥ तपन हिये में उठती भारी । ढूँढ़त रही पिया धाम, खोज कर बैठी थक हारी ॥ भेख और पंडित जग भरमान । निज घर सुद्ध न लाय रहे सब माया सँग अटकान॥२॥	प्रारब्धः श्रावणमासः घनाः घूर्णयन् चतुर्दिक्षु वर्षन्ति । चातकस्य शब्दं श्रुत्वा विरहिणी हृदये व्याकुला भवति ॥ हृदये जायते संतापमधिकम् । अन्विष्यति स्म प्रियस्य पदम् अन्विष्य स्थिता श्रान्ता च पाषण्डीपण्डिताश्च जगद् भ्रमयन्ति निजगृहं विस्मरन्ति सर्वे मायया सह संसक्ता: सन्ति॥२॥
तीजा भादों मास बिरह की दौं लागी भारी । देखत अस अस हाल पिया आये संत रूप धारी सहज में मोहि दरशन दीन्हा । घर का भेद बताय,	तृतीयभाद्रमासः विरहस्याग्नि: जाताधिका ईदृशीमवस्थां पश्य प्रिय: संतरूपं धृत्वा समागतवन्त: सहजे माम् दर्शनं दत्तवन्त: गृहस्य भेदं गदित्वा

दया कर मोहि अपना कीन्हा । शब्द की घट में राह लखाय । सतगुरु चरन अधार सुरत मन धुन सँग देत चढ़ाय॥३॥	दयां कृत्य मां स्वीकृतवन्तः घटे शब्दस्य मार्गं दर्शयित्वा सद्गुरुचरणाधारे आत्मामनसी च ध्वनिना सह आरोहतौ ॥३॥
आया मास कुआर सुरत गुरु चरनन में लागी । दिन दिन सेवा करत प्रीति हिये अंतर में जागी। रूप गुरु लागे अति प्यारा । सुनती चित से बचन, अमी की ज्यों बरसे धारा ॥ हिये के मैल भरम निकसे । मगन हुई मन माहिं फूल की कलियाँ ज्यों बिगसे ॥४॥	आश्विनमासागत : आत्मा गुरुचरणयोलीनः । प्रतिदिनं सेवां कृत्य हृदन्तसि जागृता प्रीतिः । मनभावनः सद्गुरुस्वरूपः । श्रृणोति वचनं चित्तेन, यथा जायतेऽमृतवृष्टिः । हृदयस्य कालुष्यानि निःसृतानि । मनसि आनन्दं जातं यथा विकसन्ति पुष्पकलिकाः ॥४॥
कातिक काया ताक सुरत मन घर की सुध धारी गुरु सरूप धर ध्यान शब्द धुन सुनती झनकारी निरख घट अंतर उजियारी । अचरज लीला देख, होत अब तन मन सुखियारी । गुरु की बढ़ती नित परतीत । छिन छिन दया निहार उमँगती नई नई भक्ती रीत॥५॥	कार्तिकमासे कायां दृष्ट्वा आत्मामनसी धुरपदं स्मृतवन्तौ गुरुस्वरूपं ध्याय शब्दस्य झंकारं श्रृणोति घटस्यान्तसि प्रकाशमवलोकयति । अद्भुतलीलां पश्य, तनुमनसी सुख संसक्तौ नित्यं वर्धते गुरोः प्रतीतिः प्रतिक्षणं दयामवलोक्य प्रफुल्लति नवा भक्तिरीतिः ॥५॥
अघहन अघ सब कटे सुरत मन निरमल होय आये । मेहर करी गुरु देव तोड़ तिल नभ ऊपर धाये ॥ सुनी वहाँ घंटा संख पुकार । सहसकँवल के माहिं,	मार्गशीर्षमासे छिन्नः अघसमूहः आत्मामनसी स्वच्छौ जातौ । दयाकृता गुरुणा षष्ठचक्रं भेद्य ऊर्ध्वं गमनं कृतम् ॥ तत्र श्रुतं घंटाशंखयोश्च आह्वानम् । सहस्रदलकमलमध्ये ,

निरख रही निरमल जोत उजार ॥ हिये से गुरु महिमा गाती । निरखत दया अपार चरन पर नित बल बल जाती ॥६॥	अवलोकयति निर्मलज्योतेः प्रकाशम् ॥ हृदयेन गुरुमहिमां गायति। अपारदयामवलोक्य चरणयोः नित्यं समर्पितं भवति ॥६॥
माया जाड़ा लाग पूस में मुरझाया काला । सुन धुन गगना पूर सुरत मन झट चढ़ गये बाला मेघ जहाँ गरजत घोरमघोर । बाजत धुन मिरदंग, कालदल धर भागा घर छोड़ ॥ सुरत गुरु दरशन कर हरखाय । छूटे करम कलेश दया गुरु छिन छिन रही गुन गाय ॥७॥	मायाशीतेन व्याकुला पौषमासे क्लान्तः कालः । ध्वनिं श्रुत्वा पूर्णगगने चैतन्यात्मामनसी शीघ्रमारोहितौ मेघाः यत्र घोरगर्जनां कुर्वन्ति। नदति मृदंगध्वनिः तत्र, कालदलः गृहं परित्यज्य पलायितः आत्मा गुरुदर्शनेन हर्षितः छिन्नाः कर्मक्लेशाः प्रतिक्षणं गुरोः दयायाः गानं करोति ॥७॥
माघ महीना लाग खिलत रही चहुँ दिस फुलवारी । बेनी तीर चढ़ाय सुरत गई तिरलोकी पारी ॥ खेल रही हंसन सँग कर प्यार । मानसरोवर न्हाय, सुनत रही किंगरी सारँग सार । शिखर चढ़ गई महासुन पार । सिंह नाग को टार भँवर गढ़ पहुँची सतगुरु लार ॥८॥	प्रारब्धः मार्गशीर्षमासः चतुर्दिक्षु विकसति पुष्पवाटिका । बेनीतटे आरोहय आत्मा त्रिलोक्याः पारं गतम्। हँसैः सह प्रेम्णा क्रीडति। मानसरसि स्नानं कृत्वा, श्रृणोति किंगरीसारंगीवाद्ययोः उत्तमध्वनिम् । शिखरे आरोहितं महासुन्नं पारं कृत्य । सिंहनागौ व्याजीकृत्य भंवरगुहादुर्गे गतम् सद्गुरुसमीपम् ॥८॥
फागुन फाग रचाय पुरुष सँग खेलत सुत होरी मुरली बीन बजाय काल से कुल नाता तोड़ी॥ मची सतपुर में अचरज धूम । जुड़ मिल आये हंस,	फाल्गुनमासे फागं संरच्य आत्मा पुरुषेण सह क्रीडति होलीम्, वेणुरहितुण्डवाद्यञ्च नर्दयन् कालकुलात् कृतः सम्बंधविच्छेदः॥ जातः सतपुरे भव्यः कोलाहलः। मिलित्वागताः हंसाः,

हरख कर आरत गावें घूम । प्रेम रँग भींज रहे सब कोय । अचरज शोभा पुरुष निहारत चरनन सुरत समोय ॥९॥	हर्षित्वा भ्रमित्वा आरतिं गायन्ति। सर्वे प्रेम्णः रंगे क्लिद्यन्ति। पुरुषस्याद्भुतशोभामवलोकयति आत्मानं चरणयोः युज्य ॥९॥
चैत महीना चेत अधर की सुध ले सुत चाली। पुरुष दई दुरबीन अलखपुर पहुँची दरहाली । मगन हुई दरस अलख पुर्ष पाय | अरबन रबि उजियार, पुरुष के इक इक रोम लजाय । ख़बर ले ऊपर को धाई । अगम पुरुष दरबार निरख छबि अद्भुत हरखाई ॥१०॥	चैत्रमासः चैतन्यं भूत्वा अधरं स्मृत्यात्मा चलति। पुरुषेण दत्तं दूरवीक्षणयन्त्रं अलखपुरे गतं कष्टेन। निमग्नं जातं अलखपुरुषस्य दर्शनं प्राप्य। अर्बुदभानूनां प्रकाशः, पुरुषस्य प्रतिलोम्नः त्रपयन्ति। वृत्तान्तं प्राप्य ऊर्ध्वंगतः। अगमपुरुषस्य सदने छविमवलोक्य अद्भुताश्चर्येण हर्षितः ॥१०॥
आया मास बैसाख चित्त में बाढ़ा अनुरागा। अगम लोक के पार ध्यान राधास्वामी चरनन लागा ॥ सुरत चली धीरे से पग धार । निरखा अजब प्रकाश, द्वार पर रबि शशि नहीं शुमार ॥ लखा जाय हैरत रूप अनाम । अकह अपार अनंत परम गुरु संतन का निज धाम ॥११॥	वैशाखमासमागतः चित्ते वर्धितः अनुरागः। अगमलोकं लंघ्य राधास्वामीचरणयोः ध्यानं अयुनक् शनैः पदं निक्षिप्य आत्माचलितः॥ अवलोकितमद्भुतप्रकाशम्, अगणितरविशशयः द्वारे॥ अनामरूपं पश्य विस्मितः। अवर्णनीयापारानन्तः परमगुरुसंतपुरुषाणां निजधामः(धाम) ॥११॥
सबसे जेठा धाम आदि में वहीं से सुत आई काल जालकी फाँस फँसी तन मन सँग दुख पाई	सर्वेभ्यः ज्येष्ठपदः प्रारंभे तस्मादेव धामात् (धाम्नः) आगतः आत्मा,

मिलें कोई सतगुरु परम उदार । कर उनका सतसंग प्रेम से. तब होवे निरबार॥ दीन दिल चरन सरन धारे। सुरत शब्द की राह अधर घर चढ़ जावे पारे ॥१२॥	कालजालस्य पाशे बद्धः तनुमनसा सह दुःखं प्राप्तम्, प्राप्येत् कोऽपि परमोदारसद्गुरुः। प्रेम्णा तेषां सत्संगं कृत्वा, तदा भवेत् निर्वाणम्। दीनहृदयेन चरणशरणं धारयेत्। सुरतशब्दस्य मार्गेण अधरगृहं आरोह्य पारं गच्छति ॥१२॥
बारह मास पुकार संत की निज महिमा गाई सूरत शब्द लगाय मिलन का रस्ता बतलाई भाग बढ़ अपना क्या गाऊँ । मिल गये राधास्वामी दयाल, दई मोहि निज चरनन ठाऊँ ॥ जिऊँ में राधास्वामी आधारे । चरनन सुरत लगाय गाऊँ मैं धन धन स्वामी प्यारे ॥१३॥	द्वादशमासानां आह्वानं कृत्य संतपुरुषाणां निजमहिमायाः गानं कृतम्, संयोज्य सुरतशब्दं संयोगस्य मार्गं निर्दिष्टम्, सौभाग्यं स्व कथं वर्णयामि। प्राप्ताः राधास्वामीदयालवः, दत्तं माम् स्वचरणयोः स्थानम्॥ जीवाम्यहं राधास्वामीप्रियम् आधृत्य। चरणौ सुरतं युज्य गायाम्यहं धन्यः धन्यः प्रियस्वामीदयालवः ॥१३॥

॥ शब्द १ ॥ क्या भूल रही जग माहिं	
हिंदी	संस्कृत
क्या भूल रही जग माहिं । घर को जाना है ॥ १ ॥	कथं विस्मरसि जगति । गृहं गमनीयम्॥१॥
यह देश तुम्हारा नाहिं । काल का थाना है ॥ २ ॥	नायं देशः तव । कालस्य स्थानमस्ति॥२॥
संग त्यागो पंडित भेष । भरम भुलाना है ॥ ३ ॥	पंडितपाषण्डीना संगं त्यज। भ्रमे विस्मारयन्ति॥३॥
जो घट का देवे भेद । वही गुरु स्याना है॥ ४ ॥	यो ददाति घटस्य भेदम् । सैव गुरुराप्तः॥४॥
सुरत शब्द का भेद बताय । घर पहुँचाना है ॥ ५ ॥	सुरतशब्दस्य मर्मं उद्घाट्य। गृहं प्रेषणीयम् ॥५॥
तू कर चरनन प्रीति । रूप उन ध्याना है ॥ ६ ॥	करोतु त्वं चरणयो: प्रीतिम्। तेषां स्वरूपस्य ध्यानं करणीयम्॥६॥
सुन घट में धुन झनकार । शब्द निशाना है ॥ ७ ॥	घटे श्रृणोतु झंकारध्वनिम् । शब्दोऽस्ति लक्ष्यः॥७॥
धुन डोरी गह मज़बूत। सुरत चढ़ाना है ॥ ८ ॥	धुनसूत्रं दृढ़ं कृत्वा गृहणीयम्। आत्मन आरोहणं करणीयम्॥८॥
सुन घंटा संख पुकार। मृदंग बजाना है ॥९ ॥	घंटाशंखयोराह्वानं श्रृणोतु। मृदंगं नर्दनीयम्॥९॥
सुन किंगरी सारँग सार । भँवर धुन गाना है ॥१०॥	किंगरीसारंगीवाद्ययोः उत्तमध्वनिं श्रुत्वा। भंवरगुहाया: ध्वनेः गानं करणीयम्॥१०॥
धर अमर लोक पुर्ष ध्यान । दरशन पाना है ॥ ११॥	अमरलोके पुरुषं ध्याय। दर्शनं करणीयम्॥११॥
लख अलख पुरुष पद पार । अगम ठिकाना है ॥ १२॥	अलखपुरुषस्य स्थलं पश्य। तदतिक्रम्य अगमपुरुषस्य धाम:(धाम) अस्ति॥१२॥
राधास्वामी धाम निहार । दरस दिवाना है ॥१३॥	राधास्वामीधामं(धाम) अवलोक्य । दर्शने मत्तोऽस्ति॥१३॥
गति पूरी पाई आज	अद्य सम्पूर्णगतिः प्राप्ता।

चरन समाना है ॥१४॥	चरणयो: लीन: भवनीयः॥१४॥

॥ शब्द २॥ ऐसी गहरी पिरेमन नार	
हिंदी	संस्कृत
ऐसी गहरी पिरेमन नार | गुरू को लीन रिझाई ॥१॥	ईदृशी प्रगाढ़ानुरागिणी नारी। गुरुं प्रसन्नं कृतम् ॥१॥
सेवा करत प्रेम से निस दिन । तन मन दीन चढ़ाई ॥२॥	प्रतिदिनं प्रेम्णा सेवां करोति। तनुमनसी समर्पयति॥२॥
गुरु दरशन बिन कल न पड़त है। छिन छिन मन अकुलाई ॥३॥	गुरुदर्शनं विना शान्तिः नायाति। प्रतिक्षणं मनः व्याकुलं भवति॥३॥
जब गुरु दरशन करत मगन होय । फूली तन न समाई ॥४॥	यदा गुरु दर्शनं कृत्वा मग्ना भूता। प्रफुल्लिता देहे न समागता ॥४॥
आरत कर कर प्रेम बढ़ावत । गुरु छबि पर बल जाई ॥५॥	आरतिं कुर्वन् प्रेम वर्धयति। गुरुस्वरूपे समर्पयति॥५॥
सुरत लगाय शब्द सँग धावत । नभ तज गगन चढ़ाई ॥६॥	सुरतं युज्य शब्देन सह धावति। नभं त्यक्त्वा गगने आरोहयति॥६॥
सुन्न सिखर चढ़ भँवरगुफा लख । अमर लोक धस जाई ॥७॥	सुन्नशिखरे आरुह्य भँवरगुहां पश्य। अमरलोके अंतर्निविशति॥७॥
अलख अगम से मेला कर के। राधास्वामी चरन समाई ॥८॥	अलखागमभ्यां संयोगं कृत्य। राधास्वामीचरणयोः संविशता॥८॥

॥ शब्द ३ ॥ मनुआँ हठीला कहन न माने	
हिंदी	संस्कृत
मनुआँ हठीला कहन न माने । भोगन में रस लेत ॥१॥	मनः बलवदृढ़ं कथनं न स्वीकरोति । विषयेषु लीनं भवति ॥१॥
गली गली में भरमत डोले । करे न गुरु सँग हेत ॥२॥	वीथिषु भ्रमति । न करोति गुरुणा सह प्रीतिम् ॥२॥
सतगुरु दाता भेद बतावें । सुरत शब्द रस देत ॥३॥	सद्गुरुदाता भेदमुद्घाटयति। आत्मानं शब्दरसं ददाति ॥३॥
यह मूरख भरमन में अटका । निस दिन रहे अचेत ॥४॥	धूर्तोऽयं भ्रमेषु संसक्तः। प्रतिदिनमचेतनं भवति ॥४॥
माया सँग नित रहत भुलाना । कस पावे पद सेत ॥५॥	नित्यं मायया सह विस्मृतम्। कथं प्राप्तुं शक्यते निर्मलचेतनपदम् ॥५॥
कुटुॅंब जगत की प्रीति न छोड़े। मर मर होय पिरेत ॥६॥	कुटुंबजगतः प्रीतिं न त्यजति। मृत्युं प्राप्य भवति प्रेत्यः ॥६॥
राधास्वामी जब निज दया बिचारें । तब छूटे जम खेत ॥७॥	राधास्वामीदयालुः यदा दयां धारयेत्। तदा निवर्तिष्यति यमराज्ञः क्षेत्रात् ॥७॥

॥ शब्द ४ ॥ अमी की बरखा हुई भारी	
हिंदी	संस्कृत
अमी की बरखा हुई भारी । भींज रही अंतर सुत प्यारी ॥ १ ॥	अमृतवृष्टिः जाताधिका । क्लिद्यति आत्मा अन्तसि अधिका॥१॥
सजी जहँ तहँ कँवलन क्यारी । शब्द गुल फूली फुलवारी ॥२॥	अलंकृता यत्र तत्र कमलवाटिका। शब्दपुष्पेण पुष्पवाटिका प्रफुल्लिता॥२॥
बासना त्यागी संसारी । मगन होय चढ़त अधर प्यारी ॥३॥	जगद्वासना: त्यक्ता:। मग्नं भूत्वा अधरमारोहति प्रियः॥३॥
गगन गुरु दरशन कीना री । हुआ मन चरन अधीना री ॥४॥	गगने कृतं गुरोः दर्शनम्। अयि मनः चरणाधीनं जातम्॥४॥
सुन्न चढ़ निरखी उजियारी । मिली हंसन सँग कर यारी ॥ ५ ॥	सुन्नपदे आरुह्य प्रकाशमपश्यत् । हंसैः सह मिलित्वा सौह्रदं कृतम्॥५॥
भँवर धुन लाग रही तारी । मिला फिर सत्त शब्द सारी ॥ ६ ॥	भँवरगुहाया: ध्वनौ लीन: संजातः। प्राप्तः पूर्णसत्तशब्दः तदा॥६॥
दया राधास्वामी की भारी । सरन दे चरन लगाया री ॥ ७ ॥	राधास्वामीदयालोः परमादया। शरणं दत्त्वा चरणौ नियोजित:॥७॥

॥ शब्द ५ ॥ सरन गुरु मोहि मिला भेवा	
हिंदी	संस्कृत
सरन गुरु मोहि मिला भेवा। उमँग कर करती गुरु सेवा ॥ १ ॥	गुरु शरणे प्राप्तं मया भेदम्। उत्साहेन करोमि गुरुसेवाम् ॥ १ ॥
नित्त मैं सतसँग करूँ बनाय। चरन गुरु राखूँ हिये बसाय ॥ २ ॥	नित्यायोज्य करोम्यहं सत्संगम्। गुरुचरणौ हृदये धारयामि ॥ २ ॥
सुमिरत रहूँ मैं नित गुरु नाम। चरन गुरु ध्याय रहूँ निहकाम ॥ ३ ॥	नित्याहं गुरुनाम स्मरामि। निष्कामेन गुरुचरणौ ध्यायामि ॥ ३ ॥
चरन में प्रीति बढ़ाय रहूँ। नित्त नई उमँग जगाय रहूँ ॥ ४ ॥	चरणयोः प्रीतिं वर्धे। नित्यं नवोत्साहं जागर्मि ॥ ४ ॥
धार गुरु चरनन में विश्वास। जगत की त्यागूँ सब ही आस ॥ ५ ॥	गुरुचरणयोः विश्वासं धार्य। जगतः सर्वाशां त्यजामि ॥ ५ ॥
भेद गुरु दीना मोहि बताय। शब्द में राखूँ सुरत लगाय ॥ ६ ॥	गुरु: मां भेदं बोधितवन्तः। शब्दे सुरतं युनज्मि ॥ ६ ॥
मेहर गुरु जोत रूप झाँकूँ । गगन चढ़ गुरु मूरत ताकूँ ॥ ७ ॥	गुरुकृपया निरूपयामि ज्योतिरूपम्। गगनमारूह्य गुरुस्वरूपं पश्यामि ॥ ७ ॥
दसम दर झाँकूँ पाट खुलाय। महासुन चढूँ गुरू सँग धाय ॥ ८ ॥	पाटमुद्घाट्य निरूपयामि दशद्वारम्। गुरुणा सह महासुन्नमारोहयामि ॥ ८ ॥
गुफा धुन सुनी बाँसुरी सार। अमरपुर दरशन पुरुष निहार ॥ ९ ॥	गुहायां श्रुता वेणोरुत्तमध्वनिः। अमरपुरमवलोकयन् पुरुषस्य दर्शनं कृतम्॥ ९॥
अलख और अगम के पार ठिकान। धरूँ राधास्वामी चरनन ध्यान ॥ १० ॥	अलखागमयो: पारं स्थाने। राधास्वामीचरणयोः ध्यानं धारयामि ॥ १० ॥
गाऊँ मैं आरत प्रेम भरी। चरन राधास्वामी पकड़ धरी ॥ ११ ॥	गायाम्यहं प्रेमपूर्णा आरतिम्। राधास्वामीचरणौ गृहीतौ ॥ ११ ॥
उमँग कर राधास्वामी गुन गाऊँ। मेहर गुरु परशादी पाऊँ ॥ १२ ॥	उत्साहेन गायामि राधास्वामीगुणान्। गुरुदयया प्रसादं प्राप्नोमि॥१२॥

॥ शब्द ६ ॥ चलो री सखी सुनो अगम सँदेसा	
हिंदी	संस्कृत
चलो री सखी सुनो अगम सँदेसा। छोड़ देव अब जगत अँदेसा ॥ १ ॥	एहि आलि श्रृणु अगमसन्देशम् । त्यजत्वद्य जगत: संशया: ॥१॥
जग बिच नित दुख सुख सहना री । जनम मरन से नहिं बचना री ॥ २ ॥	जगति नित्यं दुःखंसुखञ्च सहध्वे। जन्ममृत्युभ्यां मुक्तिः न सम्भवा ॥२॥
जग जीवन की प्रीति न साँची । चाल ढाल उन सब है काँची ॥ ३ ॥	अनृता जगद्प्रीतिः। आचरण: नास्त्युत्तमः ॥ ३ ॥
मन मग़रूर जगत में फंदे । धन और नामवरी के बंदे ॥ ४॥	मनस अभिमानी जगतिबद्धा: । धनप्रतिष्ठायाश्च पराधीनाः ॥४॥
परमारथ की सार न जानें । मान मनी घट माहिं बिराजे ॥ ५ ॥	परमार्थस्य सारं न जानन्ति । मानसम्मानयो: भावः घटे विराजति॥५॥
उनसे प्रीति करत दुख पावे । गुरु चरनन में चित्त न आवे ॥ ६ ॥	तैः सह प्रेम्णा दुखमाप्नोति । गुरुचरणयोः चित्तं न धारयति ॥६॥
जो तुम चाहो अपन उधारा । तज उन संग गहो गुरु द्वारा ॥ ७ ॥	स्वोद्धारं वाञ्छसि चेत्तर्हि। तेषां संगं त्यक्त्वा स्वीकरोतु गुरुसदनम् ॥७॥
भाग तुम्हारा नित नित जागे । काम किरोध मोह मद भागे ॥ ८ ॥	तव भाग्यं नित्यं जागृयाः। कामक्रोधमोहमदाश्च क्षयन्ति ॥८॥
परमारथ के बचन सम्हारो । मन से जग का भाव निकारो ॥९॥	परमार्थस्य वचनानि अवधार्यताम् मनसः जगद्भावं त्यजतु ॥९॥
करो प्रतीति प्रीति चरनन में । राधास्वामी नाम पुकारो छिन में ॥१०॥	प्रतीतिप्रीतिञ्च चरणयोः कुर्यात्। प्रतिक्षणं आह्वानं कुरु राधास्वामीनाम्नः॥१०॥
राधास्वामी रूप अनूप अपारा । चित्त बसाओ हिये धर प्यारा ॥११॥	राधास्वामीस्वरूपः अनूपारौ च वर्तते । चित्ते धारयतु प्रेम्णा हृदयेन॥११॥
छिन छिन झाँक रहो हिये अंतर । राधास्वामी नाम सुनो गुरु मंतर ॥ १२॥	प्रतिक्षणं हृदन्तसि निरूपयतु । राधास्वामीनाम गुरुमन्त्रं श्रूयात्॥१२॥
सुनो प्रेम से सतगुरु बानी । दया मेहर की परख निशानी ॥१३॥	प्रेम्णा सद्गुरुवाणीं श्रूयात् । आशीर्दयायाः पश्यतु संकेतम्॥१३॥
गुरु दयाल नित दया बिचारें । छिन छिन मन को आप सम्हारें ॥१४॥	नित्यं दयां कुर्यात् गुरुदयालुः। प्रतिक्षणं मनसः रक्षणं कुर्यात्॥१४॥

जगत भोग में रहे मलीना । ।माया का रहे सदा अधीना ॥१५॥	जगद्भोगेषु मलिनं भवति। सदैव मायाधीनोऽस्ति॥१५॥
सतसँग जल से साफ़ करावें । प्रेम दात दे चरन लगावें ॥ १६ ॥	सत्संगजलाद् शुद्धं कारयन्ति । प्रेम्ण: उपहारेण चरणयोः योजयन्ति॥१६॥
बिरह बिना यह काज न होई । मेहनत करे फल पावे सोई ॥१७॥	विरहं विना कार्योऽयम् न सम्भवम् । यो करोति श्रमं सैवाप्नोति फलम् ॥१७॥
या ते सतसँग सतगुरु धारो । बचन सुनो हिये माहिं बिचारो ॥१८॥	अतः सद्गुरो: सत्संगं धारयतु। प्रवचनं श्रृणु हृदये चिन्तयतु ॥१८॥
दिन दिन चरनन प्रीति बढ़ाओ। करम भरम सब दूर हटाओ ॥१६॥	प्रतिदिनं चरणयोः प्रीतिं वर्धेत। कर्मभ्रमान् सर्वान् अपसारयेत्॥१९॥
मोह जगत तज चित को जोड़ो। मन और सुरत शब्द सँग मोड़ो ॥ २०॥	जगत: मोहं त्यक्त्वा चित्तं युङ्ग्धि। आत्मामनश्च सुरतशब्देन सह प्रत्यावर्तयतु॥२०॥
ऐसे कोइ दिन करो कमाई । जग दुख सुख सब जायँ नसाई ॥२१॥	एवं प्रयासं कुरु केचित् दिवसपर्यन्तम्। सर्वे जगद्दुःखसुखाश्च नश्यन्ति ॥२१॥
सुमिरन ध्यान भजन रस पाई। भाग आपना लेव सराही ॥२२॥	स्मरणध्यानभजने च रसमाप्नुहि। स्वभाग्यं प्रशस्यात्॥२२॥
चित से यह उपदेश सम्हारो । राधास्वामी आरत नित प्रति धारो ।।२३।।	चित्तेन उपदेशोऽयं स्वीकरोतु। राधास्वामीआरतिं नित्यं धारयतु॥२३॥
गुन गाओ तुम राधास्वामी निस दिन। सरन सम्हार गिरो उन चरनन ॥२४॥	प्रतिदिनं राधास्वामीगुणगानं करोतु। शरणमागत्य चरणयोः पततु तेषाम्॥२४॥
राधास्वामी सब विधि करिहैं काज । सरन पड़े की राखें लाज ॥२५॥	सर्वप्रकारेण राधास्वामीदयालुः कार्यं करिष्यन्ति । शरणागतस्य रक्षां करिष्यन्ति ॥२५॥

शब्द ७ भूल भरम में जग अटकाना	
हिंदी	संस्कृत
भूल भरम में जग अटकाना। दूर दूर घर से भटकाना ॥ १ ॥	विस्मरणभ्रमेषु भवति जगतः विरामणम्। गृहाद्दूरं दूरं भवति मार्गाद् परिभ्रंशनम्॥१॥
जल पखान पूजन ठहराया। कोइ कोइ जिव विद्या भरमाया ॥ २ ॥	जलपाषाणयोः पूजां निर्धारितम्। यो कोऽपि जीव: विद्यया भ्रमित:॥२॥
निज घर का कोइ खोज न करता। जीव काज का सोच न धरता ॥ ३ ॥	न कोऽप्यन्वेषयति स्वगृहम्। न चिन्तयति आत्मन: प्रयोजनम् ॥३॥
निज घर भेद बतावें संता । पीव मिलन का लखावें पंथा ॥ ४ ॥	संतपुरुषाः स्वगृहस्य भेदं निर्दिशन्ति। प्रियमिलनस्य मार्गं बोधयन्ति ॥४॥
उनका बचन न कोई माने । काल जाल में रहे भुलाने ॥ ५ ॥	न कोऽप्यनुसरति तेषां वचनम्। कालपाशे विस्मरन्ति ॥५॥
मेरा जागा भाग सुहावन । संत चरन परतीत दिलावन ॥ ६ ॥	मम शोभामयं भाग्यं जागृतम् । संतचरणयोः प्रतीतिं ददाति ॥६॥
अचरज बचन सुने जब काना। उमँग बढ़ी और प्रीति समाना ॥ ७ ॥	यदा श्रवणे आगतानि अद्भुतवचनानि। उत्साह: संवर्धितः प्रीतिश्च समागता॥७॥
प्रीति सहित करता सतसंगा । धारा हिये में सतगुरु रंगा ॥ ८ ॥	प्रेम्णा करोमि सत्संगम् । हृदये सद्गुरुरंगं धृतम्॥८॥

॥ शब्द ८ ॥ देख जग का ब्योहार असार	
हिंदी	संस्कृत
देख जग का ब्योहार असार। करत रहा मन में नित्त बिचार ॥ १ ॥	जगदसत्यं व्यवहारं पश्य। मनसि नित्यं विचारयामि ॥ १ ॥
कौन घर से यह जिव आया। कौन याहि जग में भरमाया ॥ २ ॥	कस्माद् गृहादागतः जीवोऽयम्। कः अमुं जगदि भ्राम्यति ॥ २ ॥
छोड़ जग फिर कहाँ जावेगा। करम का फल कहाँ पावेगा ॥ ३ ॥	जगद् त्यक्त्वा पुनः कुत्र गमिष्यति। कर्मणां फलं कुत्र प्राप्स्यति ॥ ३ ॥
कौन है प्रेरक घट घट में। रहा छिप दीखे नहिं पट में ॥ ४ ॥	प्रतिघटं कोऽस्ति प्रेरकः। गुप्तमस्ति न दृश्यते यवनिकायाम् ॥ ४ ॥
कौन बिधि होय मालिक राज़ी। कौन बिधि मन इंद्री साधी ॥ ५ ॥	केन विधिना प्रभुः प्रसन्नः भविष्यन्ति। केन विधिना मनसः इन्द्रियाणाञ्च निग्रहं भवेत्॥५॥
खोज मैं कीना बहु भाँती। न आई मन को कहीं शांती ॥ ६ ॥	अनेकप्रकारेण मयान्वेषितः। मनसा न प्राप्ता शान्तिः कुत्रापि ॥ ६ ॥
भरम में फँस रहे पंडित भेष। बाँध रहे सब मिल पिछली टेक ॥ ७ ॥	पंडितपाषिण्डाः भ्रमेषु संसक्ताः। सर्वे मिलित्वा पुरापरम्पराः अनुसरन्ति ॥ ७ ॥
कोइ कोइ बिद्या में भरमान। करत पुरुषारथ आपा ठान ॥ ८ ॥	यो कोऽपि विद्यायां भ्रमति। स्वबले प्रयत्नं कुर्वन्ति ॥ ८ ॥
न जानें को है निज करतार। रूप अपने का करत बिचार ॥ ९ ॥	न जानन्ति कोऽस्ति स्वरचयिता। स्वरूपस्य विषये विचारयन्ति ॥ ९॥
खोज उसका भी कुछ नहिं कीन। धारना पिंड रिदे में कीन ॥ १० ॥	न किंचिदपि तस्यान्वेषणं कृतम्। धारणा पिण्डहृदयौ कृता ॥ १० ॥
रहे अस मन आकाश समाय। पता निज घर का कोइ नहिं पाय ॥ ११ ॥	एवं मनाकाशैव संनिविशन्ति। संकेतं स्वगृहस्य कोऽपि नाप्नोति ॥ ११ ॥
हुआ मन मेरा अधिक उदास। न आया उन बचनन विश्वास ॥ १२ ॥	मम मनः खिन्नः जातोऽधिकः। तेषां वचनेषु न जातं विश्वासम् ॥ १२ ॥
भाग से प्रेमी जन मिले आय। पता गुरु संगत दीन बताय ॥ १३ ॥	भाग्यादाप्ताः प्रेमीजनाः। गुरुसंगतेः परिचयः कृतवन्तः ॥ १३ ॥
उमँग कर सतसँग में आया। भेद निज घर का वहाँ पाया ॥१४॥	उत्साहेनागतः सत्संगे। तत्र प्राप्तं निजगृहस्यभेदम् ॥१४॥

सुरत और शब्द जोग की रीत। लखी और मन में भई परतीत॥१५॥	सुरतशब्दयो: योगस्य रीतिः। अपश्यत् जाता मनसि प्रतीतिश्च ॥१५॥
प्रेम सँग करता नित अभ्यास। देखता घट में परम बिलास ॥१६॥	नित्यं प्रेम्णाभ्यासं करोमि। घटे परमानन्दमनुभवामि ॥१६॥
सुरत सतपुर से यहाँ आई। काल ने जग में भरमाई ॥१७॥	सत्तपुरादात्मागतोऽत्र। कालेन जगदि भ्रमितः॥१७॥
शब्द की डोरी गह कर हाथ। उलट घर जावे सतगुरु साथ ॥१८॥	शब्दस्य सूत्रं गृहीत्वा हस्ते। प्रत्यागत्य सद्गुरु साकं गृहं गच्छति॥१८॥
होय कर जनम मरन से न्यार। अमर घर पावे सुक्ख अपार ॥१९॥	जन्ममृत्योः पृथकीभूय । अमरगृहे प्राप्नोत्यपारं सुखम् ॥१९॥
चरन में गुरु के धर परतीत। बढ़ावे छिन छिन घट में प्रीत ॥२०॥	गुरुचरणयोः धार्य प्रतीतिम्। प्रतिक्षणं घटे प्रीतिं वर्धयति॥२०॥
नाम राधास्वामी हिरदे धार। कमावे सुरत शब्द की कार ॥२१॥	राधास्वामीनाम हृदि धृत्वा। अर्जयति सुरतशब्दस्य क्रियाम् ॥२१॥
कोई दिन अस करनी बन आय। मगन होय सुरत चरन रस पाय ॥२२॥	किञ्चित् दिवसपर्यन्तं क्रियेयं भवेत्। मग्नं भूत्वात्मा चरणामृतं प्राप्स्यति ॥२२॥
चरन में विनय करूँ हर बार। लेव मन सूरत मोर सुधार ॥२३॥	चरणौ करोमि प्रार्थनां प्रतिपलम् । ममात्मामनश्च सुधारयन्तु॥२३॥
दूत सँग भरमत दिन और रात। उठावत नित नित नये उतपात ॥२४॥	दूतैः सह भ्रमामि दिवानिशम्। उत्थापयन्ति नित्यनवीनाः विप्लवा:॥२४॥
दया की दृष्टी मो पर डाल। काट दो मन माया का जाल ॥२५॥	मयि दयाया: दृष्टिपातेन। मायामनसः पाशं छिन्नन्तु॥२५॥
हुआ मेरे मन में निश्चय आज। करें मेरा राधास्वामी पूरन काज ॥२६॥	मम मनसि जातमद्य निश्चयम्। राधास्वामीदयालुः मम कार्यं पूर्णं करिष्यन्ति॥२६॥
जगाया राधास्वामी मेरा भाग। दिया मोहि चरन सरन अनुराग ॥२७॥	अजाग: राधास्वामीदयालु: मम भाग्यम् । मह्यमनुरागं दत्तं चरणशरणे॥२७॥
उमँग कर आरत उन गाऊँ। चरन राधास्वामी नित ध्याऊँ॥२८॥	उत्साहेन तेषामारतिं गायामि। चरणराधास्वामीदयालोः नित्यं ध्यायामि॥२८॥

॥ शब्द ९ ॥ सिंध से आई सूरत नार	
हिन्दी	संस्कृत
सिंध से आई सूरत नार । पिंड में आन फँसी नौ द्वार ॥ १ ॥	सिन्धोर्दागता सुरतनारी। पिण्डे ऽऽगत्य नवद्वारेषु बद्धीभूता ॥ १ ॥
भोग इंद्रियन सँग करत बिलास । जगत में कीन्हा सत विश्वास ॥ २ ॥	इन्द्रियैः सह करोति भोगविलासान्। जगति कृतं पूर्ण विश्वासम् ॥ २ ॥
दुक्ख सुख भोगत मन के माहिं । अहँग बुध धारी तन के माहिं ॥ ३ ॥	मनसः कारणादनुभवति दुःखसुखञ्च । कायामध्ये अहं बुद्धिः धृता ॥ ३ ॥
करम और धरम रही भरमाय । गुनन सँग निस दिन चक्कर खाय ॥ ४॥	कर्मधर्मैश्च भ्रमिता भवति । प्रतिदिनं गुणैः सह आकुली भवति ॥ ४
भूल गई यहाँ आय निज घर बार । न जाने को है सत करतार ॥ ५ ॥	अत्रागत्य विस्मृतं निजगृहम्। न जानाति कोऽस्ति सतकर्ता ॥ ५ ॥
पूजते किरतम देव अनित्त । भरमते जग बिच धर कर चित्त ॥ ६ ॥	अनित्य कृत्रिमदेवानां पूजां कुर्वन्ति । भ्रमन्ति जगति चित्तं संलिप्य ॥ ६ ॥
भेष और पंडित आप भुलाय । दिया सब जीवन को भरमाय ॥ ७ ॥	पाषण्डीपण्डिताश्च भ्रमिताः सन्ति । सर्वेषां जीवानां मस्तकं भ्रमन्ति ॥ ७ ॥
संत सतगुरु बिन नहीं उबार । दयाल घर वही पहुँचावनहार ॥ ८ ॥	संतसद्गुरुं विना न भविष्यत्युद्धारम् । तैव प्रेषयन्ति दयालोः गृहम् ॥ ८ ॥
भाग बढ़ हम सबका जागा । सूत राधास्वामी चरनन लागा ॥ ९ ॥	अस्माकं भाग्यानि अति जागृतानि । राधास्वामीचरणयोः दृढ़सम्बन्धं जातम्॥ ९ ॥
जुड़ा राधास्वामी संगत से नात । बचन सुन मन बुधि पाई शांत ॥१०॥	राधास्वामीसंगत्या जातः सम्बन्धः । प्रवचनैः मनः बुद्धिश्च शान्तौ जातौ॥१०॥
संत मत महिमा जान पड़ी । सुरत गुरु चरनन आन धरी ॥११॥	संतमतस्य महिमा ज्ञाता। आत्मा गुरुचरणौ पतितः ॥ ११ ॥
शब्द का लिया उपदेश सम्हार । सुरत मन झाँकत मोक्ष दुआर ॥१२॥	शब्दस्योपदेशः संरक्षितः । आत्मामनसी निरुपयतः मोक्षद्वारम् ॥
दया राधास्वामी लेकर संग । करम और भरम किये सब भंग ॥१३॥	राधास्वामी दयया सार्धम् । कर्मभ्रमा: सर्वे छिन्नाः ॥ १३ ॥
बरत और तीरथ दिये उड़ाय । मोह जग मन से दिया हटाय ॥१४॥	व्रततीर्था: उच्छिन्नाः । मनसा जगद्द्मोहः त्यक्तः ॥१४॥
प्रीति गुरु चरनन नित्त बढ़ाय । सुरत मन घट में अधर चढ़ाय ॥१५॥	गुरुचरणयोः नित्यप्रीतिः वर्धिता । घटे आत्मामनसि च अधरमारोहतौ ॥१५॥
सहसदल देखा जोत उजार । गगन चढ़ निरखा सूर अकार ॥१६॥	सहस्रदले ऽपश्यत ज्योतेः प्रकाशम्। गगनमारुह्य सूर्य रूपमपश्यम् ॥१६॥
सुन्न चढ़ लखी चाँदनी सार ।	सुन्न पदे आरुह्य ज्योत्स्नायाः सारमपश्यम्।

भँवर में सेत सूर उजियार ॥१७॥	भँवरगुहायामस्ति श्वेतसूर्यस्य प्रकाशः ॥१७॥
अमरपुर कोटन सूर उजास । पाइया सतगुरु चरन निवास ॥१८॥	कोटिसूर्याणां प्रकाशमस्ति अमरपुरे। सद्गुरुचरणयोः वासं प्राप्तम् ॥१८॥
अलख और अगम का देख बिलास । अनामी धाम लखा परकास ॥१९॥	अलखागमयोः विलासं दृष्ट्वा । अनामीपदस्य प्रकाशमपश्यम् ॥१९॥
अजब गति राधास्वामी निरख निहार। मिला अब राधास्वामी सरन अधार।२०।	राधास्वामीदयालो: अद्भुतगतिमवलोक्य । अधुना राधास्वामीशरणाश्रयं प्राप्तम् ॥२०॥
आरती करती उमँग जगाय । चरन राधास्वामी हिये बसाय २१॥	उत्साहेन करोम्यारतिम्। राधास्वामीचरणौ हृदये धार्य ॥२१॥

॥ शब्द १० ॥ उमर सारी बीत गई जग में	
हिन्दी	संस्कृत
उमर सारी बीत गई जग में। भरम मेरे धस रहे रग रग में ॥ १ ॥	गतं वयः जगति । भ्रमाः अन्तर्निविशन्ति प्रत्यङ्गम् ॥१॥
ज्ञान मत धार रहा कोइ काल' । शांति नहिं पाई रहा बेहाल ॥ २ ॥	ज्ञानमतः धृतः कश्चित् कालपर्यन्तम् । नाधिगता शान्तिः व्याकुलः भूतः ॥२॥
भाग से गुरु भक्त मिलिया आय । संत मत भेद दिया दरसाय ॥ ३ ॥	भाग्यादाप्तः गुरुभक्तः । संतमतस्य भेदं प्रकटितं तेन ॥३॥
समझ में आई सत मत रीत । चरन गुरु धारी हिये परतीत ॥ ४ ॥	ज्ञाता सतमतस्य रीतिः। हृदये गुरुचरणयोः प्रीतिः धृता ॥४॥
उमंग कर दरशन को धाया। देख सतसंगत हरखाया ॥ ५ ॥	उत्साहेन दर्शनाय अधावम्। सत्संगतिं दृष्ट्वा हर्षितः॥५॥
अजब गति राधास्वामी मत जानी । शब्द की महिमा मन मानी ॥ ६ ॥	अद्भुता गतिः ज्ञाता राधास्वामीमतस्य । शब्दस्य महिमा सम्यक् प्रतीता ॥६॥
करम और भरम किये सब दूर । जगत के सब मत देखे कूड़ ॥ ७ ॥	कर्मभ्रमा: सर्वे अपसरिताः। जगतः सर्वाणि मतानि अवस्कराणि॥७॥
शब्द बिन सब जग रहा अंधा । संत बिन को काटे फंदा ॥ ८ ॥	शब्दं विना सर्वं जगदन्धः । बिना संतपुरुषं कः छेत्स्यति पाशम् ॥८॥
भाग मोहि निरबल का जागा । चरन में गुरु के मन लागा ॥ ६ ॥	मम निर्बलस्य भाग्यं जागृतम्। गुरुचरणयोः मनः संसक्तः ॥९॥
सुरत और शब्द जुगत धारी । पिरेमी जन सँग की यारी ॥१०॥	आत्माशब्दयोश्च युक्तिः धृता । प्रियजनेन सह कृतं सौहृदम् ॥१०॥
हुआ मेरे मन अस विश्वासा । करें गुरु पूरन मम आसा ॥११॥	मम मनसि जातोऽयं विश्वासः। सद्गुरुः पूर्ण करिष्यन्ति ममाशाम्॥११॥
रहूँ नित गुरु चरनन दासा । चरन में राधास्वामी पाऊँ बासा ॥१२॥	गुरुचरणयोः दासः भवेयं नित्यम् । राधास्वामीचरणयोः वासं लभेय ॥१२॥

॥ शब्द ११ ॥ प्रेम घटा घट छाय रही	
हिंदी	संस्कृत
प्रेम घटा घट छाय रही ॥ टेक ॥	प्रेमघटाः आवृताः घटे ॥ टेक ॥
धुन झनकार शब्द की धारा । अमृत रस बरसाय रही ॥१॥	ध्वनेः झंकारः शब्दस्यधारा च । अमृतवृष्टिं करोति ॥१॥
भींज रही सुत नार रँगीली । रसक रसक गुन गाय रही ॥२॥	क्लिद्यति आत्मारूप रसिका नारी। प्रेम्णा प्रमत्ता गायति गुणान् ॥२॥
प्रिय राधास्वामी चरन धर हिये में । उमँग उमँग लिपटाय रही ॥३॥	प्रियराधास्वामी चरणौ हृदये धार्य। अत्युत्साहेन लेपयति ॥३॥
अधर चढ़त सुन धुन सुत प्यारी । सुन्न सरोवर न्हाय रही॥४॥	ध्वनिं श्रुत्वा सुरतप्रिया अधरमारोहति। सुन्नसरोवरे स्नाति ॥४॥
हंसन संग नवीन बिलासा । निरख निरख मगनाय रही ॥५॥	हंसैः साकं नवविलासः । पश्य पश्य प्रसन्ना जाता ॥५॥
सुनत अधर में मधुर धुन मुरली । भँवरगुफा पर छाय रही ॥६॥	श्रृणोत्यधरं वेणोः मधुरध्वनिम्। भँवरगुहायां स्थिरा भवति ॥६॥
सत्तपुरुष का दरशन करके। प्रेम नवीन जगाय रही ॥७॥	सत्तपुरुषस्य दर्शनं प्राप्य। नवप्रेम जागृतं करोति ॥७॥
अलख अगम का दरस निहारत। अचरज भाग सराह रही ॥८॥	अलखागमयोः दर्शनं कृत्वा। अद्भुदभाग्यं प्रशंसति ॥८॥
राधास्वामी चरन सिहारत। हरख हरख मुसकाय रही ॥९॥	राधास्वामीदयालोः चरणौ प्रगृह्णति। अतिहर्षिता भूत्वा विहसिता ॥९॥

॥ शब्द १२ ॥ मेरा जिया न माने सजनी	
हिंदी	संस्कृत
मेरा जिया न माने सजनी। जाऊँगी गुरु दरबार ॥ १ ॥	आलि न मन्यते मम हृदयः। गमिष्यामि गुरुसदनम् ॥ १ ॥
सेवा करूँ बचन उर धारूँ। नित्त बढ़ाऊँ प्यार ॥ २ ॥	करोमि सेवां धारयामि वचनं हृदये। नित्यं वर्धयामि प्रेम ॥ २ ॥
गुरु छबि देख मगन हिये होती। मैं तो छिन छिन जाउँ बलिहार ॥ ३ ॥	गुरुस्वरूपं पश्य हृदये भवामि प्रसन्ना । अहन्तु समर्पयामि प्रतिक्षणम् ॥ ३ ॥
चरन सरन प्रीतम दृढ़ करती। वोही हैं सत करतार ॥ ४ ॥	प्रियस्य चरणशरणं करोमि दृढ़म्। तैव सन्ति सतकर्त्ता ॥ ४ ॥
सुरत शब्द का जोग कमाऊँ। भौसागर उतरूँ पार ॥ ५ ॥	योगमर्जियामि सुरतशब्दस्य। तरामि भवसागरात् ॥ ५ ॥
प्रीति प्रतीति बढ़ी अब हिये में। काल करम रहे हार ॥ ६ ॥	अधुना हृदये वर्धिते प्रीतिप्रतीतिश्च। कालकर्माणि पराजितानि ॥ ६ ॥
जग जीवन को आख सुनाऊँ। मेरे गुरु का करो दीदार ॥ ७ ॥	जगजीवनं आख्यामि। मम गुरोः कुरु दर्शनम् ॥ ७ ॥
तीरथ मूरत ब्रत आचारा। त्यागो भोग विकार ॥ ८ ॥	तीर्थमूर्तिपूजाव्रताचारा:। सर्वे भोगविकारान् त्यजतु ॥ ८ ॥
प्रीति प्रतीति धरो चरनन में। जो चाहो उद्धार ॥ ९॥	धारयतु प्रीतिप्रतीतिञ्च चरणयोः। वाञ्छसि चेतोद्धारम् ॥ ९॥
राधास्वामी नाम पुकारो। छोड़ो जगत लबार ॥ १० ॥	राधास्वामीनाम आह्वयतु। त्यजतु असत्यजगत् ॥ १० ॥
आस भरोस धरो उन चरनन। घट में देख बहार ॥ ११ ॥	आशाविश्वासञ्च धारयतु तेषां चरणयोः। हृदये पश्यतु शोभाम् ॥ ११ ॥

॥ शब्द १३ ॥ मनुआँ सिपाही चरनन लागा	
हिंदी	संस्कृत
मनुआँ सिपाही चरनन लागा। घट परतीत पकाय ॥ १ ॥	रक्षक: मनः चरणयोः संसक्तः। घटे प्रतीतिं संपच्य ॥ १ ॥
नाम तेग़ धारत कर अपने। काल का सीस कटाय ॥ २ ॥	नाम्नः कृपाणं धारयति स्व करे। कालं शिरोच्छिन्नं कर्तुं ॥ २ ॥
परम पुरुष राधास्वामी बल हिये धर। चोरन मार हटाय ॥ ३ ॥	राधास्वामीपरमपुरुषाणां बलं हृदये धार्य। चौरा: हत्वा अपसारिताः ॥ ३ ॥
इन्द्रियन सँग नित करत लड़ाई। ठगियन दूर पराय ॥ ४ ॥	नित्यं युद्धं करोति इन्द्रियैः सह। प्रवञ्चकान् दूरं धावयति ॥ ४ ॥
करम भरम सब दूर निकारे। भक्ती लीन्ह जगाय ॥ ५ ॥	कर्मभ्रमाश्च दूरं निष्कासिताः। भक्तिः जागृताः ॥ ५ ॥
सुरत शब्द गुरु मत घट धारा। मन मत दूर बहाय ॥ ६ ॥	सद्गुरोः मतं सुरतशब्दं घटे धृतम्। मनमतं दूरं प्रवाहितम् ॥ ६ ॥
काल मते में जगत फँसाना। करम धरम अटकाय ॥ ७ ॥	कालमते जगद्बद्धः। कर्मधर्मेषु गत्यवरुद्धाः ॥ ७ ॥
कुमत अधीन जीव सब भरमत। नित चौरासी धाय ॥ ८ ॥	कुमत्याधीना: सर्वेजीवा: भ्रमन्ति। नित्यं चतुर्शीत्यां पतन्ति ॥ ८ ॥
मेरा भाग जगा गुरु किरपा। सूरत शब्द लगाय ॥ ९ ॥	गुरुकृपया मम भाग्यं जागृतम्। सुरतशब्दं युक्त्वा ॥ ९॥

॥ शब्द १४ ॥ मेरे लगी प्रेम की चोट	
हिंदी	संस्कृत
मेरे लगी प्रेम की चोट । बिकल मन अति घबरावे ॥ कोइ कछू कहे समझाय । चित्त में नेक न आवे ॥ १ ॥	मम जातः प्रेम्ण: प्रहार: । व्याकुलमन: अत्युद्विग्न: भवति ॥ कोऽपि अवबोधयति किमपि । चित्ते नाल्पमपि आगच्छति ॥१॥
मात पिता बहु कहें। बहन और भाई भतीजे ॥ मूरख हैं सब लोग । प्रीति उन दिन दिन छीजें ॥ २ ॥	पितरौ अनेकशः कथयतः । भगिनी भ्राता: भ्रातृजाः च॥ सर्वे सन्ति मूर्खाः। तान् प्रति न्यूना जायते प्रीतिः प्रतिदिनम्॥२॥
मैं सतगुरु बल धार । चरन में प्रीति बढ़ाता ॥ जग से होय निरास । रूप गुरु निस दिन ध्याता ॥ ३ ॥	अहं सद्गुरुबलं धार्य । चरणयोः वर्धे प्रीतिम्॥ जगतः भूय निराश:। प्रतिदिनं ध्यायामि गुरुस्वरूपम्॥३॥
दया करी गुरु देव । सुरत अब धुन में लागी ॥ घट में देख बिलास । सरन दृढ़ कर पागी ॥ ४ ॥	कृता दया गुरुदेवः । आत्माधुना ध्वनौ संलग्नः॥ घटे विलासं पश्य। शरणे दृढः लीनोऽहम् ॥४॥
राधास्वामी दीन दयाल दया कर मोहि अपनाया ॥ करम भरम को काट । त्रिकुटी पार पहुँचाया ॥ ५ ॥	राधास्वामीदीनदयालुः। दयां कृत्य माम् स्वीकृतवन्तः। कर्मभ्रमान् च छिन्नयित्वा ॥ त्रिकुटीपदात् पारं कृतवन्तः ॥५॥
सुन्न महासुन होय । गई सुत सोहँग पासा ॥ आगे सत पद परस । अलख लख अगम निवासा ॥ ६ ॥	सुन्नमहासुन्नमतिक्रम्य । आत्मा गतः सोहंग समीपम् ॥ अग्रे सतपदं संस्पृश्य । अलखपदं पश्य अगमपदे वासं कृतम् ॥६॥
पहुँची राधास्वामी धाम । मेहर से सतगुरु केरी ॥ दरशन राधास्वामी पाय । दया उन छिन छिन हेरी ॥ ७ ॥	राधास्वामीधामं(धाम) गतः । सद्गुरुकृपया ॥ राधास्वामीदयालोः दर्शनं प्राप्य । प्रतिक्षणं तेषां दयामपश्यत् ॥७॥

पेज 357-358 ॥ शब्द १५ ॥ दास हुआ चरनन में लौलीन	
हिंदी	संस्कृत
दास हुआ चरनन में लौलीन । ध्यान गुरु लाय ताड़ी ॥ १ ॥	दासः चरणौ लयलीनः भूतः गुरोः ध्यानं कृत्वा प्रमत्तः प्रेम्णारसेन।। १।।
जगत की दई बासना त्याग । देख घट उजियारी ॥ २ ॥	जगद् वासनाः त्यक्ताः। घटे प्रकाशं पश्य।।२।।
सुरत मन मगन होत सुन सुन । शब्द धुन झनकारी ॥ ३ ॥	श्रावं श्रावं आत्मामनश्च निमग्नौ। शब्दध्वनेः झंकारम्।।३।।
काम और क्रोध गये घर छोड़ । हुआ तन सुखियारी ॥ ४ ॥	कामक्रोधौ गृहं त्यक्तौ। रक्तिमा काया।।४।।
करम और भरम हुए सब दूर । हुई जग से न्यारी ॥ ५ ॥	कर्मभ्रमाश्च दूरं जाताः। जगतः पृथग्भूतः।।५।।
काल और करम रहे सब हार । थकी माया नारी ॥ ६ ॥	कालकर्माणि सर्वे पराजिताः। मायानारी श्रान्ता।।६।।
सुरत मन हो गये अब निरबंध। चढ़त नभ के पारी ॥ ७ ॥	आत्मामनश्च निर्बन्धौ स्तः अधुना। आरोहतः नभसः पारम्।।७।।
निरख गुरु दरशन त्रिकुटी माहिं । चरन पर जाऊँ वारी ॥ ८ ॥	त्रिकुटीमध्ये गुरुदर्शनं कृत्य। चरणौ समर्पयामि।।८।।
सुन्न और महासुन्न के पार | सुनी बंसी प्यारी	सुन्नमहासुन्नञ्चतिक्रम्य। श्रुता वेणुमधुरा।।९।।
अमरपुर निरख पुरुष का रूप । अजब गत सुत धारी ॥ १० ॥	अमरपुरे पुरुष स्वरूपमवलोक्य। आत्माद्भुतगतिं धृतवान्।।१०।।
अधर चढ़ निरखा राधास्वामी धाम । मेहर उन करी भारी ॥११॥	अधरमारुह्य राधास्वामीधामं(धाम) अपश्यत्। आशीर्वृष्टिं कृता तैराधिका।।११।।
करूँ क्या अस्तुत उनकी गाय। चरन पर बलिहारी ॥१२॥	कथं करोमि तेषां स्तुतिगानम्। चरणयोः समर्पयामि।।१२।।

॥ शब्द १६ ॥ गुरु नैन रसीले निरखे	
हिंदी	संस्कृत
गुरु नैन रसीले निरखे। मेरे सिमट गये मन प्रान ॥१॥	सद्गुरोः रसमयनेत्रौ अवलोकितौ। मम मनःप्राणश्च संकुचितौ ॥१॥
पुरुष अंस मेरी निरमल सूरत। बसी काल घर आन ॥२॥	पुरुषस्यांशः मम निर्मलात्मा। आगत्य कालगृहे वसितः॥२॥
बिना दया सतगुरु पूरे के। कस उलटे घर जान ॥३॥	पूर्णसद्गुरोः दयां विना। कथं प्रत्यावर्तिष्यति गृहम्॥३॥
राधास्वामी प्यारे मिले परम गुरु। उन दीना पता निशान ॥४॥	परमगुरुः राधास्वामीप्रियः प्राप्तवन्तः। ते दत्तवन्तः सङ्केतम्॥४॥
दृष्टि करी भरपूर मेहर की। पहुँची अधर ठिकान ॥५॥	आशीर्वृष्टिः कृता तैरधिका। कृतमधरपदप्रापणम् ॥५॥

॥ शब्द १७ ॥ राधास्वामी सतगुरु पूरे	
हिंदी	संस्कृत
राधास्वामी सतगुरु पूरे । मैं आया सरन हज़ूरे ॥ १ ॥	राधास्वामीसद्गुरुः पूर्णः । आगतोऽहं तेषां चरणशरणम् ॥१॥
मैं औगुनहारा भारी तुम बख़्शो' भूल हमारी ॥ २ ॥	अहमवगुणानामागारः क्षम्यन्तु त्वमस्माकं त्रुटयः ॥२॥
मैं जग में बहु भरमाया । कहीं घर का पता न पाया ॥ ३ ॥	जगत्यहं बहुभ्रमित :। कुत्रापि गृहस्य संकेतं न प्राप्तम् ॥३॥
तुम कीनी दात अपारी । निज घर का भेद दिया री ॥ ४ ॥	त्वया कृतापारा दया । स्वगृहस्य भेदं दत्तवन्तः॥४॥
सुत शब्द जुगत समझाई। सुमिरन और ध्यान बताई ॥५॥	आत्माशब्दस्य च युक्तिः बोधिता। स्मरणं ध्यानं च बोधितवन्तौ॥५॥
जो करे कमाई हित से। और बचन सुने जो चित से ॥ ६ ॥	प्रेम्णा यो करोत्यभ्यासम् । वचनं श्रृणोति यो चित्तेन॥६॥
वह छिन छिन घट में धावे। और शब्द अमीरस पावे ॥ ७ ॥	प्रतिक्षणं सः धावति घटे। शब्दामृतरसञ्च पिबति॥७॥
गुरु मेरा भाग जगाया । मन सूरत शब्द लगाया ॥ ८ ॥	सद्गुरुः मम भाग्यं जागृतवन्तः। आत्मामनश्च शब्दे संसक्तौ॥८॥
अब मन में रहूँ मगन मैं। शब्दारस पिऊँ अपन में ॥९॥	अधुना मनसि प्रसन्नोऽस्मि। शब्दपानं करोम्य़न्तसि॥९॥
गुरु बचन लगे मोहि प्यारे । सुन सुन हुआ जग से न्यारे ॥१०॥	गुरुवचनानि प्रतीतानि मां प्रियाणि। श्रावं श्रावं जगदः पृथग् अभवम्॥१०॥
मेरे औगुन चित न बिचारे । गुरु कीनी दात अपारे ॥११॥	चित्ते न विचारिताः ममावगुणाः। सद्गुरुः कृतापारा दया ॥११॥
सतसंगत में जब रलिया । गुरु प्रेमी जन सँग मिलिया ॥१२॥	यदागतं सत्संगतौ । गुरुप्रियजनेन सह मिलितः॥१२॥
गुरु भक्ती रीत पिछानी । निश्चय कर मन में मानी ॥१३॥	गुरोः भक्तिरीतिः ज्ञाता । निश्चयं कृत्वा मनसि अमन्वि ॥१३॥
सोई जन है बड़भागी । जिन हिरदे भक्ती जागी ॥१४॥	सैव जनः सौभाग्यशालिनः । यस्य हृदये जागृता भक्तिः ॥१४॥

राधास्वामी से करूँ पुकारी । मोहि दीजे भक्ति करारी ॥१५॥	राधास्वामीदयालुं करोम्याह्वानम् । मह्यं दातव्या अगाधभक्तिः ॥१५॥
नित सुरत शब्द में भरना । चित रहे तुम्हारे चरना ॥१६॥	नित्यं सुरतशब्दे प्रवेशं करणीयम् । चित्तं भवेत् तव चरणयोः संलग्नम्॥१६॥
माया से लेव बचाई। राधास्वामी नाम धियाई ॥१७॥	मायायाः रक्षाकरणीया । राधास्वामीनाम स्मरामि ॥१७॥
गुरु आरत निस दिन गाऊँ । राधास्वामी चरन समाऊँ ॥१८॥	प्रतिदिनं गायामि गुर्वारतिम्। राधास्वामीचरणयोः संविशामि ॥१८॥

॥शब्द १८॥ काहे को डरपे मन नादान	
हिंदी	संस्कृत
काहे को डरपे मन नादान । रहो छिप कँवल कली में आन ॥ १ ॥	बिभेषि कथं अबोधः मनः कमलकलिकायां तिरोभवसि ॥१॥
पकड़ ले गुरु की ओट सम्हार । करम और काल रहें तब हार ॥ २ ॥	गुरोः शरणं प्रगृह्य धारयतु । तदा पराजिष्यन्ति कालकर्माणि ॥२॥
शब्द का मारग ले कर सार । धुनन की सुन घट में झनकार ॥ ३ ॥	साररूप शब्दस्य मार्गं गृह्य। घटे श्रृणु ध्वनीनां झंकाराः ॥३॥
खेल रहा बालक सम जग माहिं । जकड़ कर पकड़त नहिं गुरु बाँह ॥ ४ ॥	बालेव क्रीडति जगति। दार्ढ्येन न गृहणाति गुरोः भुजाम्॥४॥
इसी से होत भरम भारी । गुरू का बल हिये नहिं धारी ॥ ५ ॥	अनेन भवति महाभ्रमः। गुरोः बलः न धृतः हृदि॥५॥
चेत कर करो आज सतसंग । चित्त में धारो ढंग उमंग ॥ ६ ॥	चैतन्यीभूय कुरु अद्य सत्संगम्। चित्ते धारयतु उत्साहस्य विधिम्॥६॥
बसाओ घट में राधास्वामी प्रीत । चलो निज घर को भौजल जीत ॥ ७ ॥	धारयतु घटे राधास्वामीप्रीतिम्। गच्छतु निजगृहं भवसागरं जित्वा॥७॥

॥शब्द १९॥ पूरन भक्ति देव गुरु दाता	
हिंदी	संस्कृत
पूरन भक्ति देव गुरु दाता । सुरत रहे तुम चरनन साथा ॥ १ ॥	सतगुरुदाता देहि पूर्णभक्तिम् । वसेदात्मा तव चरणाभ्यम् सार्धम् ॥ १ ॥
मन बिच प्रीति बढ़ाओ दिन दिन । गुन गाऊँ राधास्वामी छिन छिन ॥२॥	प्रतिदिनं मनसि वधर्येयुः प्रीतिम् । गायामि गुणान् प्रतिदिनं राधास्वामीदयालोः ॥२॥
जग बिच दुख पाये बहुतेरे । हार पड़ा होय चरनन चेरे ॥ ३ ॥	जगति प्राप्तान्यनेकानि दुःखानि पराजितं भूत्वा चरणदासः जातः ॥ ३ ॥
काल करम मोहि नित भरमावत । मन इंद्री भोगन सँग धावत ॥ ४ ॥	कालकर्माणि च नित्यभ्रमन्ति माम्। मनः इन्द्रियाणां भोगै: सह धावति ॥ ४ ॥
तुम बिन और न रक्षक मेरा । लीजे मोहि बचाय सबेरा ॥ ५ ॥	न त्वां विना अन्यः कोऽपि रक्षकः मम। त्राहि माम् शीघ्रम् ॥ ५ ॥
भेद तुम्हारा अगम अपारा । सुरत शब्द मारग अति सारा ॥ ६ ॥	अगमापारश्च तव मर्मः । सुरतशब्दस्य मार्गातिगंभीरः ॥ ६ ॥
सो किरपा कर दिया मोहि दाना । घट में पाया नाम निशाना ॥ ७ ॥	कृपां कृत्वा मह्यं तस्य दानं दत्तवन्तः। घटे प्राप्त: नाम्नः संकेतः ॥ ७ ॥
अब यह बिनय सुनो मेरे साईं । राखो मन चरनन की छाईं ॥ ८ ॥	अधुनायं प्रार्थनां श्रृणुयु: मम स्वामी। मम मनः चरणाश्रयं दद्युः ॥ ८ ॥
कर जल्दी खोलो घट द्वारा । देखूँ नभ में जोत उजारा ॥ ९ ॥	शीघ्रमनावर्तेयुः घटद्वारम्। पश्यामि ज्योतेः प्रकाशम् नभसि ॥ ९ ॥
बंकनाल धस त्रिकुटी फोड़ूँ । काल करम का बल सब तोड़ूँ ॥१०॥	अन्तनिर्विश्य बंकनालं स्फोटयामि त्रिकुटीपदम्। कालकर्मणः सर्वं बलं त्रुटामि ॥१०॥
सुन्न सिखर चढ़ तन मन वारूँ । चन्द्र चाँदनी चौक निहारूँ ॥११॥	सुन्नशिखरमारुह्य तनुमनसी समर्पयामि। इन्दुः ज्योत्स्नायाः प्रांगणं पश्यामि ॥११॥
गुरु बल जाउँ महासुन पारा । सुनूँ गुफा धुन सोहँग सारा ॥१२॥	गुरुबलं धार्य महासुन्नं पारयामि। गुहायां सोहंगध्वनेः सारं श्रृणोमि ॥१२॥
सतपुर दरस पुरुष का पाऊँ । अलख अगम के पार चढ़ाऊँ ॥१३॥	सत्तपुरे पुरुषस्य दर्शनं प्राप्नोमि। अलखागमयोः पारं आरोहयामि ॥१३॥
राधास्वामी चरन निहारूँ । उमँग सहित उन आरत धारूँ ॥१४॥	राधास्वामीदयालोः चरणौ निरीक्षयामि। उत्साहेन तेषामारतिं धारयामि ॥१४॥

पूरन सरन प्रसादी पाऊँ । प्रेम सहित नित चरन धियाऊँ ॥१५॥	पूर्णशरणं प्रसादञ्च प्राप्नोमि। प्रेम्णा नित्यचरणौ ध्यायामि ॥१५॥
उलट जगत में फिर चल आऊँ। जीवन को निज नाम सुनाऊँ ॥१६॥	प्रत्यावर्तयामि पुनः जगति। जीवान् श्रावयामि निजनाम ॥१६॥
चरन ओट ले राधास्वामी गाओ । भाग आपना आज जगाओ ॥१७॥	चरणशरणं गृहय राधास्वामीनाम गायतु। अद्य जागर्तु स्वभाग्यम् ॥१७॥
फिर औसर ऐसा नहिं पाओ । चौरासी का फेर बचाओ ॥१८॥	पुनः न प्राप्स्यसि ईदृगवसरम्। चतुरशीत्याः चक्रमपनयतु ॥१८॥
जो कहना नहिं मानो मेरा । जन्म जन्म दुख सहो घनेरा ॥१९॥	मम कथनं न मन्यते चेत्तर्हि। प्रतिजन्म बहुदुःखं प्राप्स्यसि ॥१९॥
या से आजहि काज बनाओ । राधास्वामी २ छिन छिन गाओ ॥२०॥	अत अद्यैव पूर्णं कार्यं करोतु । प्रतिपलं राधास्वामीगानं करोतु ॥२०॥
बड़े भाग पाई राधास्वामी सरना । भौसागर से सहजहि तरना ॥२१॥	सौभाग्याद् प्राप्तं राधास्वामी शरणम् । भवसागरात् सहजे तरणम् ॥२१॥

॥शब्द २०॥ राधास्वामी चरनन आओ रे मना	
हिंदी	संस्कृत
राधास्वामी चरनन आओ रे मना । भाग अपना लेव जगाय रे मना ॥१॥	रे मन! आयाहि राधास्वामीचरणौ। रे मन! स्वभाग्यं जागृहि ॥१॥
तन मन धन सँग तुम लाओ रे मना। गुरु चरनन भेंट चढ़ाओ रे मना ॥२॥	रे मन! तनमनधनैः सह त्वमान्यतु । रे मन! गुरूचरणयोः कुरु समर्पणम् ॥२॥
अब काम क्रोध तज आओ रे मना। तब राधास्वामी किरपा पाओ रे मना॥३॥	रे मन! अधुना कामक्रोधौ त्यक्त्वा आगच्छ । रे मन! तदा राधास्वामीदयालोः कृपां लभस्व ॥३॥
सतसँग कर भाव बढ़ाओ रे मना । गुरु चरनन सुरत लगाओ रे मना ॥४॥	रे मन! सत्संगं कृत्वा श्रद्धां वर्धस्व । रे मन! गुरूचरणयोः आत्मानं युङ्ग्धि॥४॥
शब्दारस घट में पाओ रे मना । गुरु महिमा छिन छिन गाओ रे मना॥५॥	रे मन! घटे शब्दरसं लभस्व । रे मन! प्रतिक्षणं गुरूमहिमां गाय ॥५॥
वहाँ अनहद तूर बजाओ रे मना । दसवाँ दर सहज खुलाओ रे मना॥६॥	रे मन! तत्रानहदशब्दं नद। रे मन! दशद्वारं सहजे अनावर्तय ॥६॥
सुत खैंच अधर को चढ़ाओ रे मना । धुन मुरली बीन सुनाओ रे मना ॥७॥	रे मन! आत्मानं कर्षयित्वा अधरमारोहय । रे मन! वेणोरहितुण्डवाद्ययोः ध्वनिं श्रावय ॥७॥
वहाँ से भी कदम बढ़ाओ रे मना । राधास्वामी चरन समाओ रे मना ॥८॥	रे मन! तत्रत अपि पादं वर्धस्व । रे मन! राधास्वामीदयालोः चरणयोः संविश ॥८॥

॥शब्द २१॥ ऐसी चौपड़ खेलो जग में	
हिंदी	संस्कृत
ऐसी चौपड़ खेलो जग में। लाल होय पहुँचो गुरु पद में ॥ १ ॥	ईदृशी अक्षक्रीडां क्रीडतु जगति । जित्वा समायातु गुरुपदम् ॥१॥
माया काल से बाज़ी लाग । होय हुशियार जगत से भाग ॥ २ ॥	मायाकालाभ्यां च पणं कृत्य। प्रबुद्धं भूत्वा जगतः पलायतु ॥२॥
सुरत गोट चौपड़ में अटकी । बिन सतगुरु चौरासी भटकी ॥ ३ ॥	अक्षक्रीडायामवरुद्धः आत्माक्षः। सद्गुरुं विना चतुरशीत्यां भ्रमितः॥३॥
पूरे गुरु से मिल धर प्रीत । जुग बाँधो कर दृढ़ परतीत ॥४॥	पूर्णगुरुणा मिलित्वा धारयतु प्रीतिम्। युगलं बध्नातु दृढ़प्रतीतिं कृत्वा ॥४॥
प्रेम सहित उन सँग घर चलना। चोट न खाओ काल बल दलना ॥५॥	प्रेम्णा तैः सह गच्छतु गृहम् । मा सहतु प्रहारं कालबलं दाम्यतु ॥५॥
काल दूत जो बिघन करावें । मार कूट उन तुरत हटावें ॥ ६ ॥	कालदूताः ये विघ्नं कारयन्ति । मारयित्वा कुट्टयित्वा तान् सद्यं अपसारयन्ति ॥६॥
खेत जिताय चढ़ावें रंग । दूर करावें सब बदरंग ॥ ७ ॥	क्षेत्रं जाययित्वा रङ्गं आरोपयन्ति। अपसारयन्ति सर्वे कुरंङ्गाः ॥७॥
तीन धार के पासे डाले। सुखमन होय सुरत घर चाले ॥ ८ ॥	तिस्रधारानां अक्षाः पातिताः। सुषुम्नायां भूत्वा आत्मा गृहं गतः॥८॥
दाव पड़ा मेरा अबके भारी । सतगुरु मिल मोहि आप सम्हारी ॥९॥	बृहदवसरः प्राप्तः मयाधुना। सद्गुरुः प्राप्तः तैः संरक्षितः माम्॥९॥
ऐसा औसर फिर नहिं मिलही। जम को कूट पार घर चलहीं ॥१०॥	ईदगवसरः न पुनः प्राप्स्यति । यमं कुट्टयित्वा पारं कृत्य गृहं गच्छतु ॥१०॥
गुरु सँग जुग सीधा घर जावे। रस्ते में कोइ बिघन न आवे ॥११॥	गुरुणा सह युगलं गृहं गच्छति ऋजुम्। न कोऽपि विघ्नं आयाति मार्गे ॥११॥
गुरु पद परस लाल हो जावे । सतपुर जाय सेत पद पावे ॥१२॥	गुरुपदं संस्पर्श्य रक्तं भवति । सत्तपुरं गत्वा श्वेतपदं प्राप्नोति ॥१२॥
धुन मुरली और बीन सुनावे । सतगुरु चरन परस हरखावे ॥१३॥	वेणुरहितुणुवाद्ययोः ध्वनिं श्रावयति । सद्गुरुचरणौ संस्पर्श्य हर्षति ॥१३॥
अलख अगम घर निरख निहारे । धाम अनामी अधर सिधारे ॥१४॥	अलखागमयोः गृहं दृष्ट्वा निरीक्ष्यति। अधरमनामीपदं गच्छति ॥१४॥
राधास्वामी चरन धार परतीती। काल और महाकाल दल जीती ॥१५॥	राधास्वामीचरणौ प्रतीतिं धार्य । कालमहाकालयोः दलं विजितम्॥१५॥
अस चौपड़ राधास्वामी खिलाई। सुरत जीत कर निज घर आई ॥१६॥	ईदृशी अक्षकीडा राधास्वामीदयालुः क्रीडयितः। विजयं प्राप्यात्मा निजगृहमागतः॥१६॥

॥ शब्द २२ ॥ जो जन राधास्वामी सरना पड़े	
हिंदी	संस्कृत
जो जन राधास्वामी सरना पड़े । उनके जागे भाग बड़े ॥ १ ॥	ये जनाः राधास्वामीशरणमायान्ति । तेषां जागृतानि महाभाग्यानि ॥ १ ॥
कर सतसँग उन प्रीति बढ़ाई । मान मोह तज न्यारे खड़े ॥ २ ॥	सत्संग कृत्वा वर्धिता प्रीतिः तेषाम् । सम्मानमोहञ्च त्यक्तवा पृथग् स्थिताः ॥ २ ॥
जग भय भाव लाज तज दीन्ही । सतसँग में नित रहत अड़े ॥ ३ ॥	जगतः भयभावं लज्जां च त्यक्तौ । सत्सङ्गे नित्यं दृढ़ाः भवन्ति ॥ ३ ॥
धर परतीत गहे गुरु चरना । सहज सहज भौ सिंधु तरे ॥ ४ ॥	प्रतीतिं धार्य गुरुचरणौ गृहीतौ । सहजतया भवसागरात् तरितवन्तः ॥ ४ ॥
गुरु बल जीत लिया मैदाना । मन माया से खूब लड़े ॥ ५ ॥	गुरुबलेन विजितं क्षेत्रम् । मनमायाभ्यां पर्याप्तं युद्धवन्तः ॥ ५ ॥
काम क्रोध अहंकार लबारा । लोभ मोह सब मार धरे ॥ ६ ॥	कामक्रोधाहंकाराः असत्याः । लोभमोहश्च सर्वे मारिताः ॥ ६ ॥
राधास्वामी काज किया सब पूरा । उन बिन को अस दया करे ॥ ७ ॥	राधास्वामीदयालुः सर्वकार्यं साधितवन्तः । तेषां विना कः अस्मासु दयां कुर्युः ॥ ७ ॥

॥ शब्द २३ ॥ मन रे सतसँग गुरु का करो	
हिंदी	संस्कृत
मन रे सतसँग गुरु का करो । प्रीति प्रतीति निज हिये धरो ॥ १ ॥	रे मन गुरोः सत्सङ्गं कुर्याः । प्रीतिप्रतीतिञ्च निजहृदये दध्याः ॥ १ ॥
उनका सँग कर समझ सम्हारो । घट अँधियारा दूर करो ॥ २ ॥	तेषां सङ्गं कृत्वा बोधं गृह्णीयाः । घटान्धकारं दूरं कुर्याः ॥ २ ॥
सुरत शब्द मारग ले उनसे । सुरत शब्द में नित्त भरो ॥ ३ ॥	सुरतशब्दस्य मार्गं गृह्णीयाः तेभ्यः । सुरतशब्दे नित्यं पूरय॥ ३ ॥
राधास्वामी नाम सुमिर छिन २ में । गुरु सरूप का ध्यान धरो ॥ ४ ॥	राधास्वामीनाम प्रतिपलं स्मरेः । गुरुस्वरूपस्य ध्यानं कुर्याः ॥ ४ ॥
सेवा करो प्रीति से गुरु की । दीन होय उन चरन पड़ो ॥ ५ ॥	प्रीत्या गुरुं सेवेथाः । दीनं भूत्वा तेषां चरणयो: पतेः ॥ ५ ॥
दया लेव हरदम तुम उनकी । तब यह भौजल सहज तरो ॥ ६ ॥	सदैव गृह्णीयाः तेषां दयाम् । तदा सहजतया भवसागरात् तरेः ॥ ६ ॥
राधास्वामी दया मेहर ले साथा । काल करम से नाहिं डरो ॥ ७ ॥	राधास्वामीआशीर्दययया च सार्धम् । कालकर्मभ्यां मा त्रस्येः ॥ ७ ॥

॥शब्द २४॥ रागी जन माया के पाले पड़े	
हिंदी	संस्कृत
रागी जन माया के पाले पड़े ॥टेक॥	अनुरागिण: मायायाश्च चक्रे आयाताः ॥टेक॥
नित प्रति उसके धक्के खावें । त्रिय तापन की अगिन जरे ॥ १ ॥	नित्यं तयोः धक्कान् सहन्ते। त्रयः तापानां वह्निः ज्वलति॥१॥
गुरु दरशन में भाव न लावें । धन वालों के द्वारे खड़े ॥ २ ॥	गुरुदर्शने श्रद्धां न धारयन्ति। धनिनां द्वारे स्थिताः भवन्ति॥२॥
जो गुरु बचन सुनावें उनको । नेक न मानें मान भरे ॥ ३ ॥	सद्गुरः ये प्रवचनानि श्रावयन्ति तान् । अहंकारादल्पमपि न स्वीकुर्वन्ति॥३॥
निंदा कर सिर भार चढ़ावें । नरकन में सहें दुक्ख बड़े ॥ ४ ॥	निन्दां कृत्वा शिरसि भारं वहन्ति। नरकेषु महादुःखानि सहन्ते॥४॥
राधास्वामी मेहर से खैंच चरन में । यह जिव भी भौ पार करे ॥ ५ ॥	राधास्वामीदयालुः कृपया चरणयोः आकृष्टः । अयं जीवोऽपि भवसागरात् तरेत्॥५॥

॥ शब्द २५ ॥ मन रे क्यों न धरे गुरु ध्याना	
हिंदी	संस्कृत
मन रे क्यों न धरे गुरु ध्याना। तज मान मोह अज्ञाना ॥ १ ॥	रे मन कथं न गुरोः ध्यानं दध्या: । सम्मानमोहाज्ञानाः च त्यजे:॥१॥
गुरु सँग प्रीति करो तुम ऐसी । जस बालक माता लिपटाना ॥ २ ॥	गुरुणा सह त्वं ईदशीं प्रीतिं कुर्याः। बालः यथा लिलिम्पति मात्रा॥२॥
गुरु स्वरूप लागे अस प्यारा । जस तिरिया सँग पति हरखाना ॥ ३ ॥	सद्गुरुस्वरूपं रोचते नः प्रियम्। यथा स्त्रिया सह हर्षति पतिः ॥३॥
जब लग घट में प्रेम न होवे । ध्यान धरत मन रस नहिं पाना ॥ ४ ॥	यावद् घटे न जायते प्रेम । मनः नाप्नोति रसं घ्याने तावत्॥४॥
दया मेहर सतगुरु की सँग ले । दीन होय चित भजन समाना ॥ ५ ॥	सद्गुरोः आशीर्दययासार्धं । दीनं भूत्वा चित्तं घ्याने संविशेः ॥५॥
मन को रोक सुनो धुन घट में। सहज सहज तन से अलगाना ॥ ६ ॥	मनः निरुद्ध्य घटे ध्वनिं श्रुणुया:। सहजतया तनो: पृथग् भूयात् ॥६॥
इस विधि कार करो तुम निस दिन। पाओ राधास्वामी चरन ठिकाना ॥ ७ ॥	अनया विधिना त्वं प्रतिदिनं कुर्याः कार्यम् । राधास्वामीदयालोः चरणयोः स्थानं आप्नुया: ॥७॥

॥ शब्द २६ ॥ हंसनी क्यों न सुने गुरु बानी	
हिन्दी	संस्कृत
हंसनी क्यों न सुने गुरु बानी। जग सँग रहत मिलानी ॥ १ ॥	हंसी कथं न श्रृणोषि गुरोः गिरः । जगता सह मिलित्वा वससि ॥१॥
वक़्त अमोल जाय योंही बीता । परमारथ की सार न जानी ॥ २ ॥	अमूल्यसमयः व्यतीतः वृथा । परमार्थस्य सारं न ज्ञातम् ॥२॥
सोच बिचार करो अब मन में । नहिं तो बहुत होय तेरी हानी ॥ ३ ॥	मनसि चिन्तनं कुरु अधुना । अन्यथाप्स्यसि महती हानिम् ॥ ३ ॥
भोग जगत के त्यागो मन से । क्यों तू इन सँग भूल भुलानी ॥ ४ ॥	जगद्भोगान् मनसः त्यज । कथं त्वं एभिः सह भ्रमिता ॥ ४ ॥
सतसँग कर परतीन बढ़ाओ । प्रीति चरन में गुरु के आनी ॥ ५ ॥	सत्संग कृत्वा प्रतीतिं वर्धय । गुरुचरणयोः प्रीतिं धेहि॥ ५ ॥
घट का भेद लेव तुम उन से । सुरत शब्द में नित्त लगानी ॥ ६ ॥	तेभ्यः घटस्य भेदं गृहाण त्वम्। नित्यं सुरतशब्दे युङ्ग्धि॥ ६ ॥
राधास्वामी काज करें तेरा पूरा । उनके चरन में सुरत समानी ॥ ७ ॥	राधास्वामीदयालुः कार्यं सम्पन्नं करिष्यन्ति तव। तेषां चरणयोः विशात्मानम् ॥७॥

॥ शब्द २७ ॥ अरे मन क्यों नहिं धारे गुरु ज्ञान	
हिंदी	संस्कृत
अरे मन क्यों नहिं धारे गुरु ज्ञान ॥टेक॥	रे मन कथं न धारयसि गुरुज्ञानम् ॥टेक॥
सत चेतन घट माहिं विराजे । तू बाहर जड़ सँग भरमान ॥ १ ॥	सत्यचैतन्यं घटे विराजति । त्वं बहिः जगता सह भ्रमसि ॥ १ ॥
निज घर तेरा अगम अपारा । तू रहा जग सँग यहाँ भुलान ॥ २ ॥	तव स्वगृहमगमपारश्च । त्वं जगता सहात्र विस्मरसि ॥ २ ॥
धन और मान पाय बहु फूला । तिरिया सुत सँग मेल मिलान ॥ ३ ॥	धनसम्मानौ च प्राप्याति फुल्लसि । स्त्रीपुत्रेण सह मेलं करोषि ॥ ३ ॥
जग की हालत नित उठ देखे । कोई न ठहरे सभी चलान ॥ ४ ॥	जगत: दशां नित्यं उत्थाय पश्यसि । न कोऽपि स्थिर: सर्वे नश्वराः ॥ ४ ॥
फिर फिर बिरधी चाहे यहाँ की । ऐसा मूरख समझ न लान ॥ ५ ॥	भूयोभूयः वृद्धिं वाञ्छसि अत्र । ईदृश: मूर्खः न बोधं गृह्णाति ॥ ५ ॥
कभी जाग्रत कभी सुपन अवस्था । गहिरी नींद में कभी सुलान ॥ ६ ॥	कदापि जागृत् कदापि स्वप्नावस्था । कदापि गहननिद्रायां शेते ॥ ६ ॥
इन हालों में नित प्रति बरते । परख न लावे अजब सुजान ॥ ७ ॥	एतास्ववस्थासु नित्यं वर्तते । न करोति परीक्षणम् अद्भुतचतुरः ॥ ७ ॥
मद माता भोगन में राता । मोह जाल में रहा फँसान ॥ ८ ॥	मदोन्मत्तः भोगेषु लीनः । मोहपाशे बद्धीभवति ॥ ८ ॥
करता की रचना नित देखे । तौ भी उसका खोज न आन ॥ ९ ॥	कर्तुः सृष्टिं नित्यं पश्यति । तदापि तं नान्वेषति ॥ ९ ॥
परगट है क़ुदरत का खेला । यह पोथी कभी पढ़ी न पढ़ान ॥१०॥	प्रकृतेः खेलनं स्पष्टम्। ग्रन्थोऽयं न कदापि पठितः न पठति ॥१०॥
खान पान में बैस बितावत । मरने की कभी सुद्ध न लान ॥११॥	आहारपाने यापयति वय:। न कदापि मरणं ध्यायति॥११॥
काम क्रोध और लोभ लहर में। बहत रहे निस दिन अनजान ॥१२॥	कामक्रोधलोभानाञ्च तरङ्गे। अज्ञ: प्रवहति प्रतिदिनम् ॥१२॥
जो कोइ बचन चितावन कारन । कहे तो उससे रूसे आन ॥१३॥	यो कोऽपि बोधनाय वदति। तस्मै क्रुद्धयति सः॥१३॥
साध संत हुए जिव हितकारी।	साधसंतपुरुषाः जीवहितकरा:।

परमारथ की राह लखान ॥१४॥	परमार्थस्य पथं प्रदर्शयन्ति ॥१४॥
शब्द भेद दे जुगत बतावें । सुरत चढ़ावें अधर ठिकान ॥ १५॥	शब्दभेदं दत्वा युक्तिं कथयन्ति । आत्मानमारोहयन्ति अधरम् ॥१५॥
जनम मरन की फाँसी काटें। काल करम से सहज बचान ॥१६॥	जन्ममृत्योः उद्बन्धं कृन्तन्ति। कालकर्मभ्यां च अवन्ति सहजतया॥१६॥
तिनका बचन सुने नहिं चित दे। सोचे न अपनी लाभ और हान ॥१७॥	तेषां प्रवचनानि न श्रृणोति चित्तेन । न चिन्तति स्वलाभहानिश्च ॥१७॥
संत संग नाता नहिं जोड़े। सतसँग में नहिं बैठे आन ॥१८॥	संतपुरुषैः सह न युनक्ति सम्बन्धम् । न तिष्ठति सत्संगे भावेन॥१८॥
कुटुँब जगत का मोह न छोड़े। क्योंकर पावे नाम निशान ॥१९॥	कुटुम्बजगतश्च मोहं न त्यजति। कथं प्राप्तुं शक्यते नाम्नः संकेतम् ॥१९॥
जीव हुआ लाचार जगत में । निरबल निरधन निपट अजान ॥२०॥	जीवः जातः जगति विवशः । निर्बलनिर्धनमूर्खश्च पूर्णतया ॥२०॥
जब लग मेहर न होवे धुर की । संत मता कस माने आन ॥२१॥	यावद् न जायेत् आशीर्वृष्टिः उच्चपदात्। संतमतं कथं स्वीकर्तुं शक्यते तावत्॥२१॥
राधास्वामी दया करें जिस जन पर । संत चरन में वही लगान ॥ २२॥	राधास्वामीदाता दयां कुर्युः यस्मिन् । सैव युनक्ति संतचरणयोः ॥२२॥
प्रीति लाय नित करे साध सँग । सुरत शब्द की कार कमान ॥ २३ ॥	प्रेम्णा नित्यं करोति साधपुरुषाणां सङ्गम्। सुरतशब्दस्य कार्यवाहीं अर्जयति ॥२३॥
शब्द शब्द रस पिये अधर चढ़। सतगुरु का हिये धर कर ध्यान ॥२४॥	अधरे आरुह्य प्रतिशब्दमास्वादते। सद्गुरोः ध्यानं हृदये धार्य ॥२४॥
दया हुई कारज हुआ पूरा। राधास्वामी चरन समान॥२५॥	आशीर्वृष्टिः जाता कार्यं सम्पन्नं अभूत्। राधास्वामीदयालोः चरणयोः संविशति ॥२५॥

॥ शब्द २८ ॥ गुरु सँग प्रीति न कोई करे	
हिंदी	संस्कृत
गुरु सँग प्रीति न कोई करे । चरनन में नहिं भाव धरे ॥ १ ॥	गुरुणा सह प्रीतिं न करोति कोऽपि। चरणयोः विश्वासं न धारयति ॥ १ ॥
जो सतसंगी बचन सुनावें । मूरखता कर उनसे लड़े ॥ २ ॥	ये सत्संगिनः श्रावयन्ति प्रवचनानि । मूढ़तां कृत्वा तैः सह तुटति ॥ २ ॥
जगत भोग में गया भुलाई । जम धक्के नित खाता फिरे ॥ ३ ॥	जगद्भोगेषु विस्मृतः । यमधक्का: सहते नित्यम् ॥ ३ ॥
माया संग रहा अटकाई । भौसागर कहो कैसे तरे ॥ ४ ॥	मायया सह विरामयति । वद भवसागरात् कथं तरितुं शक्यते ॥ ४ ॥
राधास्वामी दया करें जब अपनी । इन जीवन की बिपता टरे ॥ ५ ॥	राधास्वामीदाता स्वदयां कुर्युः यदा । एषां जीवानां कष्टा: अपसरेयुः तदा ॥ ५ ॥

॥ शब्द २९ ॥ राधास्वामी सेव करत धर प्यारा	
हिंदी	संस्कृत
राधास्वामी सेव करत धर प्यारा । बिंजन अनेक कीन तैयारा ॥ १ ॥	राधास्वामीदयालुं सेवते प्रीतिं धार्य । अनेकानि व्यञ्जनानि निर्मितानि ॥ १ ॥
भर भर थाल धरे स्वामी आगे। सर्व पदारथ अमी रस पागे ॥ २ ॥	पूरणं कृत्वा स्थाल्य: प्रस्तुता: स्वामी समक्षम् । सर्वे पदार्था: अमृतरसे उपचिताः ॥ २ ॥
प्रेम सहित स्वामी ध्यान सम्हारा। गगन मँडल धुन शब्द पुकारा ॥ ३ ॥	स्वामी ध्याने संलग्नाः प्रेम्णा । गगनमण्डले ध्वनिशब्दाहवानं कृतवन्तः ॥ ३ ॥
अधर चढ़त निरखा जाय सतपुर । रूप सुहावन राधास्वामी सतगुरु ॥४॥	अधरमारुह्य सत्तपुरं निरीक्षितम् । राधास्वामीसद्गुरोः विराजति शोभामयः रूपः ॥४॥
दया करी स्वामी भोग लगाया। अमीरस स्वाद दीन बरखाया ॥ ५ ॥	दयां कृत्वा स्वामी प्रसादं कृतवन्तः । अमृतरसस्वादस्य वृष्टिं कृतवन्त: ॥ ५ ॥
उमँग उमँग सतसंगी मिल कर । ले परशादी हिये भाव धर ॥ ६ ॥	अत्युत्साहेन सर्वे सत्सङ्गिनः मिलित्वा । हृदये श्रद्धयाभावेन प्रसादं गृहीतवन्तः ॥ ६ ॥
प्रेम बढ़त अब घट में तिल तिल । राधास्वामी गुन गावें सब मिल मिल ॥७॥	शनैः शनैः घटे प्रेम वर्धते । सर्वे मिलित्वा राधास्वामीदयालो: गुणान् गायन्ति॥७॥

॥ ग़ज़ल १ ॥ हे गुरू मैं तेरे दीदार का आशिक़ जो हुआ	
हिंदी	संस्कृत
हे गुरू मैं तेरे दीदार का आशिक़ जो हुआ । मन से बेज़ार सुरत वार के दीवाना हुआ ॥१॥	हे गुरो अहं तव दृष्टेः प्रेमी अभवम्। मनसा दुःखितः आत्मानं समर्प्य उन्मत्तः अभवम् ॥१॥
इक नज़र ने तेरी ऐ जाँ मुझे बेहाल किया । लैला के इश्क़ में मजनूँ सा परेशान किया ॥२॥	हे जीवनं तवैक दृष्ट्याहं विह्वलः जातः । लैलायाः प्रेम्णि मजनूँवत् व्याकुलं कृतम् ॥ २ ॥
मैं हूँ बीमार मेरे दर्द का नहिं और इलाज । मेरे दिल जख्म का मरहम तेरी बोली है इलाज॥३॥	रुग्णोहं नान्योपायः मम पीडायाः । तव वाणी मम हृदयव्रणस्य नीरोगोपायः ॥ ३ ॥
तेरे मुखड़े की चमक ने किया मन को नूराँ । सूरज और चाँद हज़ारों हुए उससे खिजलाँ ॥ ४ ॥	तवाननकान्त्या प्रकाशितः मम मनः । सहस्रसूर्येन्दवः लज्जितवन्तः तेन प्रकाशेन ॥ ४ ॥
जग में इस चक्र ज़माने का यह दस्तूर हुआ । प्रेमी प्रीतम के चरन लाग के मशहूर हुआ ॥ ५ ॥	जगति अस्य युगचक्रस्य प्रथेयम् । प्रेमी प्रियतमस्य चरणौ युक्त्वा प्रसिद्धः भूतः ॥ ५ ॥
हिर्स दुनियाँ की मेरे दिल से हुई है सब दूर । तेरे दरशन की लगन मन में रही है भरपूर ॥ ६ ॥	जगद्वासनाः मम हृदयाद्दूरी जाताः । तव दर्शनेच्छा मनसि जाताधिका ॥ ६ ॥
वाह वाह भाग जगे गुरु चरनन सुर्त मिली । चंद्र मंडल को वहीं फोड़ के गगना में पिली ॥ ७ ॥	अहो भाग्यानि जागृतानि गुरुचरणयोरात्मा मिलितः । चन्द्रमण्डलं तत्रैव भेद्य गगने निर्विशितः ॥ ७ ॥
राग और रागनी मैंने सुने अंतर जाकर । मेरे नज़दीक हुए हिन्दू मुसलमाँ काफ़िर ॥ ८ ॥	रागरागन्यः मया श्रुतान्तसि । हिन्दूयवननास्तिकाः मम सकाशमागतवन्तः ॥ ८ ॥

॥ ग़ज़ल २ ॥ अर्श पर पहुँच कर मैं देखा नूर	
हिंदी	संस्कृत
अर्श पर पहुँच कर मैं देखा नूर । काल को मार कर मैं फूँका सूर ॥ १ ॥	गगनमारुह्य मया वीक्षितः प्रकाशः। कालं हत्वा अहम् अनदं वाद्यम्॥ १ ॥
देह की सुधि गई जो सुर्त चढ़ी । जाके बैठी जहाँ कि पहले थी ॥ २ ॥	यदात्मारोहितः देहः विस्मृतः। यत्रासीत् पूर्वं तत्रैव गतः॥ २ ॥
निज गली यार के जो आशिक हैं । भीड़ से अब एकांत लाऊँ मैं ॥ ३ ॥	स्वप्रियस्य वीथ्या: ये सन्त्यनुरागिणः। सम्मर्दादेकान्ते आनयामि तान्॥३॥
जो कहूँ मैं सो कान देके सुनो । सुर्त खैंचो चढ़ाओ धुन को सुनो ॥ ४ ॥	योऽपि कथयामि अहमवधानेन श्रृणु। आत्मानमाकर्षतु आरोहयतु च ध्वनिं श्रृणु॥४॥
सिर में है तेरे बाग़ और सतसंग । सैर कर जल्द ले गुरू का रंग ॥ ५ ॥	तव शिरसि उद्यानं सत्संगश्च अस्ति भ्रमणं कुरु क्षिप्रं गृह्णातु गुरो: रंगम्॥५॥
तान पुतली को आँख को मत खोल । चढ़ के आकाश का दुआरा खोल ॥ ६ ॥	तनोतु चक्षुतारां चक्षुःमापावृतश्च। आरुह्याकाशद्वारमनावर्तस्व॥६॥
जब चढ़े सुर्त तेरी अंदर यार । देह की सैर कर व देख बहार ॥ ७ ॥	हे मित्र! यदात्मारोहेत् तवान्तसि । देहस्य भ्रमणं कुरु शोभां च पश्य॥७॥
अचरजी सैर है तेरे बीचे । पिरथी ऊपर है आस्माँ नीचे ॥ ८ ॥	तवान्तसि अद्भुतं भ्रमणमस्ति। धरोपरि गगनमधश्च ॥८॥
बंकनाल होके आगे सुर्त चली । त्रिकुटी पहुँच कर गुरू से मिली ॥ ९ ॥	बंकनालं पारं कृत्यात्माग्रे गतः। त्रिकुटीपदं गत्वा गुरुणा मिलितः ॥ ९ ॥
रूप सूरज का लाल क्या बरनूँ । सहस सूरज हैं उसके इक रोमूँ ॥ १० ॥	सूर्यस्य रक्तरूपं किं वृणुयाम् । तेषां एकलोम्नि सन्ति सहस्रसूर्याः ॥ १० ॥
आगे चल सुर्त सुन्न में पहुँची । धुन किंगरी व सारँगी की सुनी ॥ ११ ॥	अग्रेऽऽत्मा सुन्नपदं गत: । किंगरीसारंगीवाद्ययोश्च ध्वनिः श्रुता ॥ ११ ॥
कुंड अमृत भरे नज़र आये । हंस रूप होय मोती चुन खाये ॥ १२ ॥	अमृतकुण्डाः दृष्टाः तत्र । हंसरूपं भूत्वा खादिता: मुक्ता: चित्वा ॥ १२ ॥
सुन्न को छोड़ कर चली आगे । पहुँची महासुन जहाँ सोहँग जागे ॥ १३ ॥	सुन्नपदं त्यक्त्वा अग्रे गतः । महासुन्नपदं गतः यत्र सोहं नदति ॥ १३ ॥
हाल वहाँ का मैं क्या कहूँ क्या है ।	किं वर्णेयं तत्र वृत्तान्तं किम् ।

जानता है वही जो पहुँचा है ॥ १४ ॥	सैव जानाति यो गतः तत्र ॥ १४ ॥
रास्ते में वहाँ अँधेरा है । सतगुरू संग ही निबेड़ा है ॥ १५ ॥	तत्रास्त्यन्धकार: मार्गे । सद्गुरुणा सहैव सम्भवमस्ति ॥ १५ ॥
सतगुरू संग तै किया मैदाँ । काल देख उनको हो गया हेराँ ॥ १६ ॥	सद्गुरुणा सहैव पारं कृतं क्षेत्रम् । तान् दृष्ट्वा काल: हताशः जातः ॥ १६ ॥
सुर्त चढ़ कर गुफ़ा में पहुँची धाय । धुन सोहँग सुनी मुक़ाम को पाय॥१७॥	धावित्वात्मा गुहायामारुह्य गतः । अधिष्ठानं प्राप्य सोहं ध्वनिः श्रुत: ॥१७॥
इस मुक़ाम अचरजी को पाय मिली । खोल खिड़की को अंदरून चली ॥१८॥	इयमद्भुताधिष्ठानं लब्ध्वा मिलितः। गवाक्षमुद्घाट्य अन्तः गतः ॥१८॥
आगे चल सत्तलोक पहुँची धाय । और अमी का अहार दम दम खाय॥१९॥	अग्रे गत्वा सत्तलोकं गतः धावित्वा। अमृताहारं कृतं शक्तिं प्राप्य ॥१९॥
आगे इसके अलख अगम है मुक़ाम । तिस परे हैगा राधास्वामी नाम ॥२०॥	अनन्तरं स्तः अलखागमौ स्थलौ। तस्माद् परे अस्ति राधास्वामीनाम ॥२०॥
यह मुक़ाम है अकह अपार अनाम। संत बिन कौन पा सके यह धाम ॥२१॥	अधिष्ठानोऽयमस्ति अकहापारानाम च। संतं विना कः लब्धुं क्षमः एनं धामम् ॥२१॥
भेद सब इस जगह तमाम हुआ । सब हुए चुप्प मैं भी चुप्प हुआ ॥२२॥	अत्र सर्वभेद: समाप्तः जातः । सर्वे शान्ताः जाताः अहमपि शान्तः अभवम्॥२२॥

॥ ग़ज़ल ३ ॥ निज रूप पूरे सतगुरू का	
हिंदी	संस्कृत
निज रूप पूरे सतगुरू का प्रेम मन में छा रहा । बचन अमृत धार उनके सुन अमी में न्हा रहा ॥ १ ॥	निजरूप: पूर्णसद्गुरोः प्रेम मनसि व्याप्यते । तेषाममृतधारवचनानि श्रुत्वा अमृतरसे स्नाति ॥ १ ॥
जब से चरनों में लगा और धूर चरनों की लई । मन के अंतर का अँधेरा मैल सब जाता रहा ॥ २ ॥	यदात: चरणयोः अयुनजम् चरणधूलिश्च गृहीता । अन्तर्मनसः अन्धकार: मालिन्यं सर्वं समाप्तम् ॥ २ ॥
मुखड़ा सुहावन कद्द सीधा चाल अति शोभा भरी । तेज रोशन सीने अंदर मन को घायल कर रहा ॥ ३ ॥	शोभामयाननः ऋजुः परिणाहः चलनं शोभामयम् । तीव्रं प्रकाशं वक्षसि मन: करोत्याहतम् ॥ ३ ॥
जो किया सतसंग सतगुरु और बचन पूरे सुने । दीन दुनिया झूठी लागी और न उनका ग़म रहा ॥ ४ ॥	यो कृत: सद्गुरो: सत्सङ्गः च पूर्णप्रवचनानि श्रुतानि । लोकपरलोकौ मृथा जातौ न जातः तयोः क्षोभ: ॥ ४ ॥
पिंड का सब भेद पोशीदा मुझे ज़ाहिर हुआ । मेहर से पूरे गुरू के काम मेरा बन रहा ॥ ५ ॥	पिण्डस्य सर्वं गुप्तभेदं माम् प्रकटितम् । पूर्ण गुरोः कृपया मम कार्यं सम्पन्नम् ॥ ५ ॥
सुर्त ने जब धुन को पकड़ा आस्माँ पर चढ़ गई । हो गई क़ाबिल वहाँ पर फिर न कोई ग़म रहा ॥ ६ ॥	यदात्मा ध्वनिं अगृह्णात् गगने आरोहितः । तत्राभूतयोग्यः न कोऽपि रंज: अवशिष्टः ॥ ६ ॥

॥ वज़न २ ॥ सुर्त आवाज़ को पकड़ के गई	
हिंदी	संस्कृत
सुर्त आवाज़ को पकड़ के गई । नभ पर पहुँची व जानकार हुई ॥ ७ ॥	आत्मा ध्वनिं गृहीत्वा गतः। गगनं गतः ज्ञानवान् च भूतः ॥ ७ ॥
देखी वहाँ पर अजब नवीन बहार । और अनुभव जगा हुई सरशार ॥ ८॥	दृष्टः तत्राद्भुतनवा च शोभा। प्राप्तः अनुभवः पूर्णः सन्तुष्टश्च जातः ॥ ८॥
दुक्ख जन्म और मरन की तकलीफ़ात हो गई दूर और गई आफ़ात ॥ ९॥	जन्ममृत्योः दुःखानि कष्टानि च। अपसृतानि गता विपत्तयश्च ॥ ९॥
भेद अन्तर का मुझ पै हाल खुला। जब कि सतगुरु से मैं सवाल किया ॥१०॥	अंतर्भेदं सद्यः प्रकटितं मयि। यदाहयहं सद्गुरुं प्रश्नमपृच्छम् ॥१०॥
देह को ख़ाक की मैं छोड़ गया । काल भी थक के मुझसे बाज़ रहा ॥११॥	चिताभस्मं देहं त्यक्तं मया। कालोऽपि श्रान्तं भूत्वा पराजितः ॥११॥
सुर्त आकाश पर चढ़ी इक बार । कर्म कारज गए हुई करतार ॥ १२ ॥	एकदात्मारोहितः गगने । गतानि कर्मकार्याणि च कर्ता अभूत् ॥ १२ ॥
मेरे सतगुरु ने जब करी किरपा । पद से जाकर मिली बियोग गया ॥१३॥	मम सद्गुरुः यदा कृता कृपा। अयुनजं पदे समाप्तः वियोगश्च ॥१३॥
करमी शरई नमाज़ी क्या जानें । भेद अभ्यासी आप पहिचानें ॥१४॥	कर्मकाण्डिनः कुरानानुयायिनः नमाज़पाठकाः किं जानन्ति। अभ्यासिनः स्वयं जानन्ति अस्य भेदम् ॥१४॥
विद्यावान सब रहे मूरख । अंतरी भेद को न जानें कुछ ॥१५॥	सर्वे विद्यावन्तः सन्ति मूर्खाः । अंतर्भेदं न किमपि जानन्ति ॥१५॥
संशय में सब जगत रहा कूड़ा । रहा बाचक न पाया गुरु पूरा ॥१६॥	संशये सर्वसंसारः अभूत् अवस्करः । अस्ति वाचकज्ञानी न प्राप्तः पूर्णगुरुः ॥१६॥
पाये सतगुरु उसी का जागा भाग। बाक़ी बाद और बिबाद में रहे लाग ॥१७॥	येन प्राप्ताः सद्गुरवः तस्यैव जागृतं भाग्यम्। शेषाः सन्ति संलग्नाः वादविवादेषु ॥१७॥
राधास्वामी गुरू ने की किरपा । भाग जागा है मेरा अब धुर का ॥१८॥	राधास्वामीदयालुः कृता कृपा। भाग्यं जागृतं ममाद्य सर्वोच्चपदस्य ॥१८॥

॥ ग़ज़ल १० ॥ यह सतसंग और राधास्वामी है नाम	
हिंदी	संस्कृत
यह सतसंग और राधास्वामी है नाम । सरन आओ हे करमियों तुम तमाम ॥ १ ॥	सत्सङ्गोऽयं राधास्वामीनामश्च वर्तते । हे कर्तृणि सर्वे शरणमायान्तु ॥ १ ॥
जो सतगुरु से चाहो दया की नज़र । सुरत और मन और मत भेंट कर ॥ २ ॥	सद्गुरो: दयादृष्टिं वाञ्छय चेत्तर्हि । आत्मामनमतानि च समर्पयत ॥ २ ॥
ख़राब हैगी हालत सभों की यहाँ । बचा चाहो सतगुरु सरन लो मियाँ ॥ ३ ॥	सर्वेषामास्त्यत्र दुर्दशाः । रक्षां वाञ्छसि चेत्तर्हि सद्गुरुं शरणमायाहि ॥३॥
हटा करके संसै सरन में तू आ । प्रीति और परतीत दृढ़ कर सदा ॥ ४ ॥	संशयानपवार्य शरणमायाहि । प्रीतिप्रतीतिञ्च दृढ़ं करोतु सदा ॥४॥
तू सतगुरु के दरवाज़े पर कर पुकार । और उनके भक्तों का रस्ता बुहार ॥ ५ ॥	त्वं सद्गुरुद्वारे आह्वानं कुरु । तेषां भक्तानां मार्गं मार्जय ॥५॥
पतंगा सा सतगुरु पै आपे को वार । सिंघासन की धूल अपने पलकों से झाड़ ॥ ६ ॥	शलभवदात्मानं सद्गुरौ समर्पय । सिंहासनस्य धूलिं स्व नेत्रपक्ष्माभ्यां निर्धूली कुरु ॥ ६ ॥
कभी मेहर से शहद देवें तुझे । मुनासिब समझ ज़हर देवें तुझे ॥ ७ ॥	कदापि दयया मधुं दद्युः त्वाम् । उचितं ज्ञात्वा विषं दद्यु: चेत्तर्हि ॥ ७ ॥
तु चुप होके ले और सिर पर चढ़ा । तू खुश होके पी और कह यह सदा ॥ ८ ॥	त्वं शान्तं भूत्वा गृहाण च शिरसि स्पर्शय । त्वं प्रसन्नं भूत्वा पानं कुरु आह्वानं कुरु च ॥ ८ ॥
कि धन धन हैं धन धन हैं सतगुरु मेरे । उतारेंगे भौजल से बेशक परे ॥ ९ ॥	यत् धन्याः धन्याः धन्याः धन्याः सन्ति मम सद्गुरवः । निश्चितरूपेण भवसागरात् तारयिष्यन्ति ॥ ९ ॥

॥अशआर सतगुरु महिमा ॥ संत बचन हिरदे में धरना	
हिंदी	संस्कृत
संत बचन हिरदे में धरना | उनसे मुख मोड़न नहिं करना ॥ १ ॥	संतवचनानि हृदये दध्यात्। न प्रत्यावर्तेत मुखं तेभ्यः।।१।।
मीठा कड़ुवा बोल सुहाई । मत को तेरे दे हैं पकाई ॥ २ ॥	मधुरकटुवचनानि रोचेरन् । तव मतं पक्ष्यन्ति।।२।।
गरम सरद का सोच न लाना । नरक अगिन से तोहि बचाना ॥ ३ ॥	उष्णशीतयोः विचारं नानयेत्। नरकाग्नितः तव रक्षां करिष्यन्ति।।३।।
तेरी समझ है किनके माहीं । गुरु पूरा खोजो जग माहीं ॥ ४ ॥	कणवदस्ति तव ज्ञानम्। मार्गयेत् पूर्णगुरुं जगति।।४।।
उन सँग किनका पावे ज्ञान । मार लेय तू मन शैतान ॥ ५ ॥	तैः सह कणज्ञानं प्राप्स्यति। हन्यात् दुष्टमनः ।।५।।
गुरु पूरा कस्तूर समान । बाहर खूँ घट मुश्क बसान ॥ ६ ॥	मृगमदवत् पूर्णगुरुः। बहिः रुधिरं घटे मृगमदः।।६।।
जब वे घट का भेद सुनावें। नभ की ओर सुरत मन धावें ॥ ७ ॥	यदा ते घटस्य भेदं वर्णयेयुः। आत्मामनश्च नभं प्रति धावतः।।७।।
अँधे को शीशा दिखलाना। ऐसे हरि पत्थर में जाना ॥ ८ ॥	नेत्रहीनाय दर्पणदर्शनम् । एवं जानीयात् हरिं प्रस्तरे ।।८।।
गुरु बिन घट में राह न चलना। डर और बिघन अनेकन मिलना ॥ ९ ॥	गुरुं विना घटे मार्गं न व्रजेत्। अनेकभयाविघ्नाश्च प्राप्स्यन्ति।।९।।
गुरु रक्षा जाके सँग नाहीं । उसको काल करम भरमाहीं ॥१०॥	येन सह नास्ति गुरुरक्षा। तं भ्रमयन्ति कालकर्माणि च ॥१०॥
याते सतगुरु ओट पकड़ना । झूठे गुरु से काज न सरना ॥११॥	तस्माद् सद्गुरुशरणं गृहणीयात् । असद्गुरुणा न सम्पद्यते कार्यम् ॥११॥
गिर समान उन छाया जग में । सुरत बिहंगम रहत अधर में ॥१२॥	गिरि इव तेषां छाया जगति विद्यते। आत्माविहगः वसति अधरम् ॥१२॥
जो मन करड़ा पत्थर होवे । गुरु से मिलत जवाहिर होवे ॥१३॥	यो मनः भवेत् ग्रावा। गुरुणा मिलित्वा भवति हीरकः ॥१३॥
बँदगी भजन करे सौ बरसा । गुरु का संग दुघड़िया बढ़का ॥१४॥	यो करोत्याराधनाध्यानञ्च शतवर्षपर्यन्तम्। गुरोः द्विनिमेषयोः संगः श्रेष्ठतरः तस्मात् ॥१४॥

जो मालिक का चहे दीदार । जा तू बैठ गुरू दरबार ॥१५॥	परमप्रभोः दर्शनमिच्छति चेत्तर्हि। त्वं गुरुसदनं गत्वा तिष्ठ ॥१५॥
मालिक का बालक गुरु पूर । मालिक का हरदम मंजूर ॥१६॥	परमप्रभोः बाल: पूर्णगुरुः। परमप्रभोः प्रतिक्षणं स्वीकृतस्वरूप: ॥१६॥
गुरु पूरे को समरथ जान । करम बान उलटावें आन ॥१७॥	पूर्णगुरुं समर्थं जानीयात्। कर्मवाणं प्रत्यावर्तिष्यन्ते ॥१७॥
जो मालिक का सुनता बोल । उसका बचन सही कर तोल ॥१८॥	शृणोषि परमप्रभोः प्रवचनं चेत्तर्हि। तेषां वचनं सम्यक् रूपेण तोलय ॥१८॥
जो तू घट में चालनहार । चलने वाला सँग ले यार ॥ १९ ॥	यो त्वं घटे चालकः। सुहृद् सङ्गं गृहय गच्छ ॥ १९ ॥
हिन्दू चाहे मुसलमाँ होवे। अरबी होय तुरक चाहे होवे ॥२०॥	हिन्दुभवेत् वा यवनो भवेत् । अरबतुरकवासक: वा भवेत् ॥२०॥
रूप रंग उसका मत देख । सरधा भाव निशाना पेख ॥ २१॥	मा पश्य तेषां रूपवर्णञ्च । श्रद्धया संकेतं पश्य ॥ २१॥
जिनके है मालिक का प्यार । हिन्दू और तुरक दोउ यार ॥२२॥	येषु परमप्रभोः प्रेम वर्तते । हिन्दुतुरक इत्येते मित्रे ॥२२॥
जो हैं माते मन के केल । दो हिन्दू का होय न मेल ॥२३॥	ये सन्ति मदोन्मत्ता: मनसः क्रीडायाम् । हिन्दुजनयोः न भवति मेलम् ॥२३॥
भान रूप मालिक सुन भाई । नर देही में रहा छिपाई ॥२४॥	श्रुणु भ्राता! परमप्रभुः भानुरूपः । तेषां नरदेहे गूढ़ोऽस्ति ॥२४॥
फूल खिलें गुलनारी जबही। बाग़ सुहावन लागे जबही ॥२५॥	यदा प्रगाढ़रक्तपुष्पा: विकसन्ति । तदा शोभायमानानि प्रतीयन्ते उद्यानानि ॥२५॥
अस गुरु संग करे जो कोई । पूरे सँग पूरा होय सोई ॥ २६॥	ईदृग् गुरोः संगं करोति यो कोऽपि । पूर्णं प्राप्य पूर्णं भवति सैव॥ २६॥
गुरु पूरे का सेवक बरतर । क्या जो हुकम करें राजों पर ॥२७॥	पूर्णगुरोः सेवक: भद्रतरः । स आदेष्टा राजानाम् ॥२७॥
हर दम सुरत चढ़े ऊँचे को । मालिक ताज ख़ास दिया उसको ॥२८॥	प्रतिपलमात्मारोहति उच्चपदेषु । परमप्रभुः अददः सुकिरीटम् ॥२८॥
गुरु की गति परखो अन्तर में । बे परखे मत मानो मन में ॥२९॥	गुरोः गतिमवलोकयतु अन्तसि । अपरीक्ष्यमावधारय मनसि ॥२९॥
जो गुरु परख न पावे घट में ।	घटे निरीक्षयितुं न क्षमः गुरुं चेत्तर्हि ।

तो मत जाय अकेला बट में ॥३०॥	मा गच्छ मार्गे एकाकी ॥३०॥
रस्ते में है काल का घेरा शब्द सुना दुख देहै घनेरा ॥३१॥	मार्गेऽस्ति कालस्य वृत्तम् । शब्दं श्रावयित्वा भवति दुःखदम् ॥३१॥
अभ्यासी को कहे पुकारी । शब्द सुनो आओ सरन हमारी ॥३२॥	अभ्यासिनं च आह्वयति। शब्दं श्रुणु शरणमागच्छतु नः ॥३२॥
जो कोई काल शब्द में रचिया । घर नहिं जाय राह में पचिया ॥३३॥	यो कोऽपि कालशब्दे रमति । गृहं न गत्वा मार्गे भ्रमति ॥३३॥
धावत जाय काल के घर को । भिड़ा शेर खा जावें उसको ॥३४॥	कालगृहं धावति सः । वृकसिंहयोश्च कवलं भवति सः ॥३४॥
काल शब्द की यह पहिचान । मन चाहे धन आदर मान ॥३५॥	कालशब्दस्य इदममिधानम् । मनवाञ्छाः धनादरमानाश्च ॥३५॥
काल शब्द में चित्त न लाओ । तब निज घर का भेद खुलाओ ॥३६॥	कालशब्दे चित्तं मा रमयतु । तदा निजगृहस्य भेदं प्रकाशय ॥३६॥
जिस घट परघट सत का नूर । उसको पूजें देव और हूर ॥३७॥	यस्मिन् घटे सत्तालोकः प्रकाशति । तं अर्चन्ति देवादिव्यनार्यश्च ॥३७॥
साध का निरखो आँख और माथा । सत्त का नूर रहे जिस साथा ॥३८॥	साधपुरुषाणामवलोकयतु चक्षुषी मस्तकञ्च । येन सह भवेत् सत्तालोकः ॥३८॥
यह चिन्ह देख करें पहिचान । गुरु पद का जिन हिरदे ज्ञान ॥ ३९॥	अमुं चिह्नं दृष्ट्वा अभिज्ञानं कुर्यात् । येषु हृदयेषु भवति गुरुपदस्य ज्ञानम् ॥ ३९॥
परम पुरुष सम गुरु को जान । बिन जिभ्या कहें बचन सुजान ॥४०॥	गुरुं परमपुरुषं समं जानीयात् । जिभ्यां विना सुज्ञानवचनं कथेयुः ॥४०॥
वही हकीम और वही उस्ताद । हिये में सुनत रहो उन नाद ॥४१॥	सैव वैद्यः सैव विज्ञः । हृदये श्रृणुयात् तेषां शब्दाः ॥४१॥
छोड़ कुसंगी से तू प्यार । सच्चा संगी खोजो यार ॥४२॥	कुसंगिना सह मोहं त्यज । हे मित्रम्! सत्संगिनं अन्वेषयेत् ॥४२॥
जिन कीना सतगुरु का संग । सत्तपुरुष का पाया रंग ॥४३॥	येन कृतः सद्गुरोः सङ्गः । सत्तपुरुषस्य रंगं प्राप्तं तेन ॥४३॥
झूठे गुरु का जो सँग लाय। नरक पड़े और अति दुख पाय ॥४४॥	यो करोत्यसद् गुरोः सङ्गम् । नरके गत्वा प्राप्नोति अतिदुःखम् ॥४४॥
गत मत भेद संत का भारी । वही पावे जिन तन मन वारी ॥४५॥	संतपुरुषस्य गतिमतभेदाश्च अतिबृहद् । यो समर्पयति तनुमनश्च सैवाप्नोति ॥४५॥

संत न देखें बोल और चाल । वे परखें अंतर का हाल ॥४६॥	संत पुरुषाः न पश्यन्ति वार्तालापम् ते ईक्षन्ते चेतसः अन्तस दशाम् ॥४६॥
गुरु का हाथ पुरुष का हाथ । हाजिर ग़ायब सब के साथ ॥४७॥	गुरोः हस्तः परमपुरुषस्य हस्तः प्रकटं वा गुप्तं वा सर्वे सह॥४७॥
उनका हाथ बहु लंबा ऊँचा । सात मुक़ाम के ऊपर पहुँचा ॥४८॥	तेषां हस्तः अति दीर्घम् उच्चं च सप्त स्थानानाम् ऊपरि प्राप्तः॥४८॥
जो तू सिर को राखा चाह । दीन होय गुरु सरनी आय ॥४६॥	चेद् त्वं शिरः वाञ्छसि दीनं भूत्वा गुरुशरणं आगच्छ॥४९॥
गुरु तुझको सब भाँति बचावें । काल बिघन सब दूर करावें ॥५०॥	गुरुः त्वां सर्वविधिना रक्षन्ति सर्व कालविघ्नान अपसारयन्ति॥५०॥
झूठे गुरु की ओट न गहना । सतगुरु चरन सरन सुख लेना ॥५१॥	मा गच्छ मिथ्या गुरु शरणम्। सद्गुरोः चरणशरणे सुखं लभस्व॥५१॥
जिन सतगुरु का संग न कीना । दुख पाया हुआ काल अधीना ॥५२॥	येन सद्गुरुसंगं न कृतम् दुःखं प्राप्तं कालाधीनमभूत्॥५२॥
जो हुआ सतगुरु की छाँह । सूरज लागा उसके पाँय ॥५३॥	यः सद्गुरोः छायाम् आगच्छति तस्य पादयोः सूर्यः नमति॥५३॥

॥ बहर दूसरी ॥ जो तुझे चलना है तो इस ढंग चल	
हिंदी	संस्कृत
जो तुझे चलना है तो इस ढंग चल । जो ख़िज़र है तौ भी गुरु के संग चल ॥ ५४॥	चेद् चलसि त्वमनया विधिना चल। यद्यस्ति देवदूतः तथापि गुरुणा सह चल ॥ ५४ ॥
बन सके जहाँ तक तू गुरु से मुख न फेर । सेवा कर अभ्यास कर मत कर तू देर ॥५५ ॥	यथासम्भवं गुरोः मुखं न प्रत्यावर्तस्व। सेवां कुरु अभ्यासं कुरु मा कुरु विलम्बं त्वम् ॥ ५५ ॥
निरभै मत हो खौफ़ रख मन में सदा । लाज तज बदनाम हो जग से जुदा ॥ ५६ ॥	मा भव भयहीनं भयं धार सदैव मनसि। लज्जां त्यज अपयशं प्राप्य जगतः पृथग् भव ॥ ५६ ॥
कोई तरह यह मन नहीं हाथ आयेगा । पूरे गुरू की छाया से मर जायगा ॥ ५७ ॥	केनापि प्रकारेण न नियन्त्रितं भविष्यति इदं मनः। पूर्णगुरोः छायया मृत्युं प्राप्स्यति ॥ ५७ ॥
इसलिये दामन को तू उनके पकड़ । छोड़ मत ऐ यार उसको धर जकड़ ॥ ५८ ॥	तस्माद् गृहाण तेषां वस्त्राञ्चलम्। रे मित्रम् ! मा त्यज दृढबन्धनं कुरु तैः सह ॥ ५८ ॥
जो तू मज़बूती से पकड़ेगा चरन । मिल गई मालिक की तुझको निज सरन॥५९॥	चेद् त्वं दृढ़तया गृहीष्यसि तेषां चरणौ। प्राप्तं भविष्यति परमप्रभोः निजशरणं त्वाम् ॥ ५९ ॥
देख हरदम मेहर उनकी अपने साथ । नित निरख सिर पर तू अपने उनका हाथ॥६०॥	निरन्तरं पश्य आशीर्वृष्टिं तेषाम्। नित्यमवलोकय शिरसि तेषां हस्तम् ॥ ६० ॥
गुरु के हिरदे में तू कर ले अपना घर । सुर्त रूप अपना निरख चढ़ मानसर ॥ ६१ ॥	गुरोः हृदये त्वं कुरु स्व वासम्। स्वात्मारूपं पश्य मानसरोवरमारोह ॥ ६१ ॥
गुरु की ताड़ और मार सह धर कर पियार। मूरखों की अस्तुती पर ख़ाक डार ॥ ६२ ॥	प्रेम्णा सह गुरोः प्रताडनाम्। धूलिं प्रक्षिप मूर्खाणां प्रशंसायाम् ॥ ६२ ॥

गुरु से परमारथ की दौलत पायेगा । सुरत सँग चेतन्न अँग हो जायगा ॥६३॥	गुरो: परमार्थस्य सम्पत्तिं प्राप्यसि । आत्मना सह चैतन्यांगं भविष्यसि ॥६३॥
पूरे गुरु को खटमुखी आईना जान । मालिक उसमें बैठ कर देखे है आन ॥६४॥	पूर्णगुरुं जानीहि षड्मुखदर्पणम् । तस्मिन् उषित्वा पश्यन्ति परमप्रभु: ॥६४॥
बे वसीलें गुरु के परमारथ न पाय । चाहे कोई कुछ करे निज घर न जाय ॥६५॥	गुरुं विना न प्राप्यसि परमार्थम् । कोऽपि कुर्यात् किमपि न गन्तुं क्षम: स्वगृहम्॥६५॥
जिनको मालिक का हुआ हासिल विसाल । थोड़ा सा मैंने कहा यह उनका हाल ॥६६॥	येन प्राप्त: परमप्रभो मेल: । मया कथित: तेषामल्प वृत्तान्त: ॥६६॥
पूरे गुरु हैं शेर वे करते शिकार । और सब बाक़ी हैं उनके टुकड़ेख्वार ॥६७॥	पूर्ण गुरु: सिंह च कुर्वन्त्याखेटम् । शेषा: सन्ति तेषां ग्रासाश्रिता: ॥६७॥
बस रहो चुप और गुरु सरनी गहो । हुकम मानो उनके चरनों में रहो ॥६८॥	अलं शान्तं भव गृहाण गुरुशरणम् । कुरु आज्ञापालनं च वसे तेषां चरणयो: ॥६८॥
ओट पूरे की गहो पूरे बनो । नीच की संगत न कर नहीं सिर धुनो ॥६९॥	पूर्णगुरो: शरणमागत्य पूर्ण भव । मा कुरु निकृष्टस्य संगमन्यथा धोष्यासि शिरम्॥६९॥
जो भजन और बंदगी हर की करै । या करम और धरम सब बिध से करै ॥७०॥	यो करोति प्रभो: भजनध्यानञ्च । वा करोति कर्मधर्मश्च सर्वविधिना ॥७०॥
गुरु की फटकार और निरादर जिन सहा । वह हुआ इन सबसे बेहतर मैं कहा ॥७१॥	यै: अमर्षन् गुरो: निर्भत्सनं निरादरञ्च । सैव श्रेष्ठ: अहम् अवदम् ॥७१॥
हक़ ने पैग़म्बर को समझाया कि मैं । मिल नहीं सकता ज़मीं अस्मान में ॥७२॥	खुदेति निराकारेण बोधितवन्तः पैगम्बरम्। न प्राप्तं भवितुं शक्नोम्यहं धरागगनयो: वा॥७२॥
ऊँचे और नीचे ठिकाने में नहीं । अर्श कुरसी पर भी मैं रहता नहीं ॥७३॥	उच्चनिम्नस्थलेष्वपि न । न वसाम्यहं सर्वोच्चगगनस्यपीठेऽपि ॥७३॥
दिल में भक्तों के मैं रहता हूँ सदा । जो मुझे चाहे तो माँग उनसे तू जा॥७४॥	सदैव वसाम्यहं भक्तानां हृदयेषु। यो इच्छति माम् याचनां कुरु तेभ्य: ॥७४॥
गुरु की महिमा का समझना हैगा यह । दीन हो चरनों में तू ज्यों खाक रह ॥७५॥	गुरो: महिमाया अवबोधनम् इदम् । दीनं भूत्वा चरणयो: धूलिवत् वर्तस्व ॥७५॥
एक कर हर गुरु का क्या है मानना । अपना आपा उनके सन्मुख घालना ॥७६॥	ऐक्यं कुरु कथं पृथग् मन्यते प्रभुं गुरुञ्च । तेषां समक्षं नष्टं कुरु स्वास्तित्वम् ॥७६॥

जिसके दिल से उड़ गये दुनियाँ के रंग । गैब के नक़्श उसमें झलकें बेदरंग ॥७७॥	उत्पतिता: जगद् रंगाः यस्मात् हृदयात् । गुप्तस्थानानां संकेताः तस्मिन् दृश्यन्ते सद्यः ॥७७॥
जो नज़र अपने क़सूरों पर करे । जल्द पूरा होवे रस्ता तै करे ॥७८॥	यो कुर्यात् दृष्टिपातं स्वदोषेसु । शीघ्रं पूर्णं भवेत् पन्थानं पारयेत् च ॥७८॥
आपको जाने है पूरा जो अजान । थक रहा रस्ते में हक़ के वह निदान॥७९॥	यो पूर्णाज्ञेयोऽस्ति स जानाति त्वाम् । प्रभोमार्गे सैवोदार: श्रान्तः भवति ॥७९॥

॥ महिमा अनहद शब्द और जुगत उसकी प्राप्ति की ॥ भर्म की ठेंठी निकालो कान से	
हिंदी	संस्कृत
भर्म की ठेंठी निकालो कान से । तब लगाओ ध्यान अनहद तान से ॥८०॥	भ्रममालिन्यं निष्कासयतु कर्णात् । योजस्व शब्देन सह ध्यानं तदा ॥८०॥
सुर्त के कानों से फिर तू शब्द सुन । शब्द कहो चाहे कहो अंतर बचन ॥८१॥	आत्मनः कर्णाभ्यां श्रृणु शब्दं तदा । शब्दः वदेत् वा वदेदन्तस् वचनम् ॥८१॥
घट में जो उठती है रागों की सदा । जो कहूँ मैं तुझसे हाल उसका ज़रा ॥८२॥	घटे ये भवन्ति रागानां ध्वनयः । यो वदाम्यहं तुभ्यं लेशमात्रवृत्तान्तं तस्य ॥८२॥
जान मुरदों की उठें क़बरों से भाग । ऐसा अन्तर का है बाजा और राग ॥८३॥	शवगर्तेभ्यः धावन्ति प्राणा: मृतानाम् । ईदृशोऽस्ति अन्तस् वाद्यं रागञ्च ॥८३॥
कान से चित दे सुनो आवाज़ को । पर सुनाते हैं नहीं इस राज़ को ॥८४॥	एकाग्रचित्तं भूत्वा कर्णेन श्रृणु ध्वनिम् । परं न श्रावयन्ति भेदममुम् ॥८४॥
लाओ पाओं के तले तू आस्माँ । शब्द ऊँचे देस का सुन सूरमा ॥८५॥	आनयतु पादौ अध: गगनम् । हे वीर उच्चदेशस्य शब्दं श्रृणु ॥८५॥
जो निदा खैंचे है ऊँचे को तुझे । जान वह धुन आई ऊँचे से तुझे ॥८६॥	य: ध्वनिराकर्षत्युच्चपदेषु त्वाम् । जानीहि स: ध्वनिरागता उच्चपदात्तुभ्यम् ॥८६॥
सुन के जो आवाज़ जागे कामना । काल की आवाज़ है घर घालना ॥८७॥	यं ध्वनिं श्रुत्वा जागर्ति कामना । स: कालध्वनि: नश्यति य: ॥८७॥
देख ले तू यों पैग़म्बर ने कहा। । आती है आवाज़ हक़ मुझको सदा ॥८८॥	पश्य पैगम्बरेति सन्देशवाहकेन एवं कथितम् । हक़ इति ध्वनिः श्रूयते मां सदा ॥८८॥
मुहर कानों पर तुम्हारे है लगी । सुन नहीं सकते हो अनहद धुन कभी ॥८९॥	तव छादनमस्ति कर्णयोः । कदापि श्रोतुं न क्षमः अनहदध्वनिं ॥८९॥
सुनता हूँ आवाज़ हक़ घट में सदा । दिल को मेरे करती है पाक और सफ़ा ॥९०॥	श्रृणोम्यहं घटे हक़ध्वनिं सदा। य: करोति मम हृदयं निर्मलं स्वच्छञ्च ॥९०॥
काटते और खोदते रस्ता रहो । मरते दम तक एक दम ग़ाफ़िल न हो ॥९१॥	मार्गं कृन्ते: खनेश्च । मरणपर्यन्तं नितान्तशिथिलं मा भव ॥९१॥

॥ वज़न २ ॥ रूह है हुक्म भेद अंस ख़ुदा	
हिंदी	संस्कृत
रूह है हुक्म भेद अंस ख़ुदा । बेज़बाँ करती है आवाज़ सदा ॥ ९२ ॥	आत्मास्ति ईश्वरस्यांश: आज्ञात: भेद: । जिह्वां विना करोति ध्वनिं सदा ॥ ९२ ॥
हाय बंधन धरे तू देही का । न सुने ज़िक्र पाक मालिक का ॥ ९३ ॥	खेदं देहस्य बन्धनं धरसि त्वम् । न श्रृणोषि चैतन्यचर्चामीश्वरस्य ॥ ९३ ॥
यार तुझको पुकारता दिन रात । तू न सुनता है हाय उसकी बात ॥९४ ॥	ईश्वर: आह्वयति त्वां दिवारात्रम् । खेदं न श्रृणोषि त्वं वार्तां तेषाम्॥९४ ॥
सब जगह है आवाज़ उसकी पूर । खोल कानों को अपने धर के शऊर ॥९५॥	सर्वेषु स्थलेषु व्याप्यते तेषां पूर्णध्वनि: । विधिना स्वकर्णौ अपावृतं कुरु ॥ ९५ ॥
कान का खोलना यही है सुनो। शब्द बाहर का सुनना बंद करो ॥ ९६ ॥	कर्णयोरपावृतकरणमयमेव श्रृणु । रुद्ध बाह्यशब्दस्य श्रवणम् ॥ ९६ ॥
वह है आवाज़ हर वक़्त जारी । घट में जन्म और मरन से है न्यारी ॥९७॥	स: ध्वनि: ध्वनति प्रतिक्षणम् । घटे जन्ममृत्युभ्यां स: पृथग् ॥ ९७ ॥
आदि और अंत उसका है बेहद । इस सबब से कहें उसे अनहद ॥ ९८ ॥	तस्या: आद्यन्तं सीमारहितम् । तस्मादस्ति सा अनहदध्वनि: ॥ ९८ ॥
पहले ज़ाहिर हुआ शब्द भंडार । फिर हुआ पैदा उससे सब संसार ॥९९ ॥	प्रथमः प्रकटित: शब्दभण्डार: । अनन्तरं तस्माद् जात: विश्व: ॥ ९९ ॥
शब्द करता न जो अपना इज़हार । कभी परघट न होता यह संसार ॥ १०० ॥	चेद् शब्द: न प्रकटित: । कदापि न सृष्टः जगतोऽयम् ॥ १०० ॥
सुनो वह शब्द और लो आनंद । भूल आपे को छोड़ दे दुख दंड ॥ १०१ ॥	श्रृणु तं शब्दं च गृहाण आनन्दं च । विस्मरतु स्वास्तित्वं त्यज दु:खदण्डं च ॥ १०१ ॥

॥ ग़ज़ल ३ ॥ बड़ा ज़ुल्म है मेरे यार यह ।	
हिंदी	संस्कृत
बड़ा ज़ुल्म है मेरे यार यह । कि तू जाय सैर को बाग़ के ॥ तू कँवल से आप ही कम नहीं । हिये मैं उलट के चमन में आ ॥१०२॥	अति अत्याचारः मम मित्रम् । यत्त्वं भ्रमणार्थं गच्छसि उपवने ॥ न त्वं न्यूनः देहस्य कमलेभ्यः । एहि उपवने उल्लुण्टनं कृत्वा हृदये ॥१०२॥
ख़ाली नाफ़ों की तू तलाश में । क्यों उठाए मेहनत रंज को ॥ धर प्रेम सुंदर श्याम का । ख़ुशबू उलट के ले घट में आ ॥१०३ ॥	अन्वेषयसि त्वं निःसारपदार्थान् । कथं धरसि श्रमस्य क्लेशम् ॥ धर श्यामस्य सुंदरप्रेम । एहि घटे उलुण्टनं कृत्वा सुगन्धं गृहाण ॥१०३ ॥
तेरे मन में जो नहीं बासना । तन संग भोग बिलास की ॥ तब कौन तुझको खैंचता । कि तू जग की चोर सरा में आ ॥१०४॥	तव मनसि नास्ति या वासना । देहेन सह भोगविलासानाम् ॥ तदा कः आकर्षति त्वां । यत्त्वं जगतः चौरानां सदने आगच्छ ॥१०४॥
तेरी चाह दुख सुख रूप है। तेरा मन ही काल और जाल है ॥ तेरी आस जग की पुकारे है । कि तू फेर में तू और मैं के आ ॥१०५॥	तवेच्छा दुःखसुखमिश्रिता । तव मन एव कालपाशश्च ॥ जगतः आह्वानानि तवाशाः । यत्त्वं आगच्छ मम तव च चक्रे ॥१०५॥
तेरी है किधर को नज़र लगी । कि तू इस क़दर करे गाफ़िली ॥ तेरी मौत सिर पर है आ खड़ी । ज़रा आँख खोल कफ़न में आ ॥ १०६॥	कुत्र तव दृष्टिः । यत्त्वमेवमस्ति क्रियाशून्यः ॥ तव मृत्युरस्ति शिरसि । क्षणायोन्मील नेत्रे एहि मृताच्छादनवस्त्रे ॥ १०६॥
तेरे घट में गुरु दरबार से । हर वक्त आती है यह निदा ॥ तज बासना जग जार की । ले प्रेम अंग को घर में आ ॥१०७॥	गुरुसदनात् तव घटे । सदागच्छति अयं ध्वनिः ॥ त्यज वासनाः मिथ्याजगतः । प्रेमांगेन आगच्छ गृहे ॥१०७॥
ग़म इंतज़ार का सह रहा । तेरे दर्शनों को तड़प रहा ॥ ज़रा डग उठा के करो दया । छिन एक जान मेरे तन में आ ॥ १०८ ॥	दुःखं सहे विछोहस्य । व्याकुलोऽस्मि तव दर्शनाय ॥ किंचित् चरणमुत्थाय कुर्युः दयाम् । क्षणाय एकात्मा मम देहे आगच्छेत् ॥ १०८ ॥

॥ वजन २ ॥ रात गुरु भेदी ने मुझसे यों कहा	
हिंदी	संस्कृत
रात गुरु भेदी ने मुझसे यों कहा । तुम से गुरु का भेद नहिं राखूँ छिपा ॥१०९॥	निशायामवदत् माम् रहस्यभेदीगुरुणायम्। न तिरोभावयामि त्वत् गुरोः भेदम् ॥१०९॥
काम भक्ती के करो तुम सहज से। जो करो सख़्ती तो दुनिया सख़्त है ॥११०॥	भक्त्याः कार्याणि कुरु सहजेन त्वम्। कर्कशतां करिष्यसि चेत्तर्हि कर्कशः जगत् ॥११०॥
बिन प्रेम और भेद नहीं पतियाय धुन। याते कर अभ्यास भक्ती हे सजन ॥१११॥	प्रेमभेदं च विना न प्राप्यते ध्वनिः। हे प्रेमी तस्माद् कुरु अभ्यासं भक्तेः ॥१११॥
आस्माँ से आती है हरदम आवाज़ क्यों पड़ा दुनियाँ में नहिं सुनता उसे ॥११२॥	प्रतिपलं गगनादागच्छति ध्वनिः। कथं विचरसि जगदि न श्रृणोषि तम् ॥११२॥
कोई नहीं भेदी हैं सतगुरु धाम का। बस यही कि घंटे की आवे सदा ॥११३॥	न कोऽपि रहस्यभेदी सतगुरु धामस्य(धाम्नः)। अस्तु! घण्टा ध्वनिरागच्छेत् ॥११३॥

॥ वज़न ३ ॥ जब देखा तेज मैंने जो मालिक के नाम का	
हिंदी	संस्कृत
जब देखा तेज मैंने जो मालिक के नाम का । दिल और जान भेंट हुए गुरु के नाम का ॥११४॥	यदापश्यमहं प्रभो: नाम्न: ओजः। हृदयात्मा च समर्पितौ गुरो: नाम्न: ॥११४॥
प्यासों की प्यास बुझ गई धारा से नाम के । ऐसा है आब शीरीं अमी रूप नाम का ॥११५॥	पिपासा तृप्ता पिपासानां नाम्न: धारया । ईदृशः मधुरमाप: अमृतरूप नाम्नः ॥११५॥
नामी व नाम में है नहीं फ़रक़ देख ले । छबि यार की दिखाता है वह तेज नाम का ॥११६॥	पश्य न कोऽपि भेदः नामी च नाम मध्ये । नाम्नः तदोजः दर्शयति प्रभो: छविम् ॥११६॥
हिरदे में तुझको दीख पड़ेगा जमाल यार । जो रगड़ा उस पै नित्त दिया जावे नाम का ॥११७॥	हृदये द्रक्ष्यसि प्रभोः सुन्दरस्वरूपम् । यो भवेत् नाम्नः घर्षणं तस्मिन् नित्यम् ॥११७॥
मालिक का संग तुझको मिला यह सहीह जान । जो दिल में तेरे लाग रहा ध्यान नाम का ॥११८॥	प्रभो: सान्निध्यं प्राप्तं त्वया जानीहि शुद्धमिदम् । यो नाम्नः ध्यानं युनक्ति तव हृदये ॥११८॥
कर संग नाम का जो तू दीदार को चहे । मालिक का मेल है जो हुआ मेल नाम का ॥११९॥	वाञ्छसि दर्शनं चेत्तर्हि नाम्नः संगं कुर्यात् । नाम्न: मेलनं प्रभो: मेलः ॥११९॥
मालिक के लोक में तेरा हो जायगा गुज़र । जो तू उड़ेगा ऊँचे को बल लेके नाम का ॥१२०॥	प्रभोः पदं प्राप्स्यसि त्वम् । यो उत्पतस्यसि त्वमुच्चं नाम्नः बले ॥१२०॥
सुमिरन से नाम गुरु के तू ग़मगीं न हो कभी। मालिक का प्यार आवे जो हो प्यार नाम का ॥१२१॥	मा भव शिथिलं कदापि गुरोः नाम्न: स्मरणात्। नाम्नि भवेद् प्रेम चेत्तर्हि प्राप्स्यसि प्रभोः प्रेम ॥१२१॥

॥ प्रेम की महिमा ॥ सुरत मन में प्रेम गुरु जिसके बसा	
हिंदी	संस्कृत
सुरत मन में प्रेम गुरु जिसके बसा । फूल से ज़्यादा है हर दम वह खिला ॥१२२॥	यस्यात्मामनसि वसित: गुरो: प्रेम। प्रतिपलं विकसितः पुष्पातधिकः सः ॥१२२॥
प्रीति सतगुरु की तू हर दम धार यार । औलियाओं का बना इस ही से कार ॥१२३॥	हे मित्रं नित्यं धार सद्गुरोः प्रीतिम्। सिद्धपुरूषाणां प्रयोजनं साधितमनया ॥१२३॥
यह न जानो तुम कि हक़ मिलता नहीं वह है दाता उसको कुछ मुशकिल नहीं ॥ १२४॥	न ध्यायेत् यदप्राप्यं प्रभुः। दातारः ते न किमपि कठिनं तेभ्यः ॥ १२४॥
प्रेम कारन जिसने कीना ख़र्च माल। धन है वह जन उसको मिलिया प्रेम हाल ॥१२५॥	प्रेम्णः कारणात् येन व्ययीकृता सम्पदा। धन्य सः येन प्राप्तः प्रेम सद्यः ॥१२५॥
पहिले जिसने अपना घर दीना उजाड़ पाई फिर गुरु प्रेम की दौलत अपार ॥१२६॥	प्रथमं येनोन्मूलितं स्वगृहम्। तदनन्तरं प्राप्ता गुरोः प्रेम्णः संपदापारा ॥१२६॥
जग के जीवों के लिए दुनिया का मुल्क भक्त जन के वास्ते मालिक का मुल्क ॥१२७॥	जगत: जीवेभ्य: संसारस्य क्षेत्रम्। भक्तजनेभ्य: प्रभोः जगत् ॥१२७॥
प्रेम चाहे छेद देवे आस्माँ । प्रेम से पिरथी रहे कंपायमाँ ॥१२८॥	प्रेम छिन्द्यात् गगनं यद्यपि। प्रेम्णा पृथिवी कम्पयति ॥१२८॥
प्रेम डाले जोश से समुँदर को फाड़ । प्रेम चाहे रेत सम पीसे पहाड़ ॥१२९॥	प्रेमावेशे सागरं स्फोटयति। प्रेम पिनष्टि पर्वतं सिकतेव यद्यपि ॥१२९॥

॥ प्रेम की महिमा ॥ कड़ी १३०-१३८	
हिंदी	संस्कृत
प्रेम छिन में मुरदे को ज़िंदा करे । प्रेम पल में शाह को बंदा करे ॥१३०॥	प्रेम क्षणे करोति शवं जीवितम् । प्रेम क्षणे नृपं करोति सेवकम् ॥१३०॥
प्रेम सब कड़वाई को मीठा करे । प्रेम छिन में लोहे को कंचन करे ॥१३१॥	प्रेम करोति मधुरं सर्वां कटुताम् । प्रेम क्षणे आयसं करोति कंचनम् ॥१३१॥
पाक करता हैगा नापाकी को प्रेम । दूर कर देता है सब दरदों को प्रेम ॥१३२॥	प्रेमाशुचं करोति शुचम् । सर्वांपीडां हरति प्रेम ॥१३२॥
प्रेम से हो जाय काँटा गुल गुलाब । प्रेम से हो जाय सिरका ज्यों शराब ॥१३३॥	प्रेम्णा शूलं भवति पाटलीपुष्पम् । प्रेम्णा रसाम्ला भवति मदिरा ॥१३३॥
प्रेम अगिनी अपने हिरदे बालिये । फ़िकर भजन और बंदगी का जालिये ॥१३४॥	प्रज्ज्वल प्रेमाग्निं स्वहृदये । ध्यानोपासनायाः चिंतामपसारय॥१३४॥
प्रेमियों का मत है सब मत से जुदा । प्रेमियों का इष्ट है मालिक सचा ॥१३५॥	प्रेमीजनानां पन्थाः सर्वमतेभ्यः पृथक् । ऋतं प्रभुः प्रेमीजनानामिष्टः ॥१३५॥
कुफ़र उसका दीन है और दीन उसका नूरे जाँ। जो तू निरभय हो गया सारे जहाँ में हुई अमाँ ॥१३६॥	नास्तिकता दैन्यं च दैन्यमस्ति प्रभोः प्रकाशः । यो त्वं निर्भयः स्याः सर्वतः शांतिः जाता ॥१३६॥
इश्क़ वह शौला है जिस घट में वह रौशन हो गया । एक प्रीतम रह गया और बाक़ी सब जल भुन गया ॥१३७॥	प्रेम तदर्चिः यस्मिन् घटे प्रकाशितं तद् । इष्टैवावशिष्टः सर्वं ज्वलितं भर्जितञ्च ॥१३७॥
प्रेम जब आया सभी को रद किया । एक प्रीतम रहके बाक़ी बह गया ॥१३८॥	यदाविर्भूतः प्रेम सर्वं त्यक्तं तदा । सर्वं प्रवाहितं इष्टातिरिक्तम् ॥१३८॥

॥ प्रेम की महिमा ॥ कड़ी १३९-१४६	
हिंदी	संस्कृत
वाह वाह हे प्रेम तू है निरमला। ग़ैर को प्यारे सिवा दीना जला ॥१३९॥	धन्य: धन्य: हे प्रेम निर्मलोऽसि । प्रेम्णान्यत् ज्वलितं प्रिय: ॥१३९॥
रीत भक्ती की सुनो हे साधवा । लोभ की मत कर अमीरों से तू चाह ॥१४०॥	हे साधव: श्रृणुत भक्तिरीतिम् । मा कुरु लोभस्येच्छां धनाढ्येभ्य: ॥१४०॥
जिसके मन में है भरी भोगों की चाह । कस खुले मालिक का भेद और हो निबाह ॥१४१॥	यस्यमनसि इच्छास्ति भोगानाम् । कथमनावृतं भवेत् प्रभो: भेदं निर्वाहञ्च भवेत् ॥१४१॥
सौ तरंगें मन में तेरे हैं भरी । नूर मालिक का नहीं झलके ज़री ॥१४२॥	तव मनसि सन्ति शततरंगा: । न भवति क्षणिकदर्शनं प्रभो: तेजस: ॥१४२॥
दुनिया को चाहे तू और दीदार को । यह है मुशकिल अनसमझ है यार तू ॥१४३॥	उभयं वाञ्छसि जगद् प्रभो: दर्शनञ्च । कठिनमियं अज्ञ: मित्रं त्वम् ॥१४३॥
जो तेरी आँखों से परदा दें उठा । होगा दुनिया से तू बेज़ार और ख़फ़ा ॥१४४॥	तव नेत्राभ्यामावरणमुत्थापयेत् चेत्तर्हि । त्वं जगत: रुष्ट: क्रुद्धश्च भविष्यसि ॥१४४॥
धोखे उसके जब तुझे आवें नज़र | भाग जावेगा तू उससे दूरतर ॥१४५॥	यदा त्वं पश्ये: प्रपञ्चान् तस्य । तदा धाविष्यसि तस्माद्दूरतर: ॥१४५॥
खाना बे शुबहे का तुझको है ज़रूर । तो भजन तुझसे बनेगा बे क़सूर ॥१४६॥	सत्यनिष्ठया भक्षयिष्यसि चेत्तर्हि । ध्यानं भविष्यसि विघ्नहीनम् ॥१४६॥

॥ प्रेम की महिमा ॥ कड़ी १४७-१५४	
हिंदी	संस्कृत
जो तू खाना खागया हक़्क़ और हलाल । जीत लेगा मन को ऐ साहिब कमाल ॥१४७॥	स्वाधिकारश्रमयोश्च भोजनं करिष्यसि चेत्वम् । हे अद्भुतमानव! विजयं लप्स्यसे मनसि त्वम् ॥१४७॥
दूर कर मन से जो है गुरु के सिवाय । तब रहे प्रीतम तेरे मन में समाय ॥१४८॥	सर्वमपसारय मनसः गुरोरतिरिक्तम् । तदा विराजिष्यन्ति प्रभुः तव मनसि ॥१४८॥
जब तलक मन में तेरे है मान यार । हो नहीं सकता है मालिक तेरा यार ॥१४९॥	हे मित्रम्! यावत्पर्यन्तमस्ति अहंकारः तव मनसि । हे मित्रम्! न भवितुं शक्नुवन्ति प्रभोः तव ॥१४९॥
जब तेरे मन से हुआ अहंकार दूर । जा मिले मालिक से और पावे सरूर ॥१५०॥	यदा तव मनसः दूरं जातमहंकारः । प्रभुणा मेलः प्राप्स्यसि आनन्दः च भविष्यति॥१५०॥
अपने मालिक पै तू दे आपे को वार । जब नहीं तू तब रहा मालिक दयार ॥१५१॥	समर्पय स्वाहं स्वप्रभौ । यदा नासीत् तवाहं दयालुरासन् प्रभुः ॥१५१॥
जो कि तन मन से हुआ अपने जुदा । मिल गया बस उसको इसरारे खुदा ॥१५२॥	यो स्वतनुमनसश्च पृथग्जातः । तेन प्राप्तः प्रभोः भेदः ॥१५२॥
आँख कान और मुँह को अपने बंद कर । भेद मालिक का तुझे आवे नज़र ॥१५३॥	स्वनेत्रकर्णमुखानि च पिधातव्यानि । प्रभोः रहस्यं ज्ञास्यसि त्वम् ॥१५३॥
चाह दुनिया की करे मन को सियाह । गुरु से गुरु को माँग मत कर और चाह॥१५४॥	जगद्वासनाभिः मनः भवति कृष्णः । गुरुं याच गुरोः नान्यमिच्छ ॥१५४॥

॥ प्रेम की महिमा ॥ कड़ी १५५ - १६०	
हिंदी	संस्कृत
जिस क़दर तुझको है मालिक से पियार उससे ज्यादा तुझसे वह करता है प्यार ॥ १५५॥	यावन्मात्रं वाञ्छसि त्वं प्रभुम्। तदधिकं ते वाञ्छन्ति त्वाम् ॥ १५५॥
पर तुझे उसकी परख होती नहीं । मेहर की उसके ख़बर होती नहीं ॥१५६॥	परं त्वं न परीक्षितुं क्षमः तान्। तेषां दयायाः ज्ञानं न भवति ॥१५६॥
बुलहवस को दर्दे इश्क़ होता नहीं । सोज़ परवाने का मक्खी को नहीं ॥१५७॥	जगत: जीवे प्रेम्णः पीडा न भवति। शलभस्य पीडा न भवति मक्षिकाम् ॥१५७॥
इक जनम में दोलते दीदार पाय । हर किसी को वस्ल हक़ मिलता नहीं ॥१५८॥	एकस्मिन् जन्मनि दृष्टिरूपसंपदां प्राप्य। प्रभुणा सह मेलनमधिकारं न धरति प्रत्येकः ॥१५८॥
जो तू मूरत याकि अगनी पूजता । आओ आओ जैसे तैसे भाव से ॥१५९॥	यो त्वं पूजयसि अग्निमूर्तिं वा। एहि एहि भावेन येनकेनप्रकारेण ॥१५९॥
सौ दफ़े भूल और चूक होगी मुआफ़ । मत निरास होना तू इस दरबार से ॥१६०॥	त्रुटयः क्षमा भविष्यन्ति शतवारम्। मा भू निराशमस्माद् सदनात् ॥१६०॥

॥ ग़ज़ल ६ ॥ प्यारे ग़फ़लत छोड़ो सर बसर	
हिंदी	संस्कृत
प्यारे ग़फ़लत छोड़ो सर बसर, गुरु बचन सुनो तुम होश धर । मन की तरंगें रोक कर, सतसंग में तुम बैठो जाय ॥ १ ॥	प्रिय त्यज प्रमादं पूर्णत: चैतन्यं भूत्वा श्रृणु गुरुप्रवचनानि । मनसः तरंगा: अवरुद्ध्य, सत्संगे गत्वा तिष्ठ त्वम् ॥ १ ॥
गुरु का चरन पकड़ जकड़, गुरु का सरूप ध्यान धर । इस मन की खोवो सब अकड़, नैनन में तुम बसो आय ॥ २ ॥	गुरुचरणौ दार्ढ्येन गृहीत्वा, गुरुस्वरूपं ध्यात्वा । अस्य मनसः सर्वाभिमानं नश्यतु, नेत्रयोः त्वमागत्य विराजत ॥ २ ॥
यह दुनिया ख़्वाब ख़्याल है, जो आया यहाँ सो चाल है । क्या पूछो यहाँ क्या हाल है, यह काल कराला सब को खाय ॥ ३ ॥	जगदयं स्वप्नवस्तु: , अत्रागतः यः गमिष्यति सः । किं पृच्छसि का दशात्र, भयंकरः कालोऽयं भक्षयति सर्वान् ॥ ३ ॥
क्या भूला तू धन माल देख, माया का सब जाल पेख । काल करम की मिटे रेख, जो सतगुरु की सरन आय ॥ ४ ॥	किं विस्मरसि धनसम्पदां पश्य, जानीहि सर्वं मायापाशम् । रेखा मृद्यते कालकर्मणो: , आयाति यो सद्गुरुशरणम् ॥ ४ ॥
सतगुरु से कर आन प्यार, उनसे ले भेद सार । सुरत शब्द मारग अपार, सुरत मन धुन से लगाय ॥ ५ ॥	सद्गुरुणा कुरु प्रेम मर्यादया, तेभ्यः गृहाण भेदसारम् । अपारः सुरतशब्दस्य पन्थाः, आत्मामनसी ध्वनिना संयुज्य ॥ ५ ॥
देख अन्तर जोती जमाल, लख गगना में सूर लाल । सुन्न के परे महाकाल, सतगुरु संग चलो धाय ॥ ६ ॥	अन्तसि पश्य दिव्यप्रकाशम्, पश्य गगने रक्तसूर्यम् । सुन्नपदादग्रे महाकालस्य स्थानम्, धावित्वा चलतु सद्गुरुणा सह ॥ ६ ॥
मुरली धुन सुन रसाल, ऊँचे पर धरो ख़्याल | सत्तपुरुष निरखो जलाल, फिर अलख अगम परस जाय ॥७॥	श्रृणु मधुरवेणुध्वनिम्, ध्यानं धरोच्चपदे । पश्य सत्तपुरुषस्यैश्वर्यम् , तदनन्तरं गत्वा स्पृश अलखागमौ ॥७॥

धाम अनामी धुर अधर, निरखा जाय अति प्रेम कर । राधास्वामी चरनन सीस धर, अस्तुत उनकी रही गाय ॥ ८ ॥	अधरे अत्युच्चानामीधामः(धाम) अवलोकितं अति प्रेम्णा । शिरोधार्य राधास्वामीचरणौ, तेषां गायामि स्तुतिम् ॥ ८ ॥

॥ शब्द ७ (रेख़्ता) ॥ करो सतसंग सतगुरु का	
हिंदी	संस्कृत
करो सतसंग सतगुरु का, भेद घर का वहाँ पाओ । धार परतीत चरनन में, दीन दिल सरन में धाओ ॥ १ ॥	सद्गुरो: सत्सङ्गं कुरु, लभस्व गृहस्य भेदं तत्र । चरणयो: प्रतीतिं धार्य, दीनहृदयेन शरणे धाव॥१॥
समझ कर जगत में बरतो, फँसो नहिं जाल में उसके । रहो हुशियार इंद्रियन से, भोग सँग धोखा मत खाओ ॥ २ ॥	विवेकेन व्यवहर्तव्यं जगति मा बद्धीभू तस्य पाशे । सावधानं भव इन्द्रियेभ्यः , मा वञ्च भोगै: सह ॥२॥
शब्द का भेद ले गुरु से, करो अभ्यास तुम निस दिन। गुनावन जगत की तज कर, चित्त से ध्यान धुन लाओ॥ ३ ॥	गुरोः गृहाण शब्दभेदम् , प्रतिदिनं कुरु अभ्यासं त्वम् । जगद्भावान् त्यक्त्वा, चित्तेन ध्वने: ध्यानं कुरु॥३॥
जुगत से रोक मन घट में, ध्यान गुरु रूप का धारो । सुमिर राधास्वामी नाम हरदम, गुरू गुन नित्त तुम गावो ॥ ४ ॥	युक्त्या मनः घटे निरुद्ध्य, गुरुस्वरूपस्य ध्यानं कुरु । प्रतिपलं राधास्वामीनाम्नः स्मरणं कुरु, नित्यं गुरुगुणानां गानं कुरु त्वम् ॥४॥
सुरत मन तान गगना में, बजे जहाँ संख और घंटा । सुनो फिर शब्द ओंकारा, सुन्न चढ़ मानसर न्हावो ॥ ५ ॥	आत्मामनश्च गगने युङ्ग्धि दार्ढ्येन, यत्र नदतः घंटाशंखश्च । तदनन्तरं श्रृणु ओम् ध्वनिम् , सुन्नपदमारुह्य मानसरसि स्नानं कुरु॥५॥
भँवर गढ़ जा सुनी बानी, सत्तपुर जाय हुलसानी । अलख और अगम के पारा, अनामी धाम चढ़ जावो ॥ ६ ॥	भँवरगढ़ं गत्वा श्रुता वाणी, सत्तपुरं गत्वा प्रसन्ना जाता । अलखागमातिक्रम्य, अनामीधामं(धाम) आरोहतु॥६॥
मिली राधास्वामी से प्यारी, सरावत भाग निज अपना भटक में बहु जनम बीते, पड़ा मेरा ऐसा अब दावो॥ ७ ॥	मिलिता राधास्वामीदयालुना प्रिया:, प्रशंसति निजभाग्यम् मार्गात् परिभ्रंशने अनेकानि जन्मानि व्यतीतानि, अद्य मम सुअवसर: जातः॥७॥

॥ मसनवी ८ ॥ मैं सतगुरु पै डालूँगी तन मन को वार	
हिंदी	संस्कृत
मैं सतगुरु पै डालूँगी तन मन को वार । मैं चरनों में क़ुरबान हूँ बार बार ॥ १ ॥	सद्गुरौ समर्पयामि तनुमनसी । चरणयोः करोम्यात्मत्यागं पुनर्पुनः ॥ १ ॥
करूँ कैसे उनकी दया का बयान दिया मुझको प्रेम और परतीत दान ॥२॥	कथं वर्णयामि तेषां दयाम् । दत्तं मह्यं प्रेमप्रतीत्योः दानम् ॥२॥
खुली आँख जब मुझको आया नज़र । कि दुनियाँ है धोखे की जा सर बसर ॥३॥	यदानावृतं नेत्रमहमपश्यम् । यद् पूर्णतः प्रवञ्चनानां स्थलं जगत् ॥३॥
ज़मीन और ज़न और ज़र की है चाह । सभी जीव रहते हैं ख़्वार और तबाह ॥४॥	भूमिस्त्रीधनानाञ्चाभिलाषा वर्तते । सर्वे जीवाः सन्ति व्याकुलातिरस्कृताश्च ॥४॥
हुए मुबतिला दाम हिरसो हवस । न पावें कहीं चैन वह एक नफ़स ॥ ५ ॥	बद्धीभूताः जगद्वासनानां पाशे । न प्राप्नुवन्ति शान्तिं एकक्षणाय ॥ ५ ॥
न मालिक का ख़ौफ़ और न मरने का डर। न खोजें कभी अपने घर की ख़बर ॥६॥	न प्रभोर्भयः न मृत्योर्भयः । कदापि नान्वेषयन्ति निजगृहस्य वृत्तान्तम् ॥६॥
करें फ़िकर मेहनत से दुनियाँ के काम । रहें इस्त्री और धन के ग़ुलाम ॥ ७ ॥	परिश्रमेण चिन्तनेन च कुर्वन्ति जगद्कार्याणि। पराधीनाः सन्ति स्त्रीधनयोश्च ॥ ७ ॥
जो दुनियाँ के नामावारी के हैं काम । दिलो जाँ से उसमें पचें हैं मुदाम ॥ ८ ॥	ये जगतः यशप्राप्तेः कार्याणि। आत्माहृदयेन च सदैव संलग्नाः भवन्ति तेषु ॥ ८ ॥
भरा हैगा भोगों की ख़्वाहिश से मन । उसी में लगाते हैं धन और तन ॥ ९ ॥	मनः जगद्भोगवासनाभिः युक्तोऽस्ति। तासु एव युञ्जन्ति धनञ्च तनुश्च ॥ ९ ॥
न शरमो हया उनको माँ बाप की । न कुछ फ़िक्र है पुन्न और पाप की ॥१०॥	मातुः पितुः च लज्जा नास्ति तान्। न कापि चिन्ता पुण्यपापयोः ॥१०॥
जो मन इन्द्री पावें लज़्ज़ात को । ग़नीमत समझते हैं इस बात को ॥११॥	ये मनेन्द्रियाणि प्राप्नुवन्ति जगद्भोगेष्वानन्दम् । श्रेष्ठं मन्यन्ते इमम् ॥११॥
जो दुनियाँ के सामाँ मुयस्सर हुए। हुए ख़ुश दिल और मान में सब मुए ॥ १२॥	यज्जगतः पदार्थाः प्राप्ताः। हृदयाः प्रसन्नाः जाताः सर्वे मृताः सम्माने च ॥ १२॥
नहीं जीव का अपने उनको ख़याल	न विचारयन्ते स्वात्माविषये।

कि मरने पै क्या होयगा उसका हाल ॥१३॥	यत् मरणकाले का दशा भविष्यति तस्य ॥१३॥
कहाँ से वह आता है जाता कहाँ । कहाँ कौन है मालिके जिस्मो जाँ ॥१४॥	कुत्रतः सः आगच्छति च कुत्र गच्छति। कुत्र कोऽस्ति प्रभोः देहात्मा च ॥१४॥
कोई जो कहाते हैं परमारथी । जो देखा तो वह हैं निपट स्वारथी ॥१५॥	कश्चित् स्वं परमार्थी वदन्ति । यदपश्यत् सः तु पूर्णतः स्वार्थी ॥१५॥
करें ज़ाहिरी पाठ पूजा मुदाम । सुनें भागवत और गीता तमाम ॥१६॥	सदैव कुर्वन्ति पूजापाठान् प्रदर्शनाय। भागवतगीतायाश्च पाठं श्रृण्वन्त्यधिकम् ॥१६॥
मगर दिल पै उनके न होवे असर । न मरने का ख़ौफ़ और न नरकों का डर ॥ १७॥	परं तेषां हृदयेषु न भवति प्रभावः। न मृत्योर्भयः न नरकस्य भयः ॥ १७॥
करें तीरथ और यात्रा शौक़ से । रखें बरत और दान दें ज़ौक़ से ॥१८॥	कुर्वन्ति तीर्थयात्राञ्चोत्साहेन। पालयन्ति व्रतं ददति दानञ्चोत्साहेन ॥१८॥
मगर होवे दुनियाँ का मतलब ज़रूर । रहे है यही आस हिरदे में पूर ॥१९॥	परं भौतिकस्वार्थं भवत्यवश्यमेव। अनयैवाशया व्याप्तं हृदयम् ॥१९॥
जो दुनियाँ की कुछ आस होवे नहीं । तो इस काम में पैसा ख़रचें नहीं ॥२०॥	या कापि न भवेत् भौतिकाशा चेत्तर्हि। अस्मिन् कार्ये धनव्ययं न कुर्यात् ॥२०॥
जो मालिक का भेद इनसे कहवे कोई । उड़ावें हँसी और न मानें कभी ॥२१॥	यो कोऽपि कथयति प्रभोः रहस्यं एभिः। परिहासं कुर्वन्ति न स्वीकुर्वन्ति च कदापि ॥२१॥
भरा हैगा मन उनका शुबहात से । न बाचें जहालत की आफ़ात से ॥ २२ ॥	तेषां मनः युक्तोऽस्ति संदेहैः । नावेयुः मूर्खताजन्यविपत्तिभिः ॥ २२ ॥
वह सन्तों के कहने को मानें नहीं। सफ़ा बुद्धि से बात तोलें नहीं ॥ २३ ॥	ते न स्वीकुर्वन्ति संतप्रवचनान् । न तोलयन्ति वार्तां स्वच्छमत्या ॥ २३ ॥
कहूँ क्या कि दिल में हैं वे नास्तिक । मगर धन के लेने को हैं आस्तिक ॥२४॥	किं वच्मि सन्ति ते नास्तिकाः हृदये। किन्तु धनगृहणाय सन्ति ते आस्तिकाः ॥२४॥
होवे ऐसे जीवों का कैसे निबाह । जहन्नुम की अगिनी में पावेंगे दाह ॥२५॥	ईदृशानां जीवानां निर्वाहं भवेत् कथम् । नरकस्याग्नौ दहनं प्राप्स्यन्ति ॥२५॥
वहाँ हाथ मल मल के पछतायेंगे । किये अपने कामों का फल पायेंगे ॥२६॥	तत्र हस्तमर्दनं कृत्वा पश्चात्तापं करिष्यन्ति । स्वकृतकर्माणां फलं प्राप्स्यन्ति ॥२६॥
मदद कोई उनकी करेगा नहीं । कोई इनका रोना सुनेगा नहीं ॥२७॥	न कोऽपि भविष्यति तेषां साहाय्यः । न कोऽपि रुदनं श्रोष्यति एषाम् ॥२७॥

पकड़ इनको जमदूत देवेंगे मार । सरप इनकी गरदन में देवेंगे डार ॥२८॥	यमदूताः गृहीत्वा हनिष्यन्ति इमान् । ग्रीवायां सर्पं पातयिष्यन्ति एषाम् ॥२८॥
अगिन खंभ से बाँध देंगे इन्हें । अगिन कुंड में ग़ोता देंगे इन्हें ॥२९॥	अग्निस्तम्भेन पाशिष्यन्ति इमान् । अग्निकुण्डे निमज्जनं कारयिष्यन्ति इमान् ॥२९॥
निहायत दुखी होके चिल्लायेंगे । यह गफ़लत का फल अपना यों पायेंगे ॥३०॥	अति दुःखीभूत्वा चीत्कारं करिष्यन्ति । एवं प्राप्स्यन्ति स्वप्रमादस्य फलम् ॥३०॥
निरख करके जीवों का अस हाल ज़ार सन्त आये दुनिया में औतार धार ॥३१॥	ईदृशी दुर्गतिं दृष्ट्वा जीवानाम् । जगत्यवतरिताः सन्तपुरुषाः ॥३१॥
दया कर सुनावें उन्हें घर का भेद । मेहर से करें दूर करमों का खेद ॥३२॥	दयां धार्य श्रावयन्ति तान् गृहस्यभेदम् । दयया दूरं कुर्वन्ति कर्माणां खेदम् ॥३२॥
राह घर के जाने की देवें लखा । सुरत शब्द मारग का देवें पता ॥३३॥	पन्थानं प्रदर्शयन्ति गृहं गमनाय । सङ्केतं ददति सुरतशब्दमार्गस्य ॥३३॥
हर एक घट में आवाज़ होती मुदाम । वही शब्द की धुन है और वोही नाम ॥३४॥	प्रतिघटं भवति ध्वनिः सदैव । सैवशब्दध्वनिः सैव नाम च ॥३४॥
सुने जो कोई धुन को चित धर के प्यार । वही जीव घर जावे तिरलोकी पार ॥३५॥	चित्ते प्रेमधार्य यो कोऽपि श्रृणोति ध्वनिम् । गृहं गच्छति सैवात्मा त्रिलोकीमतिक्रम्य ॥३५॥
सुनो भेद मंज़िल का अब राह के । वह है सात बालाय छः चक्र के ॥३६॥	सम्प्रति श्रृणु लक्ष्यभेदं मार्गस्य । तदस्ति षड्चक्राणामुपरि सप्तमम् ॥३६॥
यह हैं नाम छै चक्करों के सुनो । गुदा इन्द्री और नाभी गिनो ॥३७॥	इमे सन्ति नामानि श्रृणु षड्चक्राणाम् । गुदोपस्थनाभिं च गणयतु ॥३७॥
चकर चौथा हिरदय गुलू पाँचवाँ । छठा दोनों आँखों के है दरमियाँ ॥३८॥	चतुर्थचक्रं हृदयं पंचमः कण्ठः । षट् द्वयोः नेत्रयोर्मध्ये ॥३८॥
इसी जा पै है सुर्त रूह का क़याम । परे इसके सन्तों के सातों मुक़ाम ॥३९॥	अस्मिन्नेव स्थले अस्ति आत्मनः स्थितिः । अस्यानन्तरं सन्तपुरुषाणां सप्तस्थलानि ॥३९॥
सहसदल है पहला गगन दूसरा । सुन्न पर महासुन का मैदाँ बड़ा ॥४०॥	सहस्रदलपदं प्रथमं गगनं च द्वितीयम् । सुन्ने महासुन्नस्य बृहद्क्षेत्रम् ॥४०॥
गुफा लोक चौथा है सोहंग नाम । परे इसके सतलोक आली मुक़ाम ॥४१॥	चतुर्थ सोहंगनाम्नः गुहालोकोऽस्ति। अस्यानन्तरं विद्यते सर्वोच्चं सतलोकपदम् ॥४१॥

अलख लोक की क्या कहूँ दस्तगाह । अगम लोक सन्तों का है तख्तगाह ॥४२॥	किं वच्मि अलखलोके व्याप्तशक्तिविषये। अगमलोकोऽस्ति सन्तपुरुषाणां सिंहासनगृहम् ॥४२॥
परे इसके है कुल्ल मालिक का धाम । अपार और अनन्त राधास्वामी है नाम ॥४३॥	अस्यानन्तरमस्ति आवासः पूर्णप्रभोः । अपारानन्तश्चास्ति राधास्वामीनाम ॥४३॥
अकह और अगाध और यही है अनाद । यहीं से उठी मौज और आद नाद ॥४४॥	अवर्णनीयागाधाश्चायमेवास्ति अनादः । अस्मादेवस्थलादुत्थितौ तरंगादिशब्दश्च ॥४४॥
नहीं कोई जाने है यह भेद सार । रहे थक के सब कोई गगना के वार ॥४५॥	न कोऽपि जानाति भेदसारोऽयम्। सर्वे श्रान्ताः गगनपर्यन्तम् ॥४५॥
करम और धरम में रहे सब अटक । नहीं जिव के कल्यान की कुछ खटक ॥४६॥	सर्वे कर्मधर्मयोश्च विरामयन्ति। नास्ति काऽऽपि आत्मनः कल्याणस्य चिन्ता॥४६॥
रहे पूजते देवी देवा को झाड़ । न मालिक का खोज और न दिल में पियार ॥४७॥	पूर्णतः देवीदेवानां पूजायां संलग्नाः। न प्रभोरन्वेषणं न हृदये प्रीतिः॥४७॥
रहे पिछली टेकों में भूले मुदाम । नहीं जानें महिमा गुरू और नाम ॥४८॥	सदैवातीतप्रथासु विस्मृताः । गुरोः नाम्नश्च महिमां न जानन्ति ॥४८॥
अगर चाहो तुम अपना सच्चा उधार । तो सतगुरु को जल्दी से लो खोज यार ॥४९॥	वाञ्छसि स्व सत्यमुद्धारः चेत्तर्हि । सद्यः कुरु अन्वेषणं सद्गुरोः ॥ ४९ ॥
बचन संत सतगुरु के चित दे सुनो। प्रीति और परतीत हिरदे धरो ॥ ५० ॥	चित्तेन श्रृणु संतसद्गुरोः प्रवचनानि । धर प्रीतिप्रतीतिश्च हृदये ॥५०॥
पियो चरन अमृत को तुम प्रीत से । भरम काटो परशादी के सीत से ॥ ५१ ॥	प्रीत्या पानं कुरु चरणामृतस्य । कृन्त भ्रमाः प्रसादस्य शैत्येन ॥ ५१ ॥
करो उनका सतसंग तुम बार बार । लेवो शब्द मारग का उपदेश सार ॥ ५२ ॥	कुरु तेषां सत्संगं पुनः पुनः त्वम् । गृहाण शब्दमार्गस्य उपदेशसारम्॥ ५२ ॥
करो मन से मालिक का सुमिरन मुदाम परम पुर्ष राधास्वामी है उनका नाम ॥ ५३ ॥	सदैव मनसा प्रभोः स्मरणं कुरु । परमपुरुषराधास्वामीनाम तेषामस्ति ॥ ५३ ॥
गुरु रूप का ध्यान हिरदे में लाय ।	गुरुस्वरूपस्य ध्यानं हृदये धार्य ।

सुरत और मन शब्द धुन से लगाय ॥ ५४ ॥	आत्मामनसी शब्द ध्वनिना सह युङ्क्ताम्॥ ५४ ॥
यह अभ्यास नित घट में करना सही। कटें मन के औगुन इसी से सभी ॥ ५५ ॥	नित्यं कुर्यात् घटे अभ्यासोऽयं सम्यक् रूपेण । कृन्तन्ति मनसः सर्वेऽवगुणा अनेन ॥ ५५ ॥
कोई दिन में दरशन गुरू के मिलें । सुनें शब्द की धुन सुरत मन खिलें ॥ ५६ ॥	केचित् दिवसेषु गुरोः दर्शनाः लप्स्यन्ते । शब्दनादं श्रुत्वात्मामनसी प्रफुल्लितौ भविष्यतः॥५६॥
इसी तरह नित घट में आनन्द पाय | बढ़त जाय आनन्द मन शान्ति लाय ॥ ५७ ॥	एवं नित्यं घटे आनन्दं प्राप्नुयात् । वर्धते आनन्दं मनसि शान्तिः जायते ॥ ५७ ॥
कोई दिन में मुक्ति का पावे सरूर । तू हो जाय तन मन से न्यारा ज़रूर ॥ ५८ ॥	केचित् दिवसेषु मुक्तेः आनन्दं प्राप्स्यसि । त्वं तनुमनोभ्याम् पृथग् भविष्यसि अवश्यमेव ॥ ५८ ॥
प्रीति और परतीत दिन दिन बढ़े। तेरे मन में गुरु प्रेम का रँग चढ़े ॥ ५९ ॥	प्रीतिप्रतीतिश्च प्रतिदिनं वर्धिष्येते । तव मनसि गुरोः प्रेमरंगं व्याप्तं भवेत् ॥ ५९ ॥
उमँग कर तू सतगुरु की सेवा करे । प्रेम अंग ले नित्त आरत करे ॥ ६० ॥	उत्साहेन कुर्याः त्वं सद्गुरुसेवाम् । प्रेमाङ्गेन नित्यं आरतिं कुर्याः॥ ६० ॥
मिले प्रेम की तुझको दौलत अपार । सरावेगा भागों को तब अपने यार ॥ ६१ ॥	प्रेम्णः प्राप्तं भविष्यति अपारसम्पत्तिः त्वाम् । मित्रं तदा प्रशंस्यसि स्व भाग्यानि त्वम् ॥ ६१ ॥
किया अब यह उपदेश ख़त्म राग । जो माने उसी का जगे पूरा भाग ॥ ६२ ॥	उपदेशस्य इदं गीतं समाप्तं कृतम् । स्वीकरोति यः जागर्ति तस्यैव पूर्णभाग्यम्॥ ६२ ॥
करोगे जो हित चित से नित तुम यह कार। करें राधास्वामी तुम्हारा उधार ॥ ६३ ॥	प्रेम्णा चित्तेन च त्वं करिष्यसि इदं कार्यं नित्यं चेत् । राधास्वामीदयालुः तवोद्धारं करिष्यन्ति ॥ ६३ ॥
जपो प्रीत से नित्त राधास्वामी नाम । पाओ मेहर से एक दिन आदि धाम ॥ ६४ ॥	प्रेम्णा नित्यं राधास्वामीनाम्नः स्मरणं कुरु । आशीर्वृष्ट्या प्राप्स्यसि एकस्मिन् दिवसे राधास्वामीधामम्(धाम) ॥६४॥